॥ श्री ॥

अथ अनुक्रमणिका

॥ मंगलाचरणम् ॥

॥ दोहा ॥

ॐ नमो अरिहन्त सिद्ध, आचारज उवझाय ।
साधु सकल के चरणकूं, वन्दूं शीश नमाय ॥ १ ॥
महा मन्त्र ए शुद्ध जपूं, प्रात समय सुखकार ।
विघन मिटे संकट कटै, बरतै जय जयकार ॥ २ ॥
सुमरूं श्री भिक्षु गुरु, प्रबल बुद्धि भंडार ।
तासु प्रसादे पामिये, समकित रतन उदार ॥ ३ ॥

ढाल (चाल नाटक की)

सुख पावे तूं प्यारे जीवा डाल गणिन्द गुण गावे । एदेशी ॥
सूत्रन का पूरवन का प्यारे पढ़ो ज्ञान श्री जिन का । आंकड़ी ॥

बिन पढ़ियां अण घड़िया टोला, फुन पशु सम घन बन का ॥ प्यारे पढ़ो ज्ञान श्री जिन का ॥ १ ॥

सम्यक् ज्ञान भण्यां थी प्रगटै मिटे भ्रान्ति सब मन का ॥ प्यारे पढ़ो० ॥ २ ॥

तत्व पदारथ अर्थ ओलखे, रागी होय शासन का ॥ प्यारे पढ़ो० ॥ ३ ॥

काल अनादि मिथ्यातम निशिवत्, अब ज्ञानादित दिन का ॥ प्यारे पढ़ो० ॥ ४ ॥

पाप पेल अरु झेल व्रत अणू, ये खेल खेल बचपन का ॥ प्यारे पढ़ो० ॥ ५ ॥

श्री कालू गणिराज प्रसादे (कहै) गुलाब जाब अरथन का ॥ प्यारे पढ़ो० ॥ ६ ॥

॥ अथ श्री भिक्षु स्मरण ॥

दर्श देख जीत को दीदार भयो राजी ॥ पदेशी ॥

श्री भिक्षु सुमरि भिक्षु सुमरि भिक्षु सुमरि भाई ॥

भिक्षु नाम ठाम २ सूत्र में कहाई । श्री भिक्षु ॥ ए आंकड़ी ॥

चाले सुध संयम पाल । दोष बयांलोस टाल ।
भिक्षा ले निजर भाल । जिनन्द जे फरमाई ॥श्री॥१॥
तेह भिक्षु नाम धार । अवतरे ए पञ्चम आर ।
कुगुरु कुदेव छार । शिव राह को बताई ॥श्री॥२॥
दया अनुकम्पा ठीक । कियां शिव गति नजीक ।
एह जिन धर्म सीख । न कर धूरताई ॥श्री॥३॥
दया दया मुख पुकार । न कर हिन्सा प्रचार ।
स्नेह राग मोह टार । आत्म गुण जणाई ॥श्री॥४॥
धर्म जिण आण मांय । कदापि न बाहर थाय ।
नर भव ए दुर्लभ पाय । समझ थी बड़ाई ॥श्री॥५॥
असयम जीतव्य जोय । बांछियां किम धर्म होय ।
संयम सु शरन सोय । त्रिलोक्य में ठकुराई ॥श्री॥६॥

कुपात्र कुखेत्र जेम। पोख्यां हुवै धर्म केम।
सुपात्र से राख पेम। निर्दूषण बहिराई ॥श्री॥७॥
आगम अमूल्य देख। इत्यादिक कह्यो लेख।
व्रत धर्म अव्रत शेष। सुगम एह जताई ॥श्री॥८॥
पञ्च व्रत संयम भार। पालन पलावन उदार।
देव गुरु धर्म सार। रत्न की सझाई ॥श्री॥९॥
शुद्ध हृदयवन्त जेह। सुगुरु विनय करत तेह।
अमङ्गल नहीं हो कदेह। सुफल हो पढ़ाई ॥श्री॥१०॥
समकित फरसै शताब। निज गुन की बढ़े आब।
भिक्षु नाम कहै गुलाब। संकट में सहाई ॥श्री॥११॥



॥ श्री ॥

णमो अरिहन्ताणं । णमो सिद्धाणं । णमो आयरियाणं । णमो उवज्झायाणं । णमो लोए सव्वसाहूणं ॥१॥

॥ अथ सामायक लेणे की पाटी ॥

करेमि भंते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव नियमं (मुहूर्त एक) पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाये कायाए न करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि ॥ इति ॥

॥ अथ चौबसिथो की पाटियां ॥

इच्छामि पणिक्कमिउ इरिया वहियाए विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे उसाउत्तिङ्ग पणग दग मट्टी मक्कड़ा सन्ताणां संकमणे जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइन्दिया तेइन्दिया चउइन्दिया पञ्चिन्दिया अभिहया वत्तिया लेसिया सङ्घाइया संघट्टिया परियाविया किलामिया उद्दविया ठाणा उट्ठाण संकामिया जीवियाउ । ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

॥ अथ तस्सुत्तरी ॥

तस्सोत्तरी करणेणं, पायच्छित करणेणं, विसोही करणेणं, विसल्ली करणेणं, पावाणं कम्माणं णिग्घाय णट्ठाए, ठामि करेमि काउसग्गं, अणत्थ उससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जम्भाइएणं, उडुएणं, वाय निसग्गेणं, भमलिये पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अङ्ग सञ्चालेहिं, सुहुमेहिं खेल संचालेहि, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एव माइएहिं, आगारेहिं अभग्गो, अविराहिउ हुज्जमे काउसग्गो, जाव अरिहन्ताणं भगवन्ताणं, नमोकारेणं नपारेमि, तावकायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं अप्पाणं, वोसिरामि ॥

ध्यानमें ॥ इच्छामि पडिक्कमिउ की पाटी मन में गुणकर एक नमोकार गुण के पारलेणो ।

॥ अथ लोगस्स की पाटी ॥

लोगस्स उज्झोअगरे, धम्मतित्थयरेजिणे अरिहन्ते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभमजीअं च वन्दे, सम्भव मभिणंदणं च, सुमइं च पउमप्पहंसुपासं जिणं च चन्दप्पहं वन्दे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदन्तं, सीयल सिज्झं स वासुपुज्झञ्च, विमलमणन्तं च जिणं

धम्मं सन्तिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुंअरं च मल्लिं वन्दे मुणि सुव्वयं नमि जिणं च वन्दामि, रिट्ठनेमिं पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ विहुयरयमला पहीणजरमरणा चउवीसंपि जिणवरा तित्थयरामें पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय वन्दिय महिया जेए लोगस्स उत्तमा सिद्धा आरुग्ग बोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिन्तु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा सागरवर गम्भीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसन्तु ॥ ७ ॥

॥ अथ नमोत्थुणं ॥

णमोत्थुणं अरिहन्ताणं, भगवन्ताणं, आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंवुद्धाणं, पुरिसोत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर पुण्डरीयाणं, पुरिसवर गन्धहत्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहीआणं, लोगपइवाणं, लोगपज्जोअगराणं, अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, जीवदयाणं, वोहि दयाणं, धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं, दीवोताणं, सरणगईपईट्ठाणं अप्पडिहयवरनाणं, दंसणधराणं विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाण वुद्धाणं बोहियाणं, मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं, सव्वदरिसिणं, सिवं मयल मरुअ

मणन्त मक्खय मव्वावाह मपुणरावित्ति सिद्धिगइ नाम घेयं ठाणं सम्पत्ताणं नमो जिणाणं ।

॥ सामायक पारणो की पाटी ॥

नवमा सामायक व्रत के विषे ज्यो कोई अतिचार दोष लागो हुवे ते आलोऊं सामायक अण पूरी पारी होय, पारवो विसार्यो होय, मन वचन काया का जोग माठा प्रवरताया होय, सामायक में राजकथा, देश कथा, स्त्री कथा, भत्त कथा, करी होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ अथ तिक्खुत्ता की पाटी ॥

तिक्खुत्तो अयाहीणं पयाहीणं वन्दामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मङ्गलं देइयं चेइयं पज्जु वासामि मत्थेण वन्दामि ।

॥ अथ पंचपद वन्दना ॥

पहिले पद श्री सीमंधर स्वामी आदि देई जघन्य २० (वीस) तीर्थङ्कर देवाधिदेवजी उत्कृष्टा १६० (एकसहसाठ) तीर्थङ्कर देवाधिदेवजी पञ्चमहाविदेह खेत्रां के विषै विचरै छै अनन्त ज्ञान का धणी अनन्त दर्शण का धणी अनन्त बल का धणी एक हजार आठ लक्षण का धारणहार चौसठ इन्द्रां का पूजनीक,

चौतीस अतिशय, पेंतीस वाणी द्वादश गुण सहित विराजमान छै ज्यां अरिहन्ता से मांहरी वन्दना तिक्खुता का पाठ से मालूम होज्यो ।

दूजे पद अनन्ता सिद्ध पन्दरा भेदे अनन्ती चौबीसी आठ कर्म खपाय ने मोक्ष पहुंता तिहां जनम नहीं जरा नहीं रोग नहीं शोग नहीं मरण नहीं भय नहीं संयोग नहीं वियोग नहीं दुःख नहीं दारिद्र नहीं फिर पाछा गर्भावास में आवे नहीं इसा उत्तम सिद्ध भगवन्तां से मांहरी वंदना तिक्खुता का पाठ से मालूम होज्यो ।

तीजे पद जघन्य दोय कोड़ केवली उत्कृष्टा नव कोड़ केवली पञ्च महाविदेह खेतां में विचरे छै केवल ज्ञान केवल दर्शण का धारक लोकालोक प्रकाशक सर्व द्रव्य खेत्र काल भाव जाणे देखे छै ज्यां केवली जी से मांहरी वन्दना तिक्खुता का पाठ से मालूम होज्यो ।

चौथे पद गणधरजी आचार्यजी उपाध्यायजी थविरजी ते गणधरजी महाराज केहवा छै अनेक गुण विराजमान छै आचार्यजी महाराज केहवा छै छत्तीस गुण विराजमान छै उपाध्यायजी महाराज केहवा छै पच्चीस गुण विराजमान छै थविरजी महाराज केहवा छै धर्म से डिगता हुआ प्राणी ने थिर करी राखे शुद्ध

आचार पाले पलावे ज्यां उत्तम पुरुषां से मांहरी वन्दना तिक्खुत्ता का पाठ से मालूम होज्यो ।

पञ्चमें पद मांहरा धर्म आचारज गुरु पूज्य श्री श्री श्री १०८ श्री श्री तुलसीरामजी स्वामी (वर्त्तमान आचारज को नाम लेणो) जघन्य दोय हजार कोड़ साधू साध्वी उत्कृष्टा नव हजार कोड़ साधू साध्वी अढ़ाई द्वीप पन्दरै खेतां में विचरै छै ते महा उत्तम पुरुष केहवा छै, पञ्च महाव्रत का पालणहार, छव काया ना पीहर, पञ्च सुमति सुमता, तीन गुप्ति गुप्ता, बारै भेदे तपस्या का करणहार, सतरै भेदे संजम का पालणहार, बावीस परीषहका जीतणहार बयालीस दोष टाल आहार पाणी का लेवणहार, बावन अणाचार का टालणहार, सतावीस गुण संयुक्त, निर्लोभी, निरलालची, सचित्त का त्यागी, अचित्त का भोगी, संसार से पूठा, मोक्ष से स्हामां, अस्वादी त्यागी वेरागी, तेड़िया आवै नहीं, नोंतियां जीमें नहीं, बायरा नीं परे अप्रतिबन्ध विहारी इसा महापुरुषां से मांहरी वन्दना तिक्खुता का पाठ से मालूम होज्यो ।

॥ अथ चौरासी लाख योनि ॥

७ लाख पृथ्वीकाय ७ लाख अप्पकाय ७ लाख तेउकाय ७ लाख वायुकाय १० लाख प्रत्येक वनस्पति

काय १४ लाख साधारण बनस्पति काय २ लाख बेन्द्री २ लाख तेन्द्री २ लाख चौन्द्री ४ लाख नारकी ४ लाख देवता ४ लाख तिर्यंच पंचेन्द्री १४ लाख मनुष्य की जाति ए च्यार गति, चौरासी लाख जीवा योनि से बारम्बार खमत खामना होज्यो।

॥ अथ चौबीस तीर्थङ्करों का नाम ॥

१ पहला श्री ऋषभनाथजी।
२ दूजा श्री अजितनाथ स्वामीजी।
३ तीजा श्री सम्भवनाथ स्वामीजी।
४ चौथा श्री अभिनन्दननाथ स्वामीजी।
५ पांचवां श्री सुमतिनाथ स्वामीजी।
६ छट्ठा श्री पद्मप्रभु स्वामीजी।
७ सातवां श्री सुपारसनाथ स्वामीजी।
८ आठवां श्री चन्द्रप्रभ स्वामीजी।
९ नवमां श्री सुविधनाथ स्वामीजी।
१० दशवां श्री शीतलनाथ स्वामीजी।

११ इग्यारमां श्री श्रेयांसनाथ स्वामीजी ।
१२ बारमां श्री वासुपूज्यनाथ स्वामीजी ।
१३ तेरमां श्री बिमलनाथ स्वामीजी ।
१४ चौदमां श्री अनन्तनाथ स्वामीजी ।
१५ पन्दरमां श्री धर्मनाथ स्वामीजी ।
१६ सोलमां श्री शान्तिनाथ स्वामीजी ।
१७ सतरमां श्री कुंथुनाथ स्वामीजी ।
१८ अठारमां श्री अरनाथ स्वामीजी ।
१९ उगणीसमां श्री मल्लिनाथ स्वामीजी ।
२० बीसमां श्री मुनिसुव्रतनाथ स्वामीजी ।
२१ इकबीसमां श्री नमिनाथ स्वामीजी ।
२२ बावीसमां श्री अरिष्टनेमनाथ स्वामीजी ।
२३ तेबीसमां श्रीपार्श्वनाथ स्वामीजी ।
२४ चौवीसमां श्री वर्द्धमान स्वामीजी ।

॥ पच्चीस बोल ॥

१ पहले बोले गति च्यार ४

नरकगति १ तिर्यंचगति २ मनुष्यगति ३ देवगति ४

२ दूजे बोले जाति पांच ५

एकेन्द्री, बेइन्द्री, तेइन्द्री, चौइन्द्री, पंचेन्द्री

३ तीजे बोले काया छव ६

पृथ्वीकाय १ अप्पकाय २ तेउकाय ३ वायुकाय ४ बनस्पतिकाय ५ त्रसकाय ६

४ चौथे बोले इन्द्रियां ५

श्रोतइन्द्री १ चक्षुइन्द्री २ घ्राणइन्द्री ३ रसइन्द्री ४ स्पर्शइन्द्री ५

५ पांचमें बोले पर्याय छव ६

आहार पर्याय १ शरीर पर्याय २ इन्द्रिय पर्याय ३ श्वासोश्वास पर्याय ४ भाषा पर्याय ५ मन पर्याय ६

६ छठे बोले प्राण दश १०

श्रोतइन्द्री बलप्राण १ चक्षुइन्द्री बलप्राण २ घ्राण-इन्द्री बलप्राण ३ रसेन्द्री बलप्राण ४ स्पर्शइन्द्री बलप्राण ५ मन बलप्राण ६ बचन बलप्राण ७ काया बलप्राण ८ श्वासोश्वास बलप्राण ९ आयुष बलप्राण १०

७ सातमें बोले शरीर पांच ५

औदारिक शरीर १ बैक्रिय शरीर २ आहारिक शरीर ३ तेजस शरीर ४ कार्मण शरीर ५

८ आठवें बोले जोग पन्द्रह १५

४ च्यार मनका

सत्य मन जोग १ असत्य मन जोग २ मिश्र मन जोग ३ व्यवहार मन जोग ४

४ च्यार वचन का

सत्य भाषा १ असत्य भाषा २ मिश्र भाषा ३ व्यवहार भाषा ४

७ काया का

औदारिक १ औदारिक मिश्र २ वैक्रिय ३ वैक्रिय को मिश्र ४ आहारिक ५ आहारिक मिश्र ६ कार्मण जोग ७

९ नवमें बोले उपयोग बारह १२

५ पांच ज्ञान

मति ज्ञान १ श्रुति ज्ञान २ अवधि ज्ञान ३ मन पर्यव ज्ञान ४ केवल ज्ञान ५

३ तीन अज्ञान

मति अज्ञान १ श्रुति अज्ञान २ विभङ्ग अज्ञान ३

४ च्यार दर्शन

चक्षुदर्शन १ अचक्षु दर्शन २ अवधि दर्शन ३ केवल दर्शन ४

१० दशमें बोले कर्म आठ ८

ज्ञानावरणी कर्म १ दर्शनावरणी कर्म २ वेदनी

कर्म ३ मोहनीय कर्म ४ आयुष्य कर्म ५ नाम
कर्म ६ गोत्र कर्म ७ अन्तराय कर्म ८

११ इग्यारमें बोले गुणस्थान चौदाह १४

१ पहिलो मिथ्यात्व गुणस्थान
२ दूजो सहस्वादन समदृष्टि गुणस्थान
३ तीजो मिश्र गुणस्थान
४ चौथो अव्रत समदृष्टि गुणस्थान
५ पांचमों देशव्रत श्रावक गुणस्थान
६ छठो प्रमादी साधू गुणस्थान
७ सातमों अप्रमादी साधू गुणस्थान
८ आठमों नियट्ट बादर गुणस्थान
९ नवमों अनियट्ट बादर गुणस्थान
१० दशमूं सूक्ष्म संपराय गुणस्थान
११ इग्यारमूं उपशान्त मोह गुणस्थान
१२ बारमूं क्षीणमोहनीय गुणस्थान
१३ तेरमूं संयोगी केवली गुणस्थान
१४ चौदमूं अयोगी केवली गुणस्थान

१२ बारमें बोले पांच इन्द्रियां की तेवीस विषय

श्रोतइन्द्री की तीन विषय
जीव शब्द १ अजीव शब्द २ मिश्र शब्द ३
चक्षु इन्द्री की पांच विषय

कालो १ पीलो २ नीलो ३ रातो ४ धोलो ५

घ्राणइन्द्री की दोय विषय

सुगन्ध १ दुर्गन्ध २

रसइन्द्री की पांच विषय

खट्टो, १ मीठो २ काड़वो ३ कसायलो ४ तीखो ५

स्पर्श इन्द्री की आठ विषय

हलको १ भारी २ खरदरो ३ सुहालो ४ लूखो ५

चिक्रणूं ६ ठण्डो ७ उन्हो ८

१३ तेरमें बोले दश प्रकार की मिथ्यात्व

१ जीवनें अजीव सरदह ते मिथ्यात्व

२ अजीवनें जीव सरदह ते मिथ्यात्व

३ धर्मनें अधर्म सरदह ते मिथ्यात्व

४ अधर्मने धर्म सरदह ते मिथ्यात्व

५ साधूनें असाधू सरदह ते मिथ्यात्व

६ असाधूनें साधू सरदह ते मिथ्यात्व

७ मार्गनें कुमार्ग सरदह ते मिथ्यात्व

८ कुमार्गनें मार्ग सरदह ते मिथ्यात्व

९ मोक्ष गयानें अमोक्ष गयो सरदह ते मिथ्यात्व

१० अमोक्ष गयानें मोक्ष गयो सरदह ते मिथ्यात्व

१४ चौदमें बोले नव तत्व जाणपणो तींका ११५

एक सौ पन्दरा बोल

१४ चौदे जीव का

सूक्ष्म एकेन्द्री का दोय भेद—

१ पहिलो अपर्याप्तो २ दूसरो पर्याप्तो

बादर एकेन्द्री का दोय भेद—

३ तीजो अपर्याप्तो ४ चौथो पर्याप्तो

बेइन्द्री का दोय भेद—

५ पांचमूं अपर्याप्तो ६ छठो पर्याप्तो

तेइन्द्री का दोय भेद—

७ सातमूं अपर्याप्तो ८ आठमूं पर्याप्तो

चौइन्द्री का दोय भेद—

९ नवमूं अपर्याप्तो १० दशमूं पर्याप्तो

असन्नी पञ्चेन्द्री का दोय भेद—

११ इग्यारमूं अपर्याप्तो १२ बारमूं पर्याप्तो

सन्नी पञ्चेन्द्री का दोय भेद—

१३ तेरमूं अपर्याप्तो १४ चौदमूं पर्याप्तो

१४ चौदे अजीव का भेद—

धर्मास्तिकाय का ३ भेद—

खन्ध, देश, प्रदेश

अधर्मास्ति कायका ३ भेद—

खन्ध, देश, प्रदेश

आकाशास्ति कायका ३ भेद—

खन्ध, देश प्रदेश

काल को दशमूं भेद (ये दश भेद परूपी छै)

पुद्गलास्तिकाय का च्यार भेद—

खन्ध, देश, प्रदेश, परमाणु

६ पुन्य नव प्रकारे

अन्नपुन्ने १ पाणपुन्ने २ लेणपुन्ने * ३ सयणपुन्ने ‡ ४ वत्थपुन्ने ५ मनपुन्ने ६ वचनपुन्ने ७ कायापुन्ने ८ नमस्कार पुन्ने ६

१८ पाप अठारे प्रकार—

प्राणातिपात १ मृषावाद+ २ अदत्तादान ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ६ राग १० द्वेष ११ कलह १२ अभ्याख्यान १३ पैसुन्य × १४ परपरिवाद १५ रति अरति १६ मायामृषा १७ मिथ्यादर्शन शल्य १८

२० आस्रव का—

मिथ्योत्व आस्रव १ अव्रत आस्रव २ प्रमाद आस्रव ३ कषाय आस्रव ४ जोग आस्रव ५ प्राणातिपात आस्रव ६ मृषावाद आस्रव ७

---

* लैण=जगां जमींनादिक ‡ सयण=पाट बाजोटादिक

\+ वाद=बोलना × पैसुन्य=चुगली

अदत्तादान आस्रव ८ मैथुन आस्रव ९ परिग्रह आस्रव १० श्रोतइन्द्री मोकली मेले ते आस्रव ११ चक्षु इन्द्री मोकली मेले ते आस्रव १२ घ्राणइन्द्री मोकली मेले ते आस्रव १३ रसइन्द्री मोकली मेले ते आस्रव १४ स्पर्शइन्द्री मोकली मेले ते आस्रव १५ मन प्रवर्तावे ते आस्रव १६ बचनप्रवर्तावे ते आस्रव १७ काया प्रवर्तावे ते आस्रव १८ भंडोपकरणमेलतां अजयणा करै * ते आस्रव १९ सुई कुसाग्रमात्र सेवे ते आस्रव २०

२० बीस संबर का—

सम्यक् ते संबर १ व्रत ते संबर २ अप्रमाद ते संबर ३ अकषाय संबर ४ अजोग सम्बर ५ प्राणातिपात न करे ते संबर ६ मृषावाद न बोले ते सम्बर ७ चोरी न करे ते संबर ८ मैथुन न सेवै ते सम्बर ९ परिग्रह न राखे ते संबर १० श्रुतइन्द्री वश करे ते सम्बर ११ चक्षुइन्द्री वश करे ते सम्बर १२ घ्राणइन्द्री वश करे ते सम्बर १३ रसेन्द्री वश करे ते संबर १४ स्पर्शइन्द्री

* अजयणा=यत्ना नहीं

वश करे ते संवर १५ मन वश करे ते सवर १६ वचन वश करे ते सवर १७ काया वश करे ते संवर १८ भंडउपगरणमेलतां अजयणा न करे ते सवर १९ सुई कुसाग्र न सेवे ते संवर २०

१२ निर्जरा बारे प्रकारे—

अणशण * १ उणोदरी + २ भिक्षाचरी ३ रस परित्याग ४ कायाक्लेश ५ प्रतिसंलेषणा ६ प्राय-श्चित ७ विनय ८ वेयावच्च ९ सिज्झाय १० ध्यान ११ विउसग्ग ‡ १२

४ बन्ध च्यार प्रकारे—

प्रकृतिबन्ध १ स्थितिबन्ध २ अनुभागबन्ध ३ प्रदेश बन्ध ४

४ मोक्ष च्यार प्रकारे—

ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ तप ४

१५ पन्दरह मे बोले आत्मा आठ—

द्रव्य आत्मा १ कषाय आत्मा २ योग आत्मा ३ उपयोग आत्मा ४ ज्ञान आत्मा ५ दर्शन आत्मा ६ चारित्र आत्मा ७ वीर्य आत्मा ८

---

* अणशण=उपवासादिक + उणोदरी=कम खाना

‡ विउसग्ग=निवर्तवो तथा कायोतसर्ग

१६ सोलमें बोले दण्डक चौबीस—

१ सात नारकियां को एक दण्डक

१० दण्डक भवनपतिका—

असुरकुमार १ नागकुमार २ सोवन कुमार ३ विद्युत कुमार ४ अग्निकुमार ५ दीपकुमार ६ उदधिकुमार ७ दिशाकुमार ८ वायु कुमार ९ स्तनितकुमार १०

५ पांच थावरका पञ्च दण्डक—

पृथ्वीकाय १ अप्पकाय २ तेउकाय ३ वायुकाय ४ वनस्पतिकाय ५

१ बे इन्द्री को सतरमों

१ ते इन्द्री को अठारमों

१ चौ इन्द्री को उगणीसमों

१ तिर्यञ्च पंचेन्द्री को बीसमों

१ मनुष्य पंचेन्द्री को इकबीसमों

१ वानव्यन्तर देवतां को बाबीसमों

१ जोतिषी देवतां को तेबीसमों

१ बैमानिक देवतां को चौबीसमों

१७ सतरवें बोले लेश्या छव ६—

कृष्णलेश्या १ नील लेश्या २ कापोत लेश्या ३ तेजो लेश्या ४ पद्म लेश्या ५ शुक्ल लेश्या ६

१८ अठारमें बोले दृष्टि ३ तीन—

सम्यक्दृष्टि १ मित्थ्या दृष्टि २ सममित्थ्या दृष्टि ३

१६ उगणोसमें बोलै ध्यान ४ च्यार—

आर्तध्यान १ रौद्रध्यान २ धर्मध्यान ३ शुक्ल ध्यान ४

२० वीसमें बोले षटद्रव्य को जाण पणो

धर्मास्तिकायनें पांचां बोला ओलखीजे—

द्रव्यथकी एक द्रव्य, खेत्र थी लोक प्रमाणे. कालथकी आदि अन्त रहित. भाव थी अरूपी गुणथकी जीव पुद्गल ने हालवा, चालवा को सहाय, अधर्मास्तिकाय नें पांचा बोलां ओलखीजे—द्रव्य थी एक द्रव्य, खेत्र थी लोक प्रमाणे कालथकी आदि अन्त रहित, भाव थी अरूपी गुण थी थिर रहवा नों सहाय. आकाशास्तिकाय नें पांच बोल करी ओलखीजे—द्रव्य थी एक द्रव्य, खेत्र थी लोक अलोक प्रमाणे, काल थी आदि अन्त रहित, भाव थी अरूपी, गुण थी भाजन गुण, काल नें पांचां बोलां ओलखीजे—द्रव्य थी अनन्त द्रव्य, खेत्र थी अढ़ाई द्वीप प्रमाणे, काल थी आदि अन्त रहित, भाव थी अरूपी, गुण थी वर्त्तमान गुण पुद्गलस्तिकाय ने पांच बोल थी ओल-

खोजे—द्रव्य थी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थी लोक प्रमाणे, काल थी आदि अन्त रहित, भाव थी रूपी, गुण थी * गले मले, जीवास्तिकाय ने पांच बोल करी ओलखीजे—द्रव्य थी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थी लोक प्रमाणे काल थी आदि अन्त रहित, भाव थी अरूपी, गुण थी चेतन्य गुण।

२१ एकवीसमें बोले रासि २ होय—

जीवरसि १ अजीवरासि २

२२ बावीसमें बोले श्रावक का १२ बारे व्रत—

१ पहिला व्रत में श्रावक स्थावर जीव हणवा को प्रमाण करे और त्रस जीव हालतो चालतो हणवा का स उपयोग त्याग करे।

२ दूजा व्रत में मोट को झूठ बोलवा का स उपयोग त्याग करे।

३ तीजा व्रत में श्रावक राजदण्डे लोक भण्डे इसी मोटको चोरी करवा का त्याग करे।

४ चौथा व्रत में श्रावक मर्याद उपरान्त मैथुन सेवा का त्याग करे।

५ पांचमां व्रत में श्रावक मर्याद उपरान्त परिग्रह

---

* गले मलेः घटै बढ़ैः अथवा जुदा एकत्र होय।

राखवा का त्याग करे।

६ छठा व्रत के विषे श्रावक दशों दिशि में मर्याद उपरान्त जावा का त्याग करे।

७ सातवां व्रत के विषे श्रावक उगभोग परिभोग का बोल २६ छवीस छै जिणारी मर्याद उपरांत त्याग करे तथा पन्दरे कर्मादान की मर्याद उपरान्त त्याग करे।

८ आठमां व्रत के विषे श्रावक मर्याद उपरान्त अनर्थ दण्ड का त्याग करे।

९ नवमां व्रत के विषे श्रावक सामायक की मर्याद करे।

१० दशमां व्रत के विषे श्रावक देसावगासो संवर की मर्याद करे।

११ इग्यारमूं व्रत श्रावक पोषह करे।

१२ बारमूं व्रत श्रावक शुद्ध साधू निग्रन्थ ने निर्दोष आहार पाणी आदि चउदह प्रकार नों दान देवे।

२३ तेवीसमें बोलें साधूजी का पंच महाव्रत—

१ पहिला महाव्रत में साधूजी सर्वथा प्रकारे जीव हिन्सा करे नहीं, करावे नहीं, करतां ने भलो जाणे नहीं. मन से वचन से काया से।

२ दूसरा महाव्रत में साधूजी सर्वथा प्रकार झूंठ बोले नहीं, बोलावे नहीं, बोलतां प्रते भलो जाणे नहीं, मन से बचन से काया से।

३ तीजा महाव्रत में साधूजी सर्वथा प्रकारे चोरी करे नहीं, करावे नहीं, करतां प्रते भलो जाणे नहीं, मन से बचन से काया से।

४ चौथा महाव्रत में साधूजी सर्वथा प्रकारे मैथुन सेवे नहीं, सेवावे नहीं, सेवतां प्रते भलो जाणे नहीं, मन से बचन से काया से।

५ पांचमां महाव्रत में साधूजी सर्वथा प्रकारे परिग्रह राखे नहीं, रखावे नहीं, राखतां प्रते भलो जाणे नहीं, मन से बचन से काया से।

२४ चौवीसमें बोले भागां ४९ गुणचास--

करण ३, जोग ३ तीन से हुवे।

करण ३ का नाम—करूं नहीं, कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं, जोग ३ का नाम—मनसा बायसा कायसा।

आंक ११ का भांगा ९—

एक करण एक जोग से कहणा, करूं नहीं मनसा १ करूं नहीं बायसा, २ करूं नहीं कायसा, ३ कराऊं नहीं मनसा, ४ कराऊं नहीं बायसा, ५

कराऊं नहीं कायसा, ६ अनुमोदूं नहीं मनसा, ७ अनुमोदूं नहीं वायसा, ८ अनुमोदूं नहीं कायसा ९

आंक १२ बारमां का भांगा ९—

एक करण दोय जोग से, करूं नहीं मनसा वायसा, १ करूं नहीं मनसा कायसा, २ करूं नहीं वायसा, कायसा, ३ कराऊं नहीं मनसा वायसा, ४ कराऊं नहीं मनसा कायसा, ५ कराऊं नहो वायसा कायसा ६ अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा, ७ अनुमोदूं नहो मनसा कायसा, ८ अनुमोदूं नहीं वायसा कायसा ९

आंक १३ का भांगा ३ तीन—

एक करण तीन जोग से, करूं नहीं मनसा वायसा कायसा, १ कराऊं नहीं मनसा वायसा कायसा, २ अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा कायसा ३

आंक २१ का भांगा ९—

दोय करण एक जोगसे, करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा, १ करूं नहो कराऊं नहो वायसा २ करूं नहीं कराऊं नहीं कायसा, ३ करूं नहीं अनु-मोदूं नहो मनसा, ४ करूं नहो अनुमोदूं नहीं वायसा, ५ करूं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा, ६ कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा, ७

कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं बायसा, ८ कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा ६—

आंक २२ बावीस का भांगा ६—

दोय करण दोय जोगसे, करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा बायसा, १ करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा कायसा, २ करूं नहीं कराऊं नहीं बायसा कायसा, ३ करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा बायसा, ४ करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा, ५ करूं नहीं अनुमोदूं नहीं बायसा कायसा, ६ कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा बायसा, ७ कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा, ८ कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं बायसा कायसा ६

आंक २३ तेवीस का भांगा ३ तीन—

दोय करण तीन जोगसे, करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा बायसा कायसा, १ करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा बायसा कायसा, २ कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा बायसा कायसा ३।

आंक ३१ का भांगा ३ तीन—

तीन करण एक जोगसे, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा, १ करूं नहीं कराऊं

नहीं अनुमोदूं नहीं वायमा २ करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं कायमा ३

आंक ३२ बत्तीस का भांगा ३ तीन—

तीन करण दोय जोग मे, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा १ करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा कायमा २ करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं वायसा कायसा ३ ।

आंक ३३ तेतीस को भांगो १ एक—

तीन करण तीन जोगसे करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वायमा कायसा ।

२५. पच्चीस मे बोले चारित्र पांच—

सामायिक चारित्र १ छेदोस्थापनीय चारित्र २ पड़िहार विशुद्ध चारित्र ३ सूक्ष्म संपराय चारित्र ४ यथाख्यात चारित्र ५.

॥ इति पच्चीस बोल सम्पूर्णम् ॥



॥ अथ हितशिक्षा के पच्चीस बोल ॥

१ संसारी जीव ६ प्रकार के होते हैं, पृथ्वी १ पाणी २ अग्नि ३ वायु ४ वनस्पति ५ त्रस ६

२ त्रस जीव ४ प्रकार के होते हैं, बेन्द्री १ तेन्द्री २ चौरेन्द्री ३ पञ्चेन्द्री ४

३ पञ्चेन्द्री जीव ४ प्रकारके होते हैं, नारकी १ तिर्यञ्च २ मनुष्य ३ देवता ४

४ नारकी ७ प्रकारकी हैं, रत्नप्रभा १ शर्क्र प्रभा २ बालूप्रभा ३ पङ्कप्रभा ४ धूमप्रभा ५ तमप्रभा ६ तमतमा ७

५ तिर्यञ्च ५ प्रकार के होते हैं, जलचर १ स्थलचर २ उरपर ३ भुजपर ४ खेचर ५

६ मनुष्य २ प्रकार के हैं, कर्मभूमी १ अकर्मभूमी २ कर्म याने कर्त्तव्य करें, अकर्म याने कर्त्तव्य न करें उन्हें युगलिया कहते हैं उनकी कल्पवृक्ष आशा पूरते हैं।

७ देवता ४ प्रकारके होते हैं, भवनपति १ वानव्यंतर २ जोतिषी ३ वैमानिक ४

८ जीव हिंसा १ झूठ २ चोरी ३ मैथुन ४ परिग्रह

५ ए पांच आस्रव द्वार हैं इनको सेना सेवाना और अनुमोदने में एकान्त पाप है।

६ सब से पहले हर एक काम में परमात्मा परमेश्वर को याद करो जिससे तुम्हारा हृदय शुद्ध होय।

१० जिसके पास संसारिक इल्म सीखे वह संसारिक गुरु याने उस्ताद और जो संसारमयी समुद्र मे तैरने का उपाय बतावें वही तरण तारण, तथा श्रमण धर्म या श्रमणोपासक धर्म जिससे अङ्गीकार करें वही धार्मिक गुरु।

११ गुरु का अविनय करने से गुण नहीं आते हैं। आखिर में उनका पढ़ना व्यर्थ होता है, जैसे वेश्या का शृङ्गार, वैसे अवनीत का पढ़ना एकसा है

१२ बुरा काम अगर कोई छिपके भी करेगा तो क्या है आखिर जाहिर में आवेहीगा इसलिये बुरा काम नहीं करना चाहिये जवानी दिवानी है जो धर्म करना हो वो करने में आलस नहीं करना चाहिये।

१३ गुण माने उसको गुण सिखलाना, दान सुपात्र को देना, उपदेश सबको करना, नेकी बुरे और भले दोनूं के साथ करना, यह गुणवालों का काम है।

१४ लायकों में, चतुरों में. गुणीजनों में, विद्वानों में, हुनरमन्दों में, जितेन्द्रियों में, परोपकारियों में धर्मात्माओं में. तपस्वियों में, शीलवन्तो में, जिसका नाम नहीं उसका जन्म मृग समान व्यर्थ है।

१५ लुच्चे को, बदमास को बेईमान को, चोर को, जुवारी को औरतों की छल बल को, झूठे को कपटी को, दगाबाज को, व्यभिचारी को, अवनीत को, पाखण्डियों को, अवश्य पहचान लेना चाहिये लेकिन खूबी तो वही है जो उनसे बचा रहै।

१६ माता, पिता, गुरु, दोस्त और जो अपने पर विश्वास रक्खे इन सब से जो कोई दगा करेगा वो बहुत ही हैरान होवेगा और पाप कर्म उपार्जन करके इस भव परभव में दुःखी होगा।

१७ जिस जगह गप्प मारनेवाले और निन्दक बैठे हों उस जगह अक्लमन्द आदमी को चाहिये चुप रहैं, क्योंकि जब मेंडक बोलते हैं उस समय कोयल चुप ही रहती है।

१८ वक्त बहुत ही कीमती है गया समय फिर कभी नहीं आवेगा इसलिये एक समय भी व्यर्थ

नहीं जाने दो जहां तक बन सके ईश्वर भजन और धर्म करो जिससे यह लोक परलोक सुधरे।

१९ अहो मित्र! जहां तक बन सके वहां तक करज-दार मत हो, करजदारी दो प्रकार की है एक तो द्रव्य, दूसरी भाव, द्रव्य तो दूसरे से उधार लेना, और पाप कर्म उपार्जन करना, यह भाव करजदारी है, करजदार चाहे जैसा बहादुर क्यों न हो वो दुखी ही रहेगा।

२० जुल्म से पैसा पैदा करने वाले बदनाम और गुनहगार होते हैं और उस पैसे से बरकत भी नहीं होती है। हे मित्र! याद रक्खो जुल्मी आदमी कभी सुखी नहीं रहता खाली मन का विश्वास है।

२१ साधु मुनिराज को देख के खुश होना वन्दना करना, विनय सहित भक्ति करना, शुद्ध निर्दोष आहार पानी देना, व्याख्यान सुनना, सुनके सत्य सरधना, पुन्यवान और हलुकर्मियों का काम है, साधु संगति से पाप कर्म क्षय होके अनेक गुण बधते हैं।

२२ सत्य संगति करो तो ऐसे साधु महात्मा की करो

कि जो किसी भी जीव को न मारे, झूठ न बोले, चोरी न करे, स्त्री से विषय भोग न करे, और एक कौड़ी मात्र भी परिग्रह न रखे ऐसे साधू ही दुःखों से छुड़ा कर कल्याण का रास्ता बताने में समर्थ हैं बाकी सब ढोंग है, जहां पर कनक और कामिनी विराजमान हैं वहां कुछ नहीं, हे मित्र! मत भरमो।

२३ जो आदमी तमाशबीनी में और इन्द्रियों की विषय में डूबे रहते हैं उनके पास से इतनी बातें चली जाती है, दौलत, इज्जत, जोर, रङ्ग, रूप, धर्म, पुन्य, जप, तप, सिवाय इनके अनेक नुकशान है इसलिये विषय भोग में लिप्त रहना दुर्गतिगामियों का काम है।

२४ क्रोध सरिषा जहर नहीं १ मान सरिषा बैर नहीं २ माया सरिषा भय नहीं ३ लोभ सरिषा दुःख नहीं ४ दया सरिषा अमृत नहीं ५ सांच सरिषा शरण नहीं ६ सन्तोष सरिषा सुख नहीं ७ धर्म सरिषा मित्र नहीं ८ औरत सरावें वो जती ९ साधू वतावे वो सती १०।

२५ पाप टाले वो पण्डित १ दया करे सो दानेश्वरी २ कुलंछन छोड़े सो चतुर ३ धर्म करे

सो ज्ञानी ४ स्थिर चित रक्खे सो ध्यानी ५ इन्द्रियां दमे सो शूरा ६ पर उपकार करै सो पूरा ७ गुणवन्तों का गुण गावे सो गुणवान ८ निर्धन से नेह करै सो पुन्यवान ६ ।

* इति *

॥ अथ पाना की चरचा ॥

१ जीव रूपी कि अरूपी, अरूपी. किणन्याय कालो पीलो नीलो रातो धोलो ए पांच वर्ण नहीं पावे इण न्याय ।

२ अजीव रूपी कि अरूपी. रूपी अरूपी दोनूं ही, किणन्याय धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय काल ये च्यारूं तो अरूपी और पुद्गलास्तिकाय रूपी ।

३ पुन्य रूपी कि अरूपी, रूपी, ते किणन्याय पुन्य ते शुभ कर्म. कर्म ते पुद्गल. पुद्गल ते रूपी ही छै ।

४ पाप रूपी कि अरूपी. रूपी, ते किणन्याय पाप ते अशुभ कर्म. कर्म ते पुद्गल ते रूपी ।

५ आस्रव रूपी कि अरूपी अरूपी, ते किणन्याय

आस्रव जीव का परिणाम छै, परिणाम ते जीव छै, जीव ते अरूपी छै, पांच वर्ण पावे नहीं इण न्याय ।

६ संवर रूपी कि अरूपी. अरूपी, किणन्याय पांच वर्ण पावे नहीं

७ निर्जरा रूपी कि अरूपी, अरूपी छै, ते किणन्याय निर्जरा जीव का परिणाम छै पांच वर्ण पावे नहीं इण न्याय ।

८ बन्ध रूपी कि अरूपी, रूपी, किणन्याय बन्ध ते शुभ अशुभ कर्म छै, कर्म ते पुद्गल छै, पुद्गल ते रूपी छै ।

९ मोक्ष रूपी कि अरूपी, अरूपी छै, ते किणन्याय समस्त कर्म से मुकावे ते मोक्ष अरूपी ते जीव सिद्ध थया ते मां पांच वर्ण पावे नहीं इणन्याय ।

॥ लड़ी दूजी सावद्य निरवद्य को ॥

१ जीव सावद्य, कि निरवद्य, दोनूं ही छै, ते किण-न्याय चोखा परिणामां निरवद्य, खोटा परिणामा सावद्य छै ।

२ अजीव सावद्य निरवद्य दोनूं नहीं अजीव छै ।

३ पुन्य सावद्य निरवद्य दोनूं नहीं अजीव छै ।

४ पाप सावद्य कि निरवद्य. दोनूं नहीं अजीव छै।

५ आस्रव सावद्य कि निरवद्य, दोनूं ही छै किणन्याय मिथ्यात्व आस्रव, अव्रत आस्रव, प्रमाद आस्रव, कषाय आस्रव ये च्यार तो एकान्त सावद्य छै शुभ जोगां में निर्जरा होय जिण आसरी निरवद्य छै अशुभ जोग सावद्य छै।

६ संवर सावद्य कि निरवद्य. निरवद्य छै, ते किण-न्याय कर्म तोड़वारा परिणाम निरवद्य छै।

७ निरजरा सावद्य कि निरवद्य, निरवद्य छै ते किण-न्याय कर्म तोड़वारा परिणाम निरवद्य छै।

८ बन्ध सावद्य कि निरवद्य. दोनूं नहीं. ते किणन्याय अजीव छै इणन्याय।

९ मोक्ष सावद्य कि निरवद्य, निरवद्य छै. सकल कर्म मूकाय सिद्ध भगवन्त थया ते निरवद्य छै।

॥ लड़ी तीजी आज्ञा मांहि बाहर की ॥

१ जीव आज्ञा मांहि कि बाहिर, दोनूं छै, ते किण न्याय. जीव का चोखा परिणाम आज्ञा मांहि छै खोटा परिणाम आज्ञा बाहिर।

२ अजीव आज्ञा मांहि कि बाहिर, दोनूं नहीं, अजीव छै।

३ पुन्य आज्ञा मांहि के बाहिर, दोनूं नहीं, अजीव छै तूणन्याय।

४ पाप आज्ञा मांहि बारे, दोनूं नहीं, अजीव छै।

५ आस्रव आज्ञा मांहि के बारे, दोनूं ही छै, ते किणन्याय, आस्रव नां पांच भेद छै तिण में मिथ्यात्व अब्रत प्रमाद कषाय ए च्यार तो आज्ञा बाहिर छै, अने जोग नां दोय भेद शुभ जोग तो आज्ञा मांहि छै, अशुभ जोग आज्ञा बाहिर छै।

६ संवर आज्ञा मांहि के बाहिर, आज्ञा मांहि छै ते किण न्याय कर्म रोकवारा परिणाम आज्ञा मांहि छै।

७ निर्जरा आज्ञा मांहि के बाहिर, आज्ञा मांहि छै ते किणन्याय कर्म तोड़वारा परिणाम आज्ञा मांहि छै।

८ बन्ध आज्ञा मांहि के बाहिर, दोनूं नहीं, ते किण न्याय, आज्ञा मांहि बाहिर तो जीव हुवे ए बन्ध तो अजीव छै तूणन्याय!

९ मोच आज्ञा मांहि के बाहिर, आज्ञा मांहि छै, ते किणन्याय, कर्म मूंकाय सिद्ध थया ते आज्ञा में छै।

॥ लड़ी चौथी जीव चोर के साहूकार ॥

१ जीव चोर कि साहूकार. दोनूं छै, किणन्याय चोरवा परिणामां साहूकार छै माठा परिणामां चोर छै।

२ अजीव चोर कि साहूकार, दोनूं नहीं, किणन्याय चोर साहूकार तो जीव हुवे ये अजीव छै।

३ पुन्य चोर कि साहूकार, दोनूं नहीं अजीव छै।

४ पाप चोर के साहूकार. दोनूं नहीं अजीव छै।

५ आस्रव चोर के साहूकार, दोनूं छै किणन्याय च्यार आस्रव तो चोर छै. अनै अशुभ जोग पण चोर छै, शुभ जोग साहूकार छै।

६ संवर चोर कि साहूकार साहूकार छै, किणन्याय, कर्म रोकवा रा परिणाम साहूकार छै।

७ निर्जरा चोरकि साहूकार साहूकार छै, किणन्याय कर्म तोड़वा रा परिणाम साहूकार छै।

८ बंध चोर कि साहूकार. दोनूं नहीं अजीव छै।

९ मोक्ष चोर के साहूकार, साहूकार. किणन्याय कर्म संकाय कर सिद्ध थया ते साहूकार छै।

॥ लड़ी पांचमो जीव अजीव की ॥

१ जीव ते जीव छै कि अजीव छै. जीव. ते किणन्याय सदा काल जीव को जीव रहसी अजीव कदे हुवे नहीं।

२ अजीव ते जीव छै की अजीव छै, अजीव छै, अजीव को जीव किण ही काल में हुवे नहीं।

३ पुन्य जीव छै की अजीव छै, अजीव छै, ते किणन्याय शुभ कर्म पुद्गल छै पुद्गल ते अजीव छै।

४ पाप ते जीव छे की अजीव छै, अजीव छै, किणन्याय पाप ते अशुभ कर्म पुद्गल छै, पुद्गल ते अजीव छै।

५ आस्रव जीव छै की अजीव छै, जीव छै ते किणन्याय शुभ अशुभ कर्म ग्रह ते आस्रव छै, कर्म ग्रह ते जीव ही छै।

६ संबर जीव की अजीव, जीव छै, ते किणन्याय कर्म रोके ते जीव ही छे।

७ निरजरा जीव की अजीव, जीव छे किणन्याय कर्म तोड़े ते जीव छे।

८ बन्ध जीव की अजीव छै, अजीव छै, ते किणन्याय शुभ अशुभ कर्म को बन्ध अजीव छै।

९ मोक्ष जीव की अजीव, जीव छै, किणन्याय समस्त कर्म मूकावे ते मोक्ष जीव छै।

लड़ी छट्ठी जीव छांडवा जोग के आदरवा जोग ।

१ जीव छांडवा जोग के आदरवा जोग, छांडवा जोग छै, किणन्याय पोते जीव नूं भाजन करे अनेरा जीव पर ममत्व भाव करे ।

२ अजीव छांडवा जोग के आदरवा जोग, छांडवा जोग छै, किणन्याय अजीव छै ।

३ पुन्य छांडवा जोग के आदरवा जोग छांडवा जोग छै, ते किणन्याय पुन्य ते शुभ कर्म पुद्गल छै, कर्म ते छांडवा ही जोग छै ।

४ पाप छांडवा जोग के आदरवा जोग, छांडवा जोग छै, किणन्याय पाप ते अशुभ कर्म छै जीव नै दुखदाई छै ते छांडवा ही जोग छै ।

५ आस्रव छांडवा जोग के आदरवा जोग, छांडवा जोग छै, किणन्याय आस्रव द्वारे जीव रे कर्म लागे छै, आस्रव कर्म आवा नां बारणा छै, ते छांडवा जोग छै ।

६ संवर छांडवा जोग के आदरवा जोग, आदरवा जोग छै, किणन्याय कर्म रोके ते संवर छै ते आदरवा जोग छै ।

७ निरजरा छांडवा जोग कि आदरवा जोग, आदरवा जोग छे किणन्याय देश थी कर्म तोड़े देश थी जीव उज्वल थाय ते निरजरा छे ते आदरवा जोग छे ।

८ बन्ध छांडवा जोग कि आदरवा जोग, छांडवा जोग छे ते किणन्याय शुभ अशुभ कर्म नों बंध छांडवा जोग ही छे।

९ मोक्ष छांडवा जोग कि आदरवा जोग, आदरवा जोग छे, ते किणन्याय सकल कर्म खपावे. जीव निरमल थाय, सिद्ध हुवे, इणन्याय आदरवा जोग छे ।

॥ षटद्रव्य पे लड़ी सातमी रूपी अरूपी को ॥

१ धर्मास्तिकाय रूपी कि अरूपी, अरूपी, किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय ।

२ अधर्मास्तिकाय रूपी कि अरूपी, अरूपी, किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय ।

३ आकाशास्तिकाय रूपी कि अरूपी, अरूपी, किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय ।

४ काल रूपी कि अरूपी, अरूपी, किणन्याय, पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय ।

५ पुद्गल रूपी कि अरूपी, रूपी. किगान्याय, पांच वर्ण पावे इगान्याय ।

६ जीव रूपी कि अरूपी, अरूपी, किगान्याय पांच वर्ण नहीं पावे इगान्याय ।

॥ छव द्रव्य पर लड़ी आठमी सावद्य निर्वद्य को ॥

१ धर्मास्ति काय सावद्य कि निर्वद्य. दोनूं नहीं, अजीव छै ।

२ अधर्मास्ति काय सावद्य कि निर्वद्य दोनूं नहीं, अजीव छै ।

३ आकाशास्ति काय सावद्य कि निर्वद्य, दोनूं नहीं, अजीव छै ।

४ काल सावद्य कि निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव छै ।

५ पुद्गलास्तिकाय सावद्य कि निर्वद्य, दोनूं नहीं, अजीव छै ।

६ जीवास्तिकाय सावद्य कि निर्वद्य, दोनूं छै, खोटा परिणाम सावद्य छै, चोखा परिणाम निर्वद्य छै ।

॥ छव द्रव्य पर लड़ी ९ नवमी ॥

१ धर्मास्तिकाय आज्ञा मांहि कि बाहर, दोनूं नहीं, ते किगान्याय, आज्ञा मांहि बाहर तो जीव छै अने ए अजीव छै ।

२ अधर्मास्तिकाय आज्ञा मांहि कै बाहर, दोनूं नहीं किणन्याय, अजीव छै।

३ आकाशास्ति काय आज्ञा मांहि कै बाहर, दोनूं नहीं किणन्याय, अजीव छै।

४ काल आज्ञा मांहि कै बाहर, दोनूं नहीं किणन्याय अजीव छै।

५ पुद्गल आज्ञा मांहि कै बाहर, दोनूं नहीं, किणन्याय अजीव छै।

६ जीव आज्ञा मांहि कै बाहर दोनूं छै, किणन्याय निर्वद्य करणी आज्ञा मांहि छै सावद्य करणी आज्ञा बाहर छै दूणन्याय।

॥ लड़ी १० दशमी ॥

१ धर्मास्ति काय चोर कै साहूकार, दोनूं नहीं, किणन्याय, चोर साहूकार जीव छै, ए धर्मास्ति काय अजीव छै, दूणन्याय।

२ अधर्मास्ति काय चोर कै साहूकार, दोनूं नहीं अजीव छै।

३ आकाशास्ति काय चोर कै साहूकार, दोनूं नहीं अजीव छै।

४ काल चोर कै साहूकार दोनूं नहीं, अजीव छै।

५ पुद्गल चोर कै साहूकार, दोनूं नहीं अजीव छै।

६ जीव चोर कै साहूकार, दोनूं छै किणन्याय माठा परिणाम आंसरी चोर छै, चोखा परिणामां आंसरी साहूकार छै।

॥ छव द्रव्य पर लड़ी ११ मी जीव अजीव की ॥

१ धर्मास्तिकाय जीव कै अजीव, अजीव छै।

२ अधर्मास्ति काय जीव कै अजीव, अजीव छै।

३ आकाशास्ति काय जीव कै अजीव, अजीव छै।

४ काल जीव कै अजीव, अजीव छै।

५ पुद्गलास्ति काय जीव कै अजीव, अजीव छै।

६ जीवास्ति काय जीव कै अजीव जीव छै।

॥ छव द्रव्य पर लड़ी बारमी एक अनेक की ॥

१ धर्मास्ति काय एक छै कै अनेक छै, एक छै किण न्याय द्रव्य थकी एक ही द्रव्य छै।

२ अधर्मास्ति काय एक छै कै अनेक छै, एक छै, द्रव्य थकी एक ही द्रव्य छै।

३ आकाशास्ति काय एक कै अनेक, एक छै, लोक अलोक प्रमाणे एकही द्रव्य छै।

४ काल एक छै कै अनेक छै, अनेक छै, द्रव्यथकी अनन्ता द्रव्य छै इणन्याय।

५ पुद्गल एक छै के अनेक छै, अनेक छै द्रव्यथकी अनन्ता द्रव्य छै दूणान्याय ।

६ जीव एक छै के अनेक छै, अनेक छै, अनन्ता छै दूणान्याय ।

॥ लड़ी १३ तेरमी ॥

छव में नव में की चरचा ।

१ कर्मों का कर्त्ता छव पदारथ में कोण ? नव तत्व में कोण ? उत्तर—छव में जीव, नव में जीव आस्रव ।

२ कर्मों का उपार्जिता छव में कोण? नव में कोण ? उत्तर—छव में जीव, नव में जीव, आस्रव ।

३ कर्मों को लगावता छव में कोण ? नवमें कोण ? उ०—छव में जीव, नव में जीव, आस्रव ।

४ कर्मों को रोकता छव में कोण ? नव में कोण ? उ०—छव में जीव, नव में जीव, संबर ।

५ कर्मों को तोड़ता छव में कोण ? नव में कोण ? उ०—छव में जीव, नव में जीव, निर्जरा ।

६ कर्मों को बांधता छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव आस्रव ।

७ कर्मों को झूकावता छवमें कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव, मोक्ष ।

॥ लड़ी १४ चौदमी ॥

१ अठारे पाप सेवे ते छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव, आस्रव ।

२ अठारे पाप सेवा का त्याग करे ते छव में कोण ? नव में कोण, छव में जीव, नव में जीव, निर्जरा अने त्याग छव में जीव, नव में जीव, संवर ।

३ सामायक छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव संवर ।

४ व्रत छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव, संवर ।

५ अव्रत छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव नव में जीव, आस्रव ।

६ अठारे पाप को वहरमण छव में कोण ? नव में कोण ? छव मे जीव, नव में जीव, सवर ।

७ पञ्च महाव्रत छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव, संवर ।

८ पांच चारित्र छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव, संवर ।

९ पांच सुमति छव में कोण ? नवमें कोण ? छव में जीव, नव में जीव, निर्जरा ।

१० तीन गुप्ती छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव, संबर ।

११ बारे ब्रत छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव, संबर ।

१२ धर्म छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव, संबर, निर्जरा ।

१३ अधर्म छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव, आस्रव ।

१४ दया छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव, संबर, निर्जरा ।

१५ हिन्सा छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव, आस्रव ।

॥ लड़ो १५ पन्दरमी ॥

१ जीव छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव, आस्रव, संबर, निर्जरा, मोक्ष ।

२ अजीव छवमें कोण ? नव में कोण ? छव में पांच, नव में अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध ।

३ पुन्य छव में कोण ? नव में कोण ? छव में पुद्गल नव में अजीव, पुन्य, बन्ध ।

४ पाप छव में कोण ? नव में कोण ? छव में पुद्गल, नव में अजीव, पाप, बन्ध ।

५ आस्रव छव मे कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव, आस्रव ।

६ संवर छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव नव में जीव, संवर ।

७ निर्जरा छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव, निर्जरा ।

८ बन्ध छव में कोण ? नव में कोण ? छव में पुद्गल नव में अजीव, पुन्य, पाप, बंध ।

९ मोक्ष छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव, मोक्ष ।

॥ लड़ी १६ सोलमी ॥

१ धर्मास्ति छव में कोण ? नव में कोण ? छव में धर्मास्ति, नव में अजीव ।

२ अधर्मास्ति छव में कोण ? नव में कोण ? छव में अधर्मास्ति नव में अजीव ।

३ आकाशास्ति छव में कोण ? नव में कोण ? छव में आकाशास्ति, नव में अजीव ।

४ काल छव में कोण ? नव में कोण ? छव में काल, नव में अजीव ।

५ पुद्गल छव में कोण ? नव में कोण ? छव में पुद्गल नव में अजीव, पुन्य, पाप, बंध ।

६ जीव छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव नव में जीव, आस्रव, संवर, निर्जरा, मोक्ष ।

॥ लड़ी १७ सतरमी ॥

१ लेखण (कलम) पूठो कागद को पानों, लकड़ी की पाटो छव में कोण ? नव में कोण ? छव में पुद्गल, नव में अजीव ।

२ पातो, रजोहरण, चादर, चोलपट्टो, आदि भण्ड उपगरण, छव में कोण ? नव में कोण ? छव में पुद्गल, नव में अजीव ।

३ धान को दाणो, छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव ।

४ रूंख (वृक्ष) छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव ।

५ तावड़ो छायां छव में कोण ? नवमें कोण ? छव में पुद्गल नव में अजीव ।

६ दिन रात छव में कोण ? नव में कोण ? छव में काल, नव में अजीव ।

७ श्री सिद्ध भगवान छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव, मोक्ष ।

॥ लड़ी १८ अठारमी ॥

१ पुन्य धर्म एक कै दोय ? दोय, किणन्याय, पुन्य तो अजीव छै धर्म जीव छै।

२ पुन्य और धर्मास्ति एक कै दोय ? दोय, किणन्याय पुन्य तो रूपी छै, धर्मास्ति अरूपी छै।

३ धर्म और धर्मास्ति एक कै दोय ? दोय, किणन्याय धर्म तो जीव छै, धर्मास्ति अजीव छै।

४ अधर्म और अधर्मास्ति एक कै दोय ? दोय, किण-न्याय, अधर्म तो जीव छै, अधर्मास्ति अजीव।

५ पुन्य अने पुन्यवान एक कै दोय ? दोय, किणन्याय, पुन्य तो अजीव छै, पुन्यवान जीव छै।

६ पाप अने पापी एक कै दोय ? दोय, किणन्याय पाप तो अजीव छै पापी जीव छै।

७ कर्म अने कर्मां को करता एक कै दोय ? दोय, किणन्याय, कर्म तो अजीव छै, कर्मां रो करता जीव छै।

॥ लड़ी १९ उन्नीसमी ॥

१ कर्म जीव कै अजीव ? अजीव छै।

२ कर्म रूपी कै अरूपी ? रूपी छै।

३ कर्म सावद्य कि निर्वद्य ? दोनूं नहीं अजीव छै ।

४ कर्म चोर कि साहूकार ? दोनूं नहीं अजीव छै ।

५ कर्म आज्ञा मांहि कि बाहर ? दोनूं नहीं अजीव छै ।

६ कर्म छांडवा जोग कि आदरवा जोग, छांडवा जोग छै ।

७ आठ कर्मां में पुन्य कितना पाप कितना ? ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय, अन्तराय, ए च्यार कर्म तो एकान्त पाप छै, वेदनी, नाम, गोत्र, आयु ए च्यार कर्म पुन्य पाप दोनूं ही छै ।

॥ लड़ी २० बीसमी ॥

१ धर्म जीव कि अजीव ? जीव छै।

२ धर्म सावद्य कि निर्वद्य ? निर्वद्य छै ।

३ धर्म आज्ञा मांहि कि बाहर ? श्री वीतराग देव की आज्ञा मांहि छै ।

४ धर्म चोर कि साहूकार ? साहूकार छै ।

५ धर्म रूपी कि अरूपी ? अरूपी छै ।

६ धर्म छांडवा जोग कि आदरवा जोग ? आदरवा जोग छै ।

७ धर्म पुन्य कि पाप ? दोनूं नहीं, किणन्याय, धर्म तो जीव छै, पुन्य पाप अजीव छै ।

॥ लड़ी २१ इक्कीसमी ॥

१ अधर्म जीव के अजीव ? जीव छै ।

२ अधर्म सावद्यके निरवद्य ? सावद्य छै ।

३ अधर्म चोर के साहूकार ? चोर छै ।

४ अधर्म आज्ञा मांहि के बाहर ? बाहर छै ।

५ अधर्म रूपी के अरूपी ? अरूपी छै ।

६ अधर्म छांडवा जोग के आदरवा जोग ? छांडवा जोग छै ।

७ अधर्म पुन्य के पाप ? दोनूं नहीं किणन्याय पुन्य पाप अजीव छै अधर्म जीव छै ।

॥ लड़ी २२ बावोसमी ॥

१ सामायक जीव के अजीव ? जीव छै ।

२ सामायक सावद्य के निरवद्य ? निरवद्य छै ।

३ सामायक चोर के साहूकार ? साहूकार छै ।

४ सामायक आज्ञा मांहि के बाहर ? आज्ञा मांहि छै ।

५ सामायक रूपी के अरूपी ? अरूपी छै ।

६ सामायक छांडवा जोग के आदरवा जोग ? आदरवा जोग छै ।

७ सामायक पुन्य के पाप ? दोनूं नहीं, क्रियान्याय पुन्य पाप अजीव छै, सामायक जीव छै।

॥ लड़ी २३ तेवीसमी ॥

१ सावद्य जीव के अजीव ? जीव छै।

२ सावद्य सावद्य छै के निरवद्य ? सावद्य छै।

३ सावद्यआज्ञा मांहि के बाहर ? बाहर छै।

४ सावद्य चोर के साहूकार ? चोर छै।

५ सावद्य रूपी के अरूपी ? अरूपी छै।

६ सावद्य छांडवा जोग के आदरवा जोग ? छांडवा जोग छै।

७ सावद्य पुन्य के पाप ? दोनूं नहीं, पुन्य पाप तो अजीव छै सावद्य जीव छै।

॥ लड़ी २४ चौवीसमी ॥

१ निरवद्य जीव के अजीव ? जीव छै।

२ निरवद्य सावद्य के निरवद्य ? निरवद्य छै।

३ निरवद्य चोर के साहूकार ? साहूकार छै।

३ निरवद्य आज्ञा मांहि के बाहर ? मांहि छै।

५ निरवद्य रूपी के अरूपी ? अरूपी छै।

६ निरवद्य छांडवा जोग कि आदरवा जोग ? आदरवा जोग छै ।

७ निरवद्य धर्म कि अधर्म ? धर्म छै ।

८ निरवद्य पुन्य कि पाप ? पुन्य पाप दोनूं नहीं, किणन्याय ? पुन्य पाप तो अजीव छै, निरवद्य जीव छै ।

॥ लड़ी २५ पचीसमी ॥

१ नव पदार्थ में जीव कितना पदार्थ ? अने अजीव कितना पदार्थ ? जीव, आस्रव, संवर, निर्जरा, मोक्ष ये पांच तो जीव छै, अने अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध, ये च्यार पदार्थ अजीव छै ।

२ नव पदार्थ में सावद्य कितना निरवद्य कितना ? जीव अने आस्रव ये दोय तो सावद्य निरवद्य दोनूं छै अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध ये सावद्य निरवद्य दोनूं नहीं । संवर, निर्जरा, मोक्ष, ये तीन पदार्थ निरवद्य छै ।

३ नव पदार्थ में आज्ञा मांहि कितना आज्ञा बाहर कितना ? जीव, आस्रव, ये दोय तो आज्ञा मांहि पण छै, अने आज्ञा बाहर पण

छै। अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध, ये च्यार आज्ञा मांहि बाहर दोनूं ही नहीं। संबर, निर्जरा, मोक्ष, ये आज्ञा मांहि छै।

४ नव पदार्थ में चोर कितना साहूकार कितना? जीव, आस्रव, तो चोर साहूकार दोनूं ही छै। अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध ये चोर साहूकार दोनूं नहीं, संबर निर्जरा मोक्ष ये तीन साहूकार छै।

५ नव पदार्थ में छांडवा जोग कितना आदरवा जोग कितना? जीव अजीव पुन्य पाप, आस्रव, बन्ध, ये छव तो छांडवा जोग छै, संबर, निर्जरा मोक्ष, ये तीन आदरवा जोग छै अने जाणवा जोग नवों ही पदार्थ छै।

६ नव पदार्थ में रूपी कितना अरूपी कितना? जीव, आस्रव, संबर, निर्जरा, मोक्ष, ये पांच तो अरूपी छै, अजीव, रूपी, अरूपी दोनूं छै पुन्य, पाप, बंध रूपी छै।

७ नव पदार्थ में एक कितना अनेक कितना? उ० अजीव टाली आठ पदार्थ तो अनेक छै, अने अजीव एक अनेक दोनूं छै, किणन्याय? धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकाशास्ति ए तीनूं द्रव्य थकी एक एक ही द्रव्य छै।

॥ लड़ी २६ छब्बीसमी ॥

१ छव द्रव्य में जीव कितना अजीव कितना? एक जीव पांच अजीव छै।

२ छव द्रव्य में रूपी कितना अरूपी कितना? जीव धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकाशास्ति, काल, ए पांच तो अरूपी छै, पुद्गल रूपी छै।

३ छव द्रव्य में आज्ञा मांहि कितना, आज्ञा बाहर कितना? जीव तो आज्ञा मांहि बाहर दोनूं छै, बाकी पांच आज्ञा मांहि बाहर दोनूं नहीं।

४ छव द्रव्य में चोर कितना साहूकार कितना? जीव तो चोर साहूकार दोनूं छै, बाकी पांच द्रव्य चोर साहूकार दोनूं नहीं, अजीव छै।

५ छव द्रव्य में सावद्य कितना निरवद्य कितना? एक जीव द्रव्य तो सावद्य निरवद्य दोनूं छै बाकी पांच द्रव्य सावद्य निरवद्य दोनूं नहीं।

६ छव द्रव्य में एक कितना अनेक कितना? धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकाशास्ति, ए तीनों तो एक ही द्रव्य छै, काल, जीव, पुद्गलास्ति ए तीन अनेक छै, तीनां का अनन्ता द्रव्य छै।

७ छव द्रव्य में सप्रदेशी कितना अप्रदेशी कितना ? एक काल तो अप्रदेशी छै, बाकी पांच सप्रदेशी छै।

॥ लड़ी २७ सत्ताइसमी ॥

१ पुन्य धर्म कि अधर्म ? दोनूं नहीं, किणन्याय ? धर्म अधर्म जीव छै, पुन्य अजीव छै।

२ पाप धर्म कि अधर्म ? दोनूं नहीं, किणन्याय ? धर्म अधर्म जीव छै, पाप अजीव छै।

३ बंध धर्म कि अधर्म ? दोनूं नहीं, किणन्याय ? धर्म अधर्म तो जीव छै, बंध अजीव छै।

४ कर्म अने धर्म एक कि दोय ? दोय छै, किणन्याय ? कर्म तो अजीव छै, धर्म तो जीव छै।

५ पाप अने धर्म एक कि दोय ? दोय छै, किणन्याय ? पाप तो अजीव छै, धर्म जीव छै।

६ धर्म अने अधर्मास्ति एक कि दोय ? दोय, किणन्याय ? धर्म तो जीव छै, अधर्मास्ति अजीव छै।

७ अधर्म अने धर्मास्ति एक कि दोय ? दोय, किणन्याय ? अधर्म तो जीव छै, धर्मास्ति अजीव छै।

८ धर्मास्ति अने अधर्मास्ति एक कि दोय ? दोय

किणन्याय ? धर्मास्ति को तो चालवा नो सहाय छै, अने अधर्मास्ति नो थिर रहवा नो सहाय छै।

९ धर्म अने धर्मी एक कि होय ? एक छै, किणन्याय ? धर्म जीव का चोखा परिणाम छै।

१० अधर्म अने अधर्मी एक कि होय ? एक छै, किण-न्याय ? अधर्म जीव का खोटा परिणाम छै।



प्रश्नोत्तर।

१ थारी गति कांई—मनुष्य गति।

२ थारी जाति कांई—पंचेन्द्री।

३ थारी काय कांई—त्रस काय।

४ इन्द्रियां कितनी पावे—५ पांच।

५ पर्याय कितना पावे—६ छव।

६ प्राण कितना पावे—१० दश पावे।

७ शरीर कितना पावे—३ तीन—औदारिक, तेजस, कार्मण।

८ जोग कितना पावे—९ नव पावे—च्यार मन का, च्यार वचन का, एक काया को, औदारिक।

९ तूमें उपयोग कितना पावै—४ च्यार पावै—मतिज्ञान १ श्रुतिज्ञान २ चक्षु दर्शन ३ अचक्षु दर्शन ४।

१० थारे कर्म कितना—८ आठ।

११ गुणस्थान किसो पावे—व्यवहार थी पांचमूं; साधू ने पूछे तो छट्ठो ।

१२ विषय कितनी पावे—२३ तेवीस ।

१३ मिथ्यात्व नां दश बोल पावे के नहीं, व्यवहार थी नहीं पावे ।

१४ जीव का चौदा भेदां में से किसो भेद पावे, १ एक चौदमूं पर्याप्तो सन्नी पंचेन्द्री को पावे ।

१५ आतमां कितनी पावे—श्रावक में तो ७ सात पावे, अने साधू में आठ पावे ।

१६ दण्डक किसो पावे—एक इसबीसमूं ।

१७ लेश्या कितनी पावे—६ छव ।

१८ दृष्टि कितनी पावे—व्यवहार थी एक सम्यक् दृष्टि पावे ।

१९ ध्यान कितना पावे—३ तीन, शुक्ल ध्यान टाल के ।

२० छव द्रव्य में किसा द्रव्य पावे—१ एक जीव द्रव्य ।

२१ राशि किसी पावे—एक जीव राशि ।

२२ श्रावक का बारा व्रत श्रावक में पावे ।

२३ साधू का पञ्च महाव्रत पावे के नहीं—साधू मे पावे श्रावक में पावे नहीं ।

२४ पांच चारित्र श्रावक में पावे के नहीं—नहीं पावै; एक देश चारित्र पावे।

१ एकेन्द्री की गति कांई—तिर्यञ्च गति।

२ एकेन्द्री की जाति कांई—एकेन्द्री।

३ एकेन्द्री में काया किसी पावे—५ पांच थावर की।

४ एकेन्द्री में इन्द्रियां कितनी पावै—एक स्पर्श इन्द्री।

५ एकेन्द्री में पर्याय कितनी पावै—४ च्यार मन भाषा ए दोय टली।

६ एकेन्द्री में प्राण कितना पावै—४ च्यार पावै, स्पर्श इन्द्रीय बलप्राण १ काय बलप्राण २ श्वासोश्वास बलप्राण ३ आऊखो बलप्राण ४।

७ मूरड माटी मुलतानी पत्थर सोना चांदी रतनादिक पृथ्वीकाय का प्रश्नोत्तर।

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यञ्च गति
जाति कांई	एकेन्द्री
काय किसी	पृथ्वीकाय
इन्द्रियां कितनी पावै	एक स्पर्श इन्द्री

पर्याय कितनी पावे	४ च्यार, मन भाषा टली
प्राण कितना	४ च्यार पावे, स्पर्श इन्द्री बल प्राण १ काय बल २ श्वासोश्वास बल ३ आयुषो बल प्राण ४।

८ पाणी ओसादि अप्प कायका प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यञ्च गति
जाति कांई	एकेन्द्री
काय किसी	अप्प काय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्यार, मन भाषा टली
प्राण कितना	४ च्यार, ऊपर प्रमाणे

९ अग्नि तेउकाय नां प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यञ्च गति
जाति कांई	एकेन्द्री
काय किसी	तेउकाय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्यार, मन भाषा टली
प्राण कितना	४ च्यार, ऊपर प्रमाणे

१० वायुकाय का प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यञ्च गति

जाति कांई	एकेन्द्री
काय कांई	वायुकाय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्यार ऊपर प्रमाणे
प्राण कितना	४ च्यार ऊपर प्रमाणे

११ वृक्ष, लता, पान, फूल, फल, लीलण, फूलण आदि बनस्पतिकायना प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यञ्च गति
जाति कांई	एकेन्द्री
काय कांई	बनस्पतिकाय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्यार ऊपर प्रमाणे
प्राण कितना	४ च्यार ऊपर प्रमाणे

१२ लट गिण्डोला आदि बेन्द्री का प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यञ्च गति
जाति कांई	बेन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	२ दोय, स्पर्श, रस, इन्द्री
पर्याय कितनी	५ पांच मन पर्याय टली
प्राण कितना	६ छव, रस इन्द्री बल प्रा स्पर्श इन्द्री बल प्राण काय बल प्राण

श्वासो श्वास बल प्राण	४
आउषो बल प्राण	५
भाषा बल प्राण	६

१३ कीड़ी मकोड़ा आदि तेन्द्री का

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यञ्च गति
जाति कांई	तेन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनो	३ तीन स्पर्श १ रस २ घ्राण ३
पर्याय कितनी	५ पांच, मन पर्याय टली
प्राण कितना	७ सात, छव तो ऊपर प्रमाणे घ्राण इन्द्री बल प्राण बध्यो

१४ माखी मच्छर टीडी पतंगिया बिच्छु आदि चौइन्द्री का

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यञ्च गति
जाति कांई	चौ इन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	४ च्यार, श्रुत इन्द्री टली
पर्याय कितनी	५ पांच, मन पर्याय टली
प्राण कितना	८ आठ, सात तो ऊपर प्रमाणे एक चक्षु इन्द्री बल प्राण और बध्यो

१५ पंचेन्द्री का

प्रश्न	उत्तर
गति कितनी पावै	४ च्यारूं ही पावै
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	पांचोहीं
पर्याय कितनी	६ छवों ही पावै सन्नी में, और असन्नी में ५ पांच, मन टल्यो,
प्राण कितना पावै	सन्नी में तो १० दशों ही पावै असन्नी में ६ पावै मन टल्यो

१६ नारकी की पृछा

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	नरक गति
जाति कांई	पंचेंद्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	५ पांचों ही
पर्याय कितनी	६ छः
प्राण कितना	१० दशों ही

१७ देवता की पृछा

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	देवगति
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रसकाय

इन्द्रियां कितनी	५ पांचों ही
पर्याय कितनी	५ मन भाषा भेली लेखवनी
प्राण कितना	१० दशों ही

१८ मनुष्य की पृछा असन्नी की

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	मनुष्य गति
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रसकाय
इन्द्रियां कितनी	पांच
पर्याय कितनी	३॥ श्वास लेवे तो उश्वास नहीं
प्राण कितना	७॥ श्वास लेवे तो उश्वास नहीं

१९ सनी मनुष्य की पृछा

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	मनुष्य गति
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	५ पांच
पर्याय कितनी	६ छव
प्राण कितना	१० दश

१ तुमे सन्नी के असन्नी ? सन्नी, किणन्याय ? मन छै ।

२ तुमे सूक्ष्म के बादर ? बादर. किण० ? दीखूं छूं।

३ तुमे त्रस के स्थावर ? त्रस, किण ? हालूं चालूं छूं ।

४ एकेन्द्री सन्नी के असन्नी—असन्नी, किण० मन नहीं ।

५ एकेन्द्री सूक्ष्म के बादर—दोनूं हीं छै किण० एकेन्द्री दोय प्रकार की छै, दीखे ते बादर छै, नहीं दीखे ते सूक्ष्म छै ।

६ एकेन्द्री त्रस के स्थावर—स्थावर छै, हाले चाले नहीं ।

७ एकेन्द्री में इन्द्रियां कितनी—एक स्पर्श इन्द्री (शरीर)

८ पृथ्वीकाय अप्पकाय तेउकाय वायुकाय वनस्पतिकाय ।

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	असन्नी छै मन नहीं
सूक्ष्म के बादर	दोनूं ही प्रकार की छै
त्रस के स्थावर	स्थावर छै

९ वेन्द्री तेन्द्री चौ इन्द्री की पृछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	असन्नी छै मन नहीं
सूक्ष्म के बादर	बादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

१० तिर्यञ्च पंचेन्द्री की पृच्छा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	दोनूं ही छे
सूक्ष्म के बादर	बादर छे
त्रस के स्थावर	त्रस छे

११ असन्नी मनुष्य चौदे स्थानक में नीपजे.

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	असन्नी छे
सूक्ष्म के बादर	बादर छे
त्रस के स्थावर	त्रस छे

१२ सन्नी मनुष्य ते गर्भ में उपजे जिणारी पृच्छा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	स न्नीछे
सूक्ष्म के बादर	बादर छे
त्रस के स्थावर	त्रस छे

१३ नारकी का नेरिया की पृच्छा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी छे
सूक्ष्म के बादर	बादर छे
त्रस के स्थावर	त्रस छे

१४ देवता की पृच्छा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी छे
सूक्ष्म के बादर	बादर छे
त्रस के स्थावर	त्रस छे

१५ गाय भैंस हाथी घोड़ा बलद पन्नी आदि पशु जानवर की पृच्छा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	दोनूं ही प्रकार का छे छमोछम के मन नहीं, गर्भज के मन छे
सूक्ष्म के बादर	बादर छे, नेत्र से देखवा में आवै छे
त्रस के स्थावर	त्रस छे, हाले चाले छे

१ एकेन्द्री में वेद कितना पावे—एक नपुंसक वेद पावे।

२ पृथ्वी पाणी वनस्पति अग्नि वायरो यां पांचां में वेद कितना पावै—१ एक नपुंसक ही छे।

३ बेन्द्री तेन्द्री चौइन्द्री में वेद कितना पावै—एक नपुंसक वेद ही पावे छे।

४ पंचेन्द्री में वेद कितना पावै—सन्नी में तो तीनों ही वेद पावे छे, असन्नी में एक नपुंसक वेद ही छे।

५ मनुष्य में वेद कितना पावै—असन्नी मनुष्य चौदे थानक में उपजे जिणां में तो वेद एक नपुंसक ही पावै छै, सन्नी मनुष्य गर्भ में उपजे जिणां में वेद तीनों ही पावै छै।

६ नारकी में वेद कितना पावै—एक नपुंसक वेद ही पावै छै।

७ जलचर थलचर उरपर भुजपर खेचर या पांच प्रकार का तिर्यञ्चा में वेद कितना पावै—छमोर्छम उपजे ते असन्नी छै जिणां में तो वेद नपुंसक ही पावै छै, अने गर्भ में उपजे ते सन्नी छै जिणां में वेद तीनों ही पावै छै।

८ देवता में वेद कितना पावै—उत्तर भवनपति वाणव्यन्तर जोतिषी, पहिला दूजा देवलोक तांई तो वेद दोय स्त्री १ पुरुष २ पावै छै, और तीजा देवलोक से स्वार्थ सिद्ध तांई वेद एक पुरुष ही छै।

९ चौवीस दण्डक का जीवां के कर्म कितना—उगणीस दण्डक का जीवां में तो कर्म आठ ही पावै छै, अने मनुष्य में सात आठ तथा च्यार पावै छै।

१ धर्म व्रत में के अव्रत में—व्रत में।

२ धर्म आज्ञा मांहि के बाहर—श्री वीतराग देव की आज्ञा मांहि छै ।

३ धर्म हिन्सा में के दया में—दया में ।

४ धर्म मोल मिले के नहीं मिले—नहीं मिले, अमूल्य छै ।

५ देव मोल मिले के नहीं मिले—नहीं मिले, अमूल्य छै ।

६ गुरु मोल लियां मिले के नहीं मिले—नहीं मिले, अमूल्य छै ।

७ साधूजी तपस्या करै ते व्रत में के अव्रत में—व्रत पुष्ट को कारण छै, अधिक निर्जरा धर्म छै ।

८ साधूजी पारणो करै ते व्रत में के अव्रत में—अव्रत में नहीं, किणन्याय ? साधू के कोई प्रकार अव्रत रही नहीं सब सावद्य जोग का त्याग छै । तिणसूं निर्जरा थाय छै तथा व्रत पुष्ट को कारण छै ।

९ श्रावक उपवास आदि तप करै ते व्रत में की अव्रत में—व्रत में ।

१० श्रावक पारणूं करै ते व्रत में की अव्रत में—अव्रत में, किणन्याय ? श्रावक को खाणो पीणो पहरणो ए सर्व अव्रत में छै श्री उववाई तथा सूयगडांग सूत्र में विस्तार कर लिख्या छै ।

११ साधू जी ने सूजतो निर्दोष आहार पाणी दियां कांई होवै व्रत में कि अव्रत में—अशुभ कर्म क्षय थाय तथा पुन्य बंधे छै, १२ मूं व्रत छै।

१२ साधूजी ने असूजतो दोष सहित आहार पाणी दियां कांई होवै तथा व्रत में कि अव्रत में—श्री भगवती सूत्र में कह्यो छै, तथा श्री ठाणांग सूत्र कि तीजे ठाणे मे कह्यो छै अल्प आयु बंधे अकल्याणकारी कर्म बंधे तथा असूजतो दीधो ते व्रत में नहीं, पाप कर्म बंधे छै।

१३ अरिहन्त देव देवता कि मनुष्य—मनुष्य छै।

१४ साधू देवता कि मनुष्य—मनुष्य छै।

१५ देवता साधू नीं वंछा करै कि नहीं करै—करै साधू तो सबका पूजनीक छै।

१६ साधू देवता की वंछा करै कि नहीं करै—नहीं करै

१७ सिद्ध भगवान देवता कि मनुष्य—दोनूं नहीं।

१८ सिद्ध भगवान सूक्ष्म कि बादर—दोनूं नहीं।

१९ सिद्ध भगवान त्रस कि स्थावर—दोनूं नहीं।

२० सिद्ध भगवान सन्नी के असन्नी—दोनूं नहीं।

२१ सिद्ध भगवान पर्याप्ता के अपर्याप्ता—दोनूं नहीं।

॥ इति श्री पाना की चरचा ॥

---

१ असंयति अव्रती ने दियां कांई होवे—श्री भगवती सूत्र के आठ में शतक छठे उदेशे कह्यो असंयति अव्रती ने सूजतो असूजतो सचित अचित च्यार प्रकार को आहार दियां एकान्त पाप होय निर्जरा नहीं होय।

२ असंयति अव्रती जीवां को जीवणो वांछणो के मरणो वांछणो—असंजति को जीवणो वांछणो नहीं, मरणो वांछणो नहीं, संसार समुद्र से तिरणो वांछणो ते श्रीवीतरागदेव को धर्म छै।

३ कसाई जीवां ने मारे तिण वेल्यां साधु कसाई ने उपदेश देवे के नहीं देवे—अवसर देखे तो उपदेश देवे हिन्सा का खोटा फल कहै।

प्रश्न—जीवां को जीवणो वांछ कर उपदेश देवे के कसाई नें तारवा निमित्त उपदेश देवे।

उत्तर—कसाई नें तारवा निमित्त उपदेश देवै ते वीतराग को धर्म छै।

४ कोई वाड़ा में पशु जानवर दुखिया छै अने साधु जिण रासते जाय रह्या छै तो जीवां की अनुकम्पा आणी छोड़े के नहीं छोड़े—नहीं छोड़े,

किणन्याय, उ० श्रीनिशीथ सूत्र के १२ वारमें उद्देशे में कह्यो छै अनुकम्पा करी त्रस जीव बांधे बन्धावे अनुमोदै तो चौमासी प्रायश्चित आवै, तथा साधु संसारी जीवां को सार संभार करै नहीं साधु तो संसारी कर्त्तव्य त्याग दिया ।



॥ अथ तेरा द्वार ॥

॥ प्रथम मूल द्वार ॥

१ मूल १ दृष्टान्त २ कुण ३ आत्मा ४ जीव ५ अरूपी ६ निरवद्य ७ भाव ८ द्रव्य गुण पर्याय ९ द्रव्यादिक १० आज्ञा ११ गिनय १२ तलाव १३ ए तेराद्वार जाणवा, प्रथम मूलद्वार कहै छै—जीव ते चेतना लक्षण अजीव ते अचेतना लक्षण, पुन्य ते शुभ कर्म, पाप ते अशुभ कर्म, कर्म ग्रहै ते आस्रव, कर्म रोकै ते संवर, देशथकी कर्म तोड़ी देशथी जीव उज्वल थाय ते निर्जरा, जीव सङ्गाते शुभाशुभ कर्म बन्ध्या ते बन्ध, समस्त कर्मों से मुकावे ते मोक्ष।

इति प्रथम द्वार सम्पूर्णम्।

॥ दूसरो दृष्टान्त द्वार ॥

जीव चेतन का दोय भेद—

एक सिद्ध, दूजो संसारी, सिद्ध कर्मां रहित छै,

संसारी कर्म सहित छै, तिणरा अनेक भेद छै, सूक्ष्म अने बादर, त्रस ने स्थावर, सन्नी अने असन्नी तीन बेद, च्यार गति, पांच जाति, छव काय, चौदे भेद जीवनां, चौबीस दण्डक, इत्यादिक अनेक भेद जाणवा, चेतन गुण ओलखवानें सोनारो दृष्टान्त कहे छै, जिम सोनारो गहणों भांजी भांजी नें और और आकारे घड़ावे तो आकार नो बिनाश थाय पण सोनारो विनाश नहीं, तैसे कर्मों का उदय थी जीव की पर्याय पलटै पण मूल चेतन गुण को विनाश नहीं।

अजीव अचेतन तिणरा पांच भेद—

धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकाशास्ति, काल, पुद्गलास्ति तिणमें च्यारां की पर्याय पलटै नहीं एक पुद्गलास्ति की पर्याय पलटे ते ओलखवानें सोनारो दृष्टान्त कहे छै—जिम कोई सोनारो गहणों भांजी भांजी और और आकारे घड़ावे तो आकारनों विनाश होय, सोनारो विनाश नहीं, ज्यूं पुद्गल की पर्याय पलटै पण पुद्गल गुण को विनाश नहीं।

पुन्य ते शुभ कर्म पाप ते अशुभ कर्म ते पुन्य पाप ओलखवानें पथ्य अपथ्य आहार नो दृष्टान्त कहे छै, कदेक जीव के पथ्य आहार घटै और अपथ्य

आहार बधे, तो जीव के निरोगपणों घटे अने सरोगपणों बधे कदे जीव रै अपथ्य आहार घटे पथ्य बधे तब जीव रै सरोगपणो घटे अने निरोग पणो बधे पथ्य अपथ्य दोनूं घट जाय तो प्राणी मरण पामें, ज्यों जीव के पुन्य घटे अरु पाप बधे तो सुख घटै अने दुख बधे, कदे जीव रै पाप घटे अरु पुन्य बधे तो सुख बधे अने दुख घटे पुन्य पाप दोनूं चय होय तो जीव मोच पामें, कर्म ग्रह ते आस्रव ते ओलखवानें तीन दृष्टान्त पांच कहण कहै छै।

१ प्रथम कहण (कथन)

१ तलाव रै नालो ज्यों जीव रे आस्रव

२ हवेली के बारणों ज्यों जीव रे आस्रव

३ नाव के छिद्र ज्यों जीव रे आस्रव

२ दूजो कहण (कथन)

१ तलाव अने नालो एक ज्यूं जीव आस्रव एक

२ हवेली बारणो एक ज्यों जीव आस्रव एक

३ नाव अने छिद्र एक ज्यूं जीव आस्रव एक

३ कर्म आवे ते आस्रव ते ओलखवानें तीजो कहण कहै छै।

१ पाणी आवै ते नालो ज्यों कर्म आवे ते आस्रव

२ मनुष्य आवे ते बारणों ज्यों कर्म आवै ते आस्रव

३ पाणी आवे ते छिद्र ज्यों कर्म आवे ते आस्रव

४ इम कह्यां थकां कोई कर्म अने आस्रव एक सरधे तेहनें दोय सरधावा ने चौथो कहण कहै छै।

१ पाणी अने नालो दोय ज्यों कर्म अने आस्रव दोय।

२ मनुष्य अने बारणों दोय ज्यों कर्म अने आस्रव दोय।

३ पाणी छिद्र दोय ज्यों कर्म अने आस्रव दोय।

५ विशेष ओलखवा ने पांचमूं कहण कहै छै।

१ पाणी आवे ते नालो पण पाणी नालो नहीं, ज्यों कर्म आवे ते आस्रव पण कर्म आस्रव नहीं।

२ मनुष्य आवे ते बारणों पण मनुष्य बारणों नहीं, ज्यों कर्म आवे ते आस्रव पण कर्म आस्रव नहीं।

३ पाणी आवे ते छिद्र पण पाणी छिद्र नहीं ज्यों कर्म आवे ते आस्रव पण कर्म आस्रव नहीं।

कर्म रोकै ते संबर ते संबर ने ओलखवा ने तीन दृष्टान्त कहे छै।

१ तलाव रो नालो रूंधे ज्यों जीव रे आस्रव रूंधे ते संबर।

२ हवेली रो बारणों रूंधे ज्यों जीव रे आस्रव रूंधे ते संवर ।

३ नाव रे छिद्र रूंधे ज्यूं जीव रे आस्रव रूंधे ते संवर ।

देशथकी कर्म तोड़ी जीव देश थी उज्वल थाय ते निर्जरा ओलखवा ने तीन दृष्टान्त कहै छै ।

१ तालाव रो पाणी मोरियादिक करी ने काढ़े ज्यों जीव भला भाव प्रवर्तावी ने कर्म रूपियो पाणी काढ़े ते निर्जरा ।

२ हवेली रो कचरो पूंजी ने काढ़े ज्यों भला भाव प्रवर्तावी ने जीव कर्म रूपियो कचरो काढ़े ते निर्जरा ।

३ नाव को पाणी उलीचो २ ने काढ़े ज्यों जीव भला भाव प्रवर्तावी ने कर्म रूपियो पाणी काढ़े ते निर्जरा ।

जीव संघाते कर्म बंधिया हुया ते बंध, ते ओलखवा ने छव बोल कहै छै ।

१ पहिले बोले कह्यो स्वामीजी जीव अने कर्म नीं आदि छै ए बात मिले अथवा न मिले ? गुरू

बोल्या न मिले । प्रश्न—क्यूं न मिले गुरू बोल्या ए उपनो नहीं ।

२ दूजे बोले कहो स्वामीजी पहली जीव और पाछे कर्म ए बात मिले ? गुरू बोल्या नहीं मिले । प्रश्न—क्यों न मिले, उ०—कर्म बिना जीव रह्यो किहां मोक्ष गयो पाछो आवे नहीं यों न मिले ।

३ तीजे बोले कहो स्वामीजी पहली कर्म अने पछे । जीव ए मिले ? गुरू कहे नहीं मिले । प्रश्न—क्यों न मिले, गुरू कहे कर्म कियां बिना हुवे नहीं, तो जीव बिना कर्म कुण किया ।

४ चौथे बोले कहो स्वामीजी जीव कर्म एक साथ उपना ए मिले ? गुरू कहे न मिले । प्र०—किण न्याय ? उ०—जीव, कर्म यां दोयां ने उपजावण वालो कुण ।

५ पांचमें बोले जीव कर्म रहित छे ए बात मिले? गुरू कहे न मिले । प्रश्न—किणन्याय? उ०—ए जीव कर्म रहित होवे तो करणी करवा री खप (चूंप) कुण करे मुक्ति गयो पाछो आवे नहीं ।

६ छठे बोले कहो स्वामीजी जीव अने कर्म नों मिलाप किण विधि थाय छे गुरू कहे अपच्छान पूर्व पणे अनादि काल से जीव कर्म रो मिलाप चल्यो जाय छे

तिण बन्ध रा च्यार भेद छै।

प्रकृति बन्ध कर्म स्वभाव रे न्याय १ स्थिति बन्ध काल व्यवहार रे न्याय २ अनुभाग बंध रस बिपाक रे न्याय ३ प्रदेश बन्ध जीव कर्म लोली भूत रे न्याय ४ ते ओलखवाने तीन दृष्टान्त कहै छै।

१ तेल अने तिल लोली भूत ज्यों जीव कर्म लोली भूत।

२ घृत दूध लोली भूत ज्यों जीव कर्म लोली भूत।

३ धातू माटी लोली भूत ज्यों जीव कर्म लोली भूत

समस्त कर्मा से मूकावे ते मोक्ष ते ओलखवाने तीन दृष्टांत कहै छै।

१ घाणीयांदिक नूं उपाय करी तेल खल रहित होवे ज्यों तप संजमादि करी जीव कर्म रहित होवे ते मोक्ष।

२ भेरणादिक को उपाय करी घृत छाछ रहित होवे ज्यों तप संजम करी जीव कर्म रहित होवे ते मोक्ष।

३ अग्नियांदिकनूं उपायकरी धातू माटी अलग होवे ज्यों तप संजमकरी जीव कर्म रहित होवे ते मोक्ष।

॥ तीजो कुण द्वार कहे छै ॥

जीव चेतन छव द्रव्यां में कोण नव पदार्थों में कोण ? छव द्रव्यां में तो एक जीव नव पदार्थों में पांच। जीव १ आस्रव २ संवर ३ निर्जरा ४ मोक्ष ५।

अजीव अचेतन छवमें कोण नवमें कोण—छवमें ५ नवमें ४ छवद्रव्यां में तो धर्मास्ति १ अधर्मास्ति २ आकाशास्ति ३ काल ४ पुद्गलास्ति ५, नव पदार्थों में अजीव १ पुन्य २ पाप ३ बंध ४

पुन्यते शुभ कर्म छवमें कोण नवमें कोण—छव में एक पुद्गल, नवमें तीन, अजीव १ पुन्य २ बन्ध ३

पापते अशुभ कर्म छवमें कोण नवमें कोण—छव में एक पुद्गल, नव में तीन, अजीव १ पाप २ बन्ध ३

कर्म ग्रह ते आस्रव छव में कोण नव में कोण—छवमें जीव, नवमें जीव १ आस्रव २

कर्मरोके ते संवर छवमें कोण नवमें कोण—छवमें जीव, नवमें जीव १ संवर २

देशथी कर्म तोड़ी देशथी जीव उज्वल थाय ते निर्जरा छवमें कोण नवमें कोण—छवमें जीव, नवमें जीव १ निर्जरा २।

बन्ध छवमें कोण नवमें कोण—छवमें पुद्गल नवमें अजीव पुन्य २ पाप ३ बन्ध ४

मोक्ष छवमें कोण नवमें कोण—छवमें जीव नवमें जीव १ मोक्ष २

चाले ते कोण चालवानों सहाय किणरो—चाले ते जीव पुद्गल, अनें सहाय धर्मास्तिकायनो

थिर रहै ते कोण थिर रहवानो सहाय किणरो—थिर रहै जीव पुद्गल, सहाय अधर्मास्तिकाय नो

बसे ते कोण भाजन किणरो—बसे तो जीव पुद्गल भाजन आकाशास्तिकायनो

बरतै ते कोण बर्तै किण ऊपर—बरतै तो काल अने बरतै जीव अजीव ऊपर

भोगवे ते कोण अने भोगमें आवे ते कोण—भोगवे ते जीव, भोग में आवे ते पुद्गल, दोय प्रकारे एक तो शब्दादिक पणै दूजो कर्म पणै

कर्मां रो करता कोण कीधा होवे ते कोण करता तो जीव कीधा हुवा ते कर्म

कर्मां रो उपाय ते कोण उपना ते कोण—उपाय तो जीव उपना ते कर्म

कर्मां ने लगावे ते कोण लाग्या हुवा ते कोण—लगावे ते जीव लागे ते कर्म

कर्मां ने रोके ते कोण रुक्या ते कोण—रोके तो जीव, रुक्या ते कर्म

कर्मां ने तोड़े ते कोण तूट्या ते कोण तोड़े ते जीव तूट्या ते कर्म

कर्मां ने बांधे ते कोण बंध्या ते कोण—बांधे ते जीव बंधिया ते कर्म।

कर्मां ने खपावे ते कोण अने क्षयथया ते कोण—खपावे ते जीव क्षयथया ते कर्म

* इति तृतीय द्वारम् *

॥ अथ चौथो आत्म द्वार कहे छे ॥

जीव चेतन ते आत्मा छे अनेरो नहीं।

अजीव अचेतन आत्मा नहीं अनेरो छे।

आत्मारे काम आवे छे पण आत्मा नहीं, कोण कोण काम आवे ते कहे छे—

धर्मास्तिकाय अवलम्ब ने चाले छे

अधर्मास्तिकाय अवलम्ब ने स्थिर रहै छे।

आकाशास्तिकाय अवलम्ब ने वसे छे।

काल अवलम्ब ने कार्य करै छे।

पुद्गल खाय छे, पीवे छे पहरै छे, ओढ़े छें इत्यादि अनेक प्रकारे आत्मारे काम आवे छे पण आत्मा नहीं।

पुन्यते शुभकर्म आत्मारै शुभ पणे उदय आवे छे पण आतमां नहीं।

पापते अशुभ कर्म आत्मारै अशुभ पणे उदय आवै छे पण आत्मा नहीं।

शुभाशुभ कर्म ग्रहै ते आस्रव आत्मा छे अनेरो नहीं।

कर्म रोकै ते संवर आत्मा छे अनेरो नहीं।

देश थकी कर्म तोड़ी देश थको जीव उज्वल थायते निर्जरा आत्मां छे अनेरो नहीं।

जीव संघाते कर्म बंधाणा ते बंध आत्मा नहीं अनेरो छे आत्मांने बांध रखी छे पण आत्मा नहीं

समस्त कर्मां से मूकावे ते मोक्ष आत्मा छे अनेरो नहीं।

॥ अथ पांचमूं जोवद्वार कहै छै ॥

जीव ते चेतन तिण जीवने जीव कहिजे, जीवने आस्रव कहिजे, जीवने संवर कहिजे जीवने निर्जरा कहिजे, जीवने मोक्ष कहिजे।

अजीव अचेतनने अजीव कहिजे, पुन्य कहिजे, पाप कहिजे, बन्ध कहिजे।

पुन्यते शुभ कर्म तेहनें पुन्य कहिजे, तेहनें अजीव कहिजे, तेहने बन्ध कहिजे।

पापते अशुभ कर्म तेहने पाप कहिजे, अजीव। कहिजे, बन्ध कहिजे।

कर्म ग्रहै ते आस्रव कहिजे, तेहने जीव कहिजे।

देशथकी कर्मतोड़ी देशथकी जीव उज्वल थाय तेहनें निर्जरा कहिजे, जीव कहिजे।

जीवसंघाते कर्म बंधाणा ते बन्ध कहिजे, अजीव कहिजे।

समस्त कर्म मूंकावें ते मोक्ष कहिजे, जीव कहिजे हिवे एहनों ओलखणा न्याय सहित कहै छै।

जीवने जीव किणन्याय कहिजे, गये काल जीव

छो, वर्त्तमान काल जीव छै, आगामी काल जीव को जीव रहसी इणन्याय।

अजीवने अजीव किणन्याय। कहिजे, गयेकाल अजीव छो वर्त्तमान काल अजीव छै, आगामी काले अजीव को अजीव रहसी।

पुन्य ने अजीव किणन्याय कहिजे, पुन्य ते शुभ कर्म छै, कर्म ते पुद्गल छै, पुद्गल ते अजीव छै।

पाप ने अजीव किणन्याय कहिजे, पाप ते अशुभ कर्म छै, कर्म ते पुद्गल छै, पुद्गल ते अजीव छै।

आस्रव ने जीव किणन्याय कहिजे, आस्रव तो कर्म ग्रहै छै, कर्मां रो करता छै, कर्मां रो उपाय छै उपाय ते जीव हो छै।

१ मिथ्यात्व आस्रव ने जीव किणन्याय कहिजे बिपरीत सरधान ते मिथ्यात्व आस्रव छै ते जीवरा परिणाम छै।

२ अव्रत आस्रव ने जीव किणन्याय कहिजे, अत्याग भाव ते जीवरी आशा वांछा अव्रत आस्रव छै ते जीवरा परिणाम छै।

३ प्रमाद आस्रवने जीव किणन्याय कहिजे, उणउत्साह पणो ते प्रमाद आस्रव छै ते जीवरा परिणाम छै।

४ कषाय आस्रव ने जीव किणन्याय कहिजे, कषाय आत्मा कही छै, कषाय ते जीवरा परिणाम छै, ते जीव छै।

जोग आस्रव ने जीव किणन्याय कहिजे जोग आत्मा कही छै जोग ते जीवरा परिणाम छै तीनूं ही जोगांरों व्यापार जीवरो छै।

संवर ने जीव किणन्याय कहिजे सामाई पच्चखाण संयम, संवर, विवेक, विउसग, ए छज्जं आत्मा कही छै, वलि चारित्र आत्मा कही छै, चारित्र जीवरा परिणाम छै इणन्याय।

निजरा ने जीव किणन्याय कहिजे, भला भाव प्रवर्तावीने जीव देशथी उज्वलो हुवै ते जीव छै।

बंध ने अजीव किणन्याय कहिजे, बंध ते शुभ अशुभ कर्म छै, कर्म ते पुद्गल ते अजीव छै।

मोक्षने जीव किणन्याय कहिजे ? समस्त कर्म मूकावे ते मोक्ष कहिजे निर्वाण कहिजे सिद्ध भग-

वान कहिजे सिद्ध भगवान ते जीव छै इणन्याय मोक्ष ने जीव कहिजे ।

॥ इति पञ्चम द्वारम् ॥

॥ अथ छट्ठो रूपी अरूपी द्वार कहै छै ॥

जीव अरूपी छै, अजीव रूपी अरूपी दोनूं छै, पुन्य रूपी छै, पाप रूपी छै, आस्रव अरूपी छै, संबर अरूपी छै, निर्जरा अरूपी छै, बंध रूपी छै, मोक्ष अरूपी छै हिवे एहनो ओलखना कहै छै ।

जीव ने अरूपी किणन्याय कहिजे ? छवद्रव्य में जीवने अरूपी कह्यो छै पांच वर्ण पावे नहीं । अजीवन ने अरूपी रूपी दोनूं किणन्याय कहिजे ? अजीव का पांच भेद धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकाशास्ति काल, पुद्गल, इणमें च्यार तो अरूपी छै, यामें पांच वर्ण पावे नहीं एक पुद्गल रूपी छै ।

पुन्यने रूपी किणन्याय कहिजे ? पुन्य तो शुभ कर्म छै; कर्म तो पुद्गल छै, पुद्गल ते रूपी छै ।

पापने रूपी किणन्याय कहिजे ? पाप ते अशुभ कर्म छै, कर्म ते पुद्गल छै, पुद्गल ते रूपी छै ।

आस्रव ने अरूपी किणन्याय कहिजे ? कृष्णादिक छऊं भाव लेश्या अरूपी छै ।

मिथ्यात्व आस्रव ने अरूपी किणन्याय कहिजे ? मिथ्या दृष्टि अरूपी कही छै।

अव्रत आस्रव ने अरूपी किणन्याय कहिजे ? अत्याग भाव परिणाम जीवरा अरूपी कह्या छै।

प्रमाद आस्रव ने अरूपी किणन्याय कहिजे। ? अणउछाहपणों ते प्रमाद आस्रव छै, जीवरा परिणाम छै, ते जीव छै, जीवते अरूपी छै।

कषाय आस्रव ने अरूपी किणन्याय कहिजे ? श्रीठाणांग दश में ठाणें जीव परिणामीरा दश भेदां में कषाय परिणामी कह्यो छै, अने ज्ञान दर्शन चारित्र परिणामी कह्या छै, ए जीव छै तिम कषाय परिणामी जीव छै, कषायपणें परिणमें ते कषाय परिणामी आस्रव छै, जीव छै, जीवते अरूपी छै।

जोग आस्रव ने अरूपी किणन्याय कहिजे ? तीनों ही जोगांरो उठान कर्म बल वीर्य पुरुषाकार पराक्रम अरूपी छै।

संवर ने अरूपी किणन्याय कहिजे ? अठारे पाप ठाणारो बिरमण अरूपी छै।

निर्जरा ने अरूपी किणन्याय कहिजे ? कर्म तोड़वारो बल वीर्य पुरुषाकार पराक्रम अरूपी छै।

बंधने रूपी किणन्याय कहिजे ? बंधते शुभा

शुभ कर्म छै, कर्म ते पुद्गल छै, पुद्गल ते रूपी छै ।

मोक्ष ने अरूपी किणन्याय कहिजे ? समस्त कर्मां ने मूकावे ते जीव छै तेहने मोक्ष कहिजे, निर्वाण कहिजे, सिद्ध भगवान कहिजे, सिद्ध भगवान ते अरूपी छै ।

॥ इति छठो द्वारम् ॥

॥ अथ सातमूं सावद्य निरवद्य द्वार ॥

१ जीव तो सावद्य निर्वद्य दोनूं छै । अजीव सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं । पुन्य पाप सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं, अजीव छै । आस्रव का पांच भेद, मिथ्यात्व आस्रव, अव्रत आस्रव, प्रमाद आस्रव, कषाय आस्रव, ए च्यार तो सावद्य छै । अशुभ जोग सावद्य छै शुभ जोग निर्वद्य छै । इणन्याये आस्रव सावद्य निर्वद्य दोनूं छै । संवर निर्वद्य छै । निर्जरा निर्वद्य छै । बंध सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं अजीव छै । मोक्ष निर्वद्य छै ।

॥ इति सप्तम् द्वारम् ॥



॥ अथ आठमूं भाव द्वार कहे छे ॥



भाव ५ पांच—उदय भाव १, उपशम भाव २, क्षायक भाव ३, क्षयोपशम भाव ४, परिणामिक भाव ५

उदय तो आठ कर्मनो अने उदय निपन्नरा दोय भेद—जीव उदय निपन्न १, दूजो जीवरे अजीव उदय निपन्न २, तिणमें जीव उदय निपन्नरा ३३ तेतीस भेद ते कहे छे, च्यार गति ४, छव काय १०, छव लेश्या १६, च्यार कषाय २०, तीन वेद एवं २३ मिथ्याती २४, अव्रती २५, असन्नी २६, अनाणी २७, आहारता २८ संसारता २९, असिद्ध ३०, अकेवली ३१, छद्मस्थ ३२, संजोगी ३३ ।

हिवे जीवरे अजीव उदय निपन्नरा ३० तीस भेद ते कहे छे पांच शरीर ५, पांच शरीर रे प्रयोगे परिणम्यां द्रव्य, ५ पांच वर्ण, २ दोय गंध, ५ पांच रस, ८ आठ स्पर्श एवं तीस ।

उपशमरा दोय भेद—एक तो उपशम १ दूजो उपशम निपन्न भाव, उपशम तो एक मोह कर्मरो होय,

उपशम निपन्नरा दोय भेद, उपशम समकित १, उपशम चारित्र २ ।

क्षायकरा दोय भेद– एक तो क्षायक दूजो क्षायक निपन्न क्षायक तो आठ कर्मकोक्षय अने क्षायक निपन्नरा १३ तेरा भेद, ते कहै छै—

केवल ज्ञान १, केवल दर्शन २, आत्मिक सुख ३, क्षायक सम्यक्त्व ४, क्षायक चारित्र ५, अटल अवगाहना ६, अमुर्त्तिक पणो ७, अगुरु लघु पणो ८, दान लब्धि १२, लाभ लब्धि १०, भोग लब्धि ११. उपभोग लब्धि १२, वीर्य लब्धि १३

क्षयोपशमरा दोय भेद, एक तो क्षयोपशम १, दूजो क्षयोपशम निपन्नभाव २, क्षयोपशम तो च्यार कर्मको ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीय, मोहनीय अन्तराय, अने क्षयोपशम निपन्न भावरा ३२ बत्तीस बोल, ते कहै छै—

ज्ञानावरणीय कर्मरो क्षयोपशम होय तो ८ आठ बोल पामैं केवल वरजी ४ च्यार ज्ञान, ३ तीन अज्ञान, १ भणवो गुणवो ।

दर्शनावरणीय कर्मरो क्षयोपशम होय तो आठ बोल पामैं, ५ पांच इन्द्री, ३ तीन दर्शन केवल वरजी ।

मोहनीय कर्मरो क्षयोपशम होय तो आठ बोल पामें. ४ च्यार चारित्र, एक देश व्रत, ३ तीन दृष्टि

अन्तराय कर्मरो क्षयोपशम होवे तो आठ बोल पामें ५ पांच लब्धि, तीन वीर्य ।

परिणामिकरा दोय भेद सादिया परिणामी १, अनादिया, परिणामी २, अनादिया परिणामिकरा १० दश भेद तिणमें ६ छव द्रव्य धर्मास्ति आदि, सातमूं लोक, ८ आठमूं अलोक, ९ नवमूं भवी, १० दशमूं अभवी । अने सादिया परिणामीरा अनेक भेद जाणवा । गाम नगर गड़ा पहाड़ पर्वत पताल समुद्र द्वीप भुवन विमान इत्यादि अनेक भेद आदि सहित परिणामिकरा जाणवा—

जीव आश्री जीव परिणामिकरा १० दश भेद, ते कहे छे—

गति परिणामी १, इन्द्रिय परिणामी २, कषाय परिणामी ३, लेश्या परिणामी ४, जोग परिणामी ५, उपयोग परिणामी ६, ज्ञान परिणामी ७, दर्शन परिणामी ८, चारित्र परिणामी ९, वेद परिणामी दश १०

हिवे जीव आश्री अजीव परिणामीरा १० दश भेद कहे छे—

बन्धन परिणामी १, गई परिणामी २, संठाण परिणामी ३, भेद परिणामी ४ वर्ण परिणामी ५ गन्ध परिणामी ६ रस परिणामी ७ स्पर्श परिणामी ८ अगुरु लघू परिणामी ६ शब्द परिणामी १० ।

जीव में भाव पावे ५ पांचूंही ।

अजीव पुन्य पाप बन्ध में भाव एक परिणामिक ।

आस्रव भाव दोय—उदय, परिणामिक

संबर भाव ४ च्यार, उदय वरजी ने

निर्जरा भाव ३ तीन, क्षायक, क्षयोपशम परिणामिक ।

मोक्ष भाव २ दोय क्षायक, परिणामिक ।

॥ इति अष्टम द्वारम् ॥

॥ अथ नवमूं द्रव्य गुण पर्याय द्वार ॥

द्रव्य तो जीव असंख्य प्रदेशी, गुण आठ, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, वीर्य, उपयोग, सुख. दुख । एक एक गुणांरी अनन्त अनन्त पर्याय ।

ज्ञाने करी अनन्ता पदार्थ जाणे तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

दर्शने करी अनन्ता पदार्थ सरधै तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

चारित्र थी अनन्त कर्म प्रदेश रोकै तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

तपकरी अनन्त कर्म प्रदेश तोड़ै तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

वीर्यनी अनन्ती शक्ति तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

उपयोग थी अनन्त पदार्थ जाणै देखै तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

सुख अनन्त पुन्य प्रदेश सूं अनन्त पुद्गलिक सुख वेदै तिणसूं अनन्ती पर्याय । बलि अनन्त कर्म प्रदेश अलग हुयां थी अनन्त आत्म सुख प्रगटे तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

दुख अनन्त पाप प्रदेश मूं अनन्त दुख वेदै तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

अजीव ना पांच भेद—धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकाशास्ति, काल, पुद्गलास्ति यांको द्रव्य गुण पर्याय कहै छै—

द्रव्य तो एक धर्मास्ति, गुण चालवानो साझ

पर्याय अनन्त पदार्थने चालवानो सहाय तिणसूं अनन्त पर्याय।

द्रव्य तो एक अधर्मास्ति, गुण थिर रहवा नो सहाय, पर्याय अनन्ता पदार्थ नें थिर रहवानों साझ तिणसूं अनन्त पर्याय।

द्रव्य तो काल, गुण वर्त्तमान, पर्याय अनन्ता पदार्थां पर बरते तिणसूं अनन्त पर्याय।

द्रव्य तो एक पुद्गल, गुण अनन्त गलै अनन्त मिलै तिणसूं अनन्त पर्याय।

द्रव्य तो पुन्य, गुण जीव के शुभ पणै उदय आवै पर्याय अनन्त प्रदेश शुभ पणै उदय आवे सुख करे तिणसूं अनन्त पर्याय।

द्रव्य तो पाप, गुण जीवरे अनन्त प्रदेश अशुभ पणै उदय आवे, अनन्त दुख करै तिणसूं अनन्त पर्याय।

द्रव्य तो आस्रव गुण कर्म ग्रहवा नो पर्याय अनन्ता कर्म प्रदेश ग्रहै तिणसूं अनन्ती पर्याय।

द्रव्य तो संवर गुण कर्म रोकवारो, पर्याय अनन्ता कर्म प्रदेश रोकै तिणसूं अनन्ती पर्याय।

द्रव्य तो निर्जरा गुण देश थकी कर्म प्रदेश तोड़ी देश थी जीव उजलो थाय, पर्याय अनन्त कर्म प्रदेश तोड़े तिण सूं अनन्ती पर्याय ।

द्रव्य तो बन्ध, गुण जीव ने बांध राखवा रो, पर्याय अनन्ता कर्म प्रदेश करी बांधे तिण सूं अनन्ती पर्याय ।

द्रव्य तो मोक्ष, गुण आत्मिक सुख, पर्याय अनन्त कर्म प्रदेश क्षय हुयां अनन्त सुख प्रगटे तिण सूं अनन्ती पर्याय ।

॥ इति नवम द्वारम् ॥

॥ अथ दशमूं द्रव्यादिकरी ओलखान द्वार ॥

जीव ने पांचां बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थी लोक प्रमाणे, काल थकी आदि अन्त रहित भाव थी अरूपी, गुण थी चेतन गुण ।

अजीव ने पांचां बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थी लोकालोक

प्रमाणे काल थकी आदि अन्त रहित, भाव थी रूपी अरूपी दोनूं गुण थकी अचेतन गुण।

पुन्य ने पांचां बोलां करी ओलखीजे।

द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थकी जीवां कने, काल थकी आदि अन्त सहित, भाव थकी रूपी गुण थकी जीव के शुभ पणे उदय आवे।

पाप ने पांचां बोलां करी ओलखीजे।

द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थी जीवां कने काल थकी आदि अन्त सहित, भाव थकी रूपी, गुण थकी जीव रे अशुभ पणे उदय आवे।

आस्रव ने पांचां बोलां करी ओलखीजे।

द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थी जीवा कने, काल थकी रा ३ तीन भेद--एकीक आस्रव री आदि नहीं अन्त नहीं ते अभव्य आसरी, एकीक आस्रवरी आदि नहीं पण अन्त छे ते भव्य आसरी, एकीक आस्रव री आदि छे अन्त छे ते पड़वाई आसरी, तेहनी स्थिति जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्टी देश ऊणी अर्ध पुद्गल परावर्तन, भाव थकी अरूपी, गुण थकी कर्म ग्रहवा नों गुण।

संवर ने पांचां बोलां करी ओलखीजे।

द्रव्य थकी तो असंख्याता द्रव्य, खेत्र थी जीवां

कने काल थकी आदि अन्त रहित, भाव थी अरूपी, गुण थकी कर्म रोकवा रो गुण।

निर्जरा ने पांचां बोलां करी ओलखीजे।

द्रव्य थकी अकाम निर्जरा का तो अनन्ता द्रव्य, सकाम निर्जरा का असंख्याता द्रव्य, खेत्र थी जीवां कने, काल थकी आदि अन्त रहित भाव थकी अरूपी, गुण थकी कर्म तोड़वा रो गुण।

बन्ध ने पांचां बोलां करी ओलखीजे।

द्रव्य थी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थकी जीवां कने, काल थकी आदि अन्त सहित, भाव थकी रूपी, गुण थकी कर्म बांध रखवा रो।

मोक्ष ने पांचां बोलां करी ओलखीजे।

द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थकी जीवां कने, काल थकी एकेक सिद्धांरी आदि अन्त नहीं, एकेक सिद्धांरी आदि छे पण अन्त नहीं, भाव थकी अरूपी, गुण थकी आत्मिक सुख।

धर्मास्तिकाय ने पांचां बोलां करी ओलखीजे।

द्रव्य थकी एक द्रव्य, खेत्र थी लोक प्रमाणे, काल थकी आदि अन्त रहित, भाव थकी अरूपी, गुण थकी जीव पुद्गल ने चालवा रो साझ।

अधर्मास्तिकाय ने पांचां बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थकी एक द्रव्य खेत्र थी लोक प्रमाणे, काल थकी आदि अन्त रहित, भाव थकी अरूपी, गुण थकी जीव पुद्गल ने थिर रहवा नों सहाय ।

आकाशास्तिकाय ने पांचां बोला करी ओलखीजे ।

द्रव्य थकी एक द्रव्य, खेत्र थकी लोक अलोक प्रमाणे काल थकी आदि अन्त रहित, भाव थकी अरूपी, गुण थकी भाजन गुण ।

काल ने पांचां बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य खेत्र थी अढाई द्वीप प्रमाणे काल थकी आदि अन्त रहित भाव थकी अरूपी, गुण थकी वर्त्तमान गुण ।

पुद्गलास्तिकाय ने पांचां बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थकी लोक प्रमाणे, काल थकी आदि अन्त सहित, भाव थकी रूपी, गुण थकी गलै मलै ।

॥ इति दशम द्वारम् ॥

॥ अथ एकादशम् आज्ञा द्वार कहे छे ॥

जीव आज्ञा मांहि बाहर दोनू छे, ते किण-न्याय ? सावद्य कर्त्तव्य आसरी आज्ञा बाहर छे

अने निर्वद्य कर्तव्य आसरी आज्ञा मांहि छै।

अजीव आज्ञा मांहि कि बाहर ? अजीव आज्ञा मांहि बाहर दोनूं नहीं, ते किणन्याय ? अजीव छै, अचेतन छै, जड़ छै।

पुन्य, पाप, बन्ध, ए तीनूं आज्ञा मांहि बाहर नहीं, अजीव छै।

आस्रव आज्ञा मांहि बाहर दोनूं छै, किणन्याय ? आस्रवना पांच भेद—मिथ्यात १, अव्रत २. प्रमाद ३, कषाय ए च्यार तो आज्ञा बाहर छै। जोग आस्रव का दोय भेद—शुभ जोग वर्तंतां निर्जरा हुवै तिण अपेक्षाय आज्ञा मांहि छै। अशुभ जोग आज्ञा बाहर छै।

संबर आज्ञा मांहि छै, ते किणन्याय ? संबर थी कर्म रूके तें श्री वीतराग की आज्ञा मांहि छै।

निर्जरा आज्ञा मांहि छै, ते किणन्याय ? कर्म तोड़वारा उपाय श्री वीतराग की आज्ञा में छै।

मोक्ष आज्ञा मांहि छै, ते किणन्याय ? सकल कर्म खपावरी श्री वीतराग की आज्ञा छै।

॥ इति एकादशम् द्वारम् ॥

———

॥ अथ बारमूं ज्ञिनय द्वार कहे छै ॥

जीव ने जीव जाणवो। अजीव ने अजीव जाणवो। पुन्य ने पुन्य जाणवो। पाप ने पाप जाणवो। आस्रवने आस्रव जाणवो। संवर ने संवर जाणवो। निर्जरा ने निर्जरा जाणवो। बन्ध ने बन्ध जाणवो। मोक्ष ने मोक्ष जाणवो। एह नव पदार्थ जाणवा योग कह्या छै। इणां में आदरवा जोग ३ तीन, संवर १, निर्जरा २, मोक्ष ३, बाकी ६ छांडवा जोग छै।

जीव ने छांडवा जोग किण न्याय कहिजे? आपरा जीव को भाजन करो किणी जीव ऊपर ममत्व भाव न करवो।

अजीव ने छांडवा जोग किणन्याय कहिजे? किणी अजीव पर ममत्व भाव न करवो।

पुन्य पाप छांडवा जोग किणन्याय कहिजे? शुभ अशुभ कर्म छांडवा जोग छै।

आस्रव ने छांडवा जोग किण न्याय कहिजे? आस्रव कर्म ग्रहै छै। कर्मांरो उपाय छै। शुभाशुभ कर्म आवाना कारणां छै। ते छांडवा जोग छै।

कर्म रोके ते संवर आदरवा जोग छै।

देश थकी कर्म तोड़ी, देश थकी जीव उज्वल थाय ते निर्जरा आदरवा जोग छै।

बंध ने छांडवा जोग किणन्याय कहिजे ? शुभाशुभ कर्म जीव के बंध रह्या छै ते बंध तो छांडवा ही जोग छै।

मोक्ष ने आदरवा जोग किणन्याय कहिजे ? समस्त कर्म मूकावे ते मोक्ष आदरवा जोग छै।

॥ इति द्वादशम् द्वारम् ॥

॥ अथ तेरमूं तलाव द्वार कहे छे ॥

तालाव रूपी जीव जाणवो। तलाव ते तलाव रूपी अजीव जाणवो। निकलता पाणी रूप पुन्य पाप जाणवो। नाला रूप आस्रव जाणवो। नाला बंध रूप संवर जाणवो। मोरी करी ने पाणी काढ़े ते निर्जरा जाणवो। मांहिला पाणी रूप बंध जाणवो। खाली तलाव रूप मोक्ष जाणवो।

यह तेरा द्वार तन्त किया श्रीभीखनजी संत

॥ इति तेरा द्वार सम्पूर्ण ॥

॥ अथ बावन बोल को थोकड़ो ॥

१ पहिले बोले ८ आत्मां में कर्मां री करता किती ? रोकता किती ? तोड़ता किती आत्मा ? करता

तो ३ तीन आत्मा—कषाय, जोग, दर्शण।
रोकता २ दोय आत्मा—दर्शण, चारित्र। तोड़ता
एक जोग आत्मा।

२ दूजे बोले ८ आत्मा में द्रव्य जीव कीती ?
भावजीव कीती ?

१ द्रव्य जीव एक द्रव्य आत्मा।
२ भाव जीव सात आत्मा।

३ तीजे बोले आठ आत्मा में उदय भाव कीती ?
यावत परिणामी भाव कीती आत्मा ?

३ उदय भाव तीन—कषाय, योग, दर्शन।
२ उपशम भाव दोय—दर्शन, चारित्र।
६ क्षायक क्षयोपशम छव आत्मा द्रव्य कषाय टली
८ परिणामिक भाव आठ आत्मा।

४ चौथे बोले आठ आत्मा में सास्वती कीती ?
असास्वती कीती ?

१ सास्वती तो एक द्रव्य आत्मा।
७ असास्वती सात आत्मा।

५ पांचमें बोले आठ आत्मा में सावद्य कीती ?
निर्वद्य कीती ?

१ द्रव्य आत्मा तो सावद्य निर्वद्य दोनं नहीं,
१ कषाय आत्मा सावद्य छै।

२ जोग तथा दर्शन आत्मा सावद्य निर्वद्य दोनूं छै।
४ ज्ञान, चारित्र, वीर्य, उपयोग, ए च्यार आत्मा निर्वद्य छै।

६ छठे बोले आठ आत्मा में जाणे किसी? देखे किसी? सरधे किसी आत्मा?

जाणें तो ज्ञान तथा उपयोग आत्मा, देखे उपयोग आत्मा, सरधे दर्शन आत्मा, काला जाणै उपयोग आत्मा, करै जोग आत्मा, कर्म रोके चारित्र आत्मा, तोड़े जोग आत्मा, शक्ति वीर्य आत्मा की।

७ सातमें बोले उदय का ३३ (तेतीस) बोलां में सावद्य केता? निर्वद्य केता?

१६ सोले बोल तो सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं, ते कहे छे च्यार गति ४, छव काय १०, असन्नी ११, अन्नाणी १२, संसारता १३, असिद्ध १४, अकेवली १५, छद्मस्थ १६।

३ तीन भली लेश्या निर्वद्य छै।

१२ बारे सावद्य छै, तीन माठी लेश्या ३, च्यार कषाय ७, तीन वेद १०, मित्थ्याती ११, अव्रती १२

२ अहारता, संजोगी, ए दोय सावद्य निर्वद्य दोनूं ही छै।

८ आठमें बोलै जीव पदार्थ किसै भाव यावत मोक्ष-पदार्थ किसै भाव ?

१ जीव पदार्थ भाव पांचो ही पावै।

४ अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध, ए च्यार पदार्थ भाव १ एक परिणामिक।

१ आस्रव पदार्थ भाव दोय उदय, परिणामिक।

१ संबर पदार्थ भाव च्यार उदय बरजी ने।

१ निर्जरा पदार्थ भाव तीन—क्षायक, क्षयोपशम, परिणामिक।

१ मोक्ष भाव दोय—क्षायक, परिणामिक।

९ नवमें बोलै उदय का ३३ (तेतीस) बोल किसै किसै कर्म का उदय से तथा किसो आत्मा ? १३ तेरा बोल तो नाम कर्म के उदय से, तिणमें च्यार गति ४, छव काय १०, तीन भली लेश्या १३।

१२ बारे बोल मोहनीय कर्म के उदय से, च्यार कषाय ४, तीन बेद ७, तीन माठी लेश्या १०, मिथ्याती ११, अब्रती १२, एवं

२ दोय बोल ज्ञानावरणी कर्म के उदय से—असन्नी, अन्नाणी।

२ आहारता, संयोगी, ए दोय बोल मोहनीय, नाम, कर्म ना उदय से।

२ छद्मस्थ, अकेवली, ए दोय बोल ज्ञानावरणी, दर्शणावरणी, अन्तराय, यां तीन कर्म का उदय से।

२ संसारता, असिद्धता, ए दोय बोल, च्यार अघातिक कर्म का उदय से, हिवे आत्मा कहे छे।

१७ सतरे बोल तो अनेरी आत्मा—

च्यार गति ४, छव काय १०, अव्रती ११, असन्नी १२, अन्नाणी १३, संसारता १४, असिद्ध १५, अकेवली १६. छद्मस्थ १७।

८ आठ बोल जोग आत्मा—

छव लेश्या ६, आहारता ७, संयोगी ८।

४ च्यार कषाय कषाय आत्मा।

३ तीन वेद कोई कषाय कहे कोई अनेरी कहे।

१ मिथ्याती दर्शन आत्मा।

१० दशमें बोले जीव ने जीव जाणे यावत मोक्ष ने मोक्ष जाणे ते किसि भाव? क्षायक, क्षयोपशम, परिणामिक, ए तीन भाव।

११ इग्यारमें बोले जीव ने जीव जाणे, यावत मोक्ष ने मोक्ष जाणे, ते किसी आत्मा? उपयोग अने ज्ञान आत्मा।

१२. बारमें बोलै जीव पदार्थ कीतो आत्मा ? यावत मोक्ष पदार्थ कीतो आत्मा ? जीव में आत्मा पावै आठों ही। अजीव, पुन्य, पाप, बंध, आत्मा नहीं। आस्रव ३ (तीन) आत्मा कषाय जोग दर्शन। संवर २ (दोय) आत्मा दर्शन तथा चारित्र। निर्जरा ५ (पांच) आत्मा द्रव्य, कषाय चारित्र टली। मोक्ष पदार्थ अनेरी आत्मा।

१३ तेरहमें बोलै छव में नव में कोण ? उदय छव में कोण, नव में कोण ?—छव में पुद्गल, नव में च्यार—अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध।

उपशम छव में कोण, नव में कोण ?—छव में पुद्गल, नव में तीन—अजीव, पाप, बंध।

क्षायक छव में कोण, नव में कोण ?—छव में पुद्गल, नव में च्यार—अजीव, पुन्य, पाप, बंध।

क्षयोपशम छव में कोण, नव में कोण ? छव में पुद्गल, नव में तीन—अजीव, पाप, बंध।

परिमाणिक छव में कोण, नव में कोण ?—छव में छव, नव में नव।

१४ चौदमें बोलै उदय निपन्न छव में कोण, नव में कोण ?—यावत परिणामिक निपन्न छव में नव में कोण ?

उदय निपन्न छव में कोण, नव में कोण ?—छव में जीव, नव में जीव आस्रव। उपशम निपन्न छव में कोण ? नव में कोण ?—छव में जीव, नव में जीव, संवर। चायक निपन्न, छव में कोण ? नव में कोण ?—छव में जीव, नव में ४ जीव संवर, निर्जरा, मोक्ष। चयोपशम निपन्न छव में कोण ? नव में कोण ?—छव में जीव, नव में ३ जीव, संवर, निर्जरा।

परिणामिक निपन्न छव में कोण ? नव में कोण ?—छव में छव नव में नव।

१५ पंदरमें बोले आठ कर्मनों उदय, छव में, नव में कोण ?—ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय, अन्तराय, ए च्यार कर्मनों उदय तो छव में पुद्गल; नव में तीन—अजीव, पाप; बंध। वेदनी नाम गोत आयु ए च्यार कर्मनों उदय छव में पुद्गल नव में च्यार, अजीव, पुन्य, पाप, बंध।

१६ सोलमें बोले मोहनीय कर्मनों उपशम छव में कोण ?—नव में कोण ? छव में पुद्गल, नव में तीन, अजीव, पाप, बंध। बाकी सात कर्मनों उपशम होवे नहीं।

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय, अन्तराय, ए च्यार कर्मनों क्षायक, छवमें कोण ? नवमें कोण ?—छवमें पुद्गल, नवमें तीन—अजीव, पाप, बन्ध। बेदनी नाम गोत ए तीन कर्मनों क्षायक छव में कोण नव में कोण ?—छव में पुद्गल, नव में च्यार—अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध।

आयुष को क्षायक छवमें कोण ?--नव में कोण ? छव में पुद्गल, नव में तीन—अजीव, पुन्य, बन्ध। ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय, अन्तराय, ए च्यार कर्म नो क्षयोपशम छव में कोण ? नव में कोण ? छव में पुद्गल, नव में तीन—अजीव, पाप, बंध। बाकी च्यार कर्म रो क्षयोपशम होवे नहीं।

१७ सतरमें बोले आठ कर्म ना निपन्न नों विगत। छव कर्म नों उदय निपन्न, छव में कोण ? नव में कोण ?—छव में जीव, नव में जीव। मोहनीय, नाम ए दोय कर्म नो उदय निपन्न, छव में जीव, नव में जीव आस्रव।

सात कर्म नों तो उपशम निपन्न होवे नहीं, एक मोहनीय कर्म नों उपशम निपन्न होवे, ते छव में जीव, नव में जीव, संवर।

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय, यां तीन कर्म रो क्षायक निपन्न छव में जीव, नव में जीव निर्जरा। एक मोहनीय कर्म रो क्षायक निपन्न छव में जीव, नव में जीव संबर निर्जरा। बाकी च्यार अघातिक कर्म को छव में जीव, नव में जीव, मोक्ष। च्यार अघातिक कर्म रो तो क्षयोपशम निपन्न होवे नहीं। ज्ञानावरणी दर्शनावरणी, अन्तराय, यां तीन कर्म को क्षयो-पशम निपन्न तो छव में जीव, नव में जीव, निर्जरा। मोहनीय कर्म को क्षयोपशम निपन्न छव में जीव, नव में जीव, संबर निर्जरा।

१८ अठारमें बोले आठ कर्म नों बंध आदि सत्ता किसे किसे गुण ठाणें—

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय, नाम, गोत ए पांच कर्म नों बंध पहिला गुण ठाणां से दशमां गुण ठाणां ताईं।

मोहनीय कर्म नों बंध पहिला गुण ठाणां से नवमां गुण ठाणां ताईं।

आयु कर्म नों बंध पहिला गुण ठाणां से सातमां ताईं। तीजो गुण ठाणों टालो।

बेदनी कर्म नों बंध तेरमां गुण ठाणां ताईं।

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय, ए तीन कर्म नों उदय अने उदय निपन्ननी सत्ता बारमा गुण ठाणां तांई।

वेदनी, नाम, गोत्र, आयुष, ए च्यार कर्म नों उदय अनें उदय निपन्न नी सत्ता चौदमा गुण ठाणां तांई।

मोहनीय कर्म नों उदय निपन्न पहिला गुण ठाणां से दशमा गुणठाणां तांई। अने सत्ता इग्यारमां गुणठाणां तांई।

१६ उगणीसमें बोले चौदे गुणठाणां को उदय उपशम क्षायक क्षयोपशम निपन्न कहै छै, ज्ञाना-वरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय ए तीन कर्म नों उदय निपन्न तो पहिला से बारमां तांई।

दर्शन मोहनीय नों उदय निपन्न पहिला से सातमां तांई।

चारित्र मोहनीय नों उदय निपन्न पहिला से दशमां तांई।

वेदनी, नाम, गोत्र, आयुष ए च्यार कर्म नों उदय निपन्न पहिला से चोदमां तांई।

सात कर्म नों तो उपशम निपन्न होवे नहीं, एक मोहनीय कर्म नों होय तिण में दर्शन

मोहनीय नों उपशम निपन्न तो चौथा से इग्यारमा तांई चारित्र मोहनीय को इग्यारमें गुण ठाणे ही। ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय ए तीन कर्म नों क्षायक निपन्न तेरमें चौदमें गुण ठाणे तथा श्री सिद्ध भगवान में। दर्शन मोहनीय को क्षायक निपन्न चौथा गुण ठाणां से चौदमा तांई। अनें चारित्र मोहणी को बारमा से चौदमा तांई तथा श्री सिद्ध भगवान मांहि।

बेदनी, नाम, गोत्र आयु ए च्यार कर्म नों क्षायक निपन्न गुण ठाणां में पावे नहीं, श्री सिद्ध भगवान में पावे।

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय ए तीन कर्म नों क्षयोपशम निपन्न तो पहिला से बारमा गुण ठाणां तांई।

दर्शन मोहनीय को क्षयोपशम निपन्न पहिला से सातमा गुण ठाणां तांई।

चारित्र मोहनीय नों क्षयोपशम निपन्न पहिला से दशमा गुण ठाणां तांई।

च्यार अघाति कर्म नों क्षयोपशम निपन्न होवे नहीं।

२० बीस में बोलै आठ कर्मा में पुन्य कितना पाप कितना तथा पुन्य कितना से लागै पाप कितना से लागै ।

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय, अन्तराय ए च्यार कर्म तो एकान्त पाप छै ।

वेदनी, नाम, गोत्र, आयु ए च्यार कर्म पुन्य पाप दोनूं ही छै ।

मोहनीय कर्म से तो पाप लागै अने नाम कर्म से पुन्य पाप दोनूं नहीं लागै ।

२१ इक्कीस में बोलै आस्रवना बीस भेद तथा संवर ना बीस भेद किसे किसे गुण ठाणें कितना पावे ?

॥ आस्रव के २० भेदों की बिगत ॥

पहिले तथा तीजे गुण ठाणे तो बीस पावे, दूजै चौथे पांचमें गुणठाणे १९ उगणीस पावे मित्थ्यात टल्यो । छठे गुणठाणे १८ अठारे पावे, मित्थ्यात्व तथा अव्रत आस्रव टल्यो । सातमा से दशमा गुणठाणां तांई ५ पांच आस्रव

पावे कषाय, जोग, मन, बचन, काया, ए पांच जाणवा। इग्यारमें बारमें तेरमें च्यार पावे कषाय टली। चौदमें आस्रव पावे नहीं। हिवे संबर के बीस बोलां की बिगत—पहिला से चउथा गुण ठाणां तांई तो संबर पावे नहीं, पांचमें गुणठाणे एक समकिते संबर पावे, सम्पूर्ण व्रत ते संबर पावे नहीं।

देश व्रत पावै ते लेखव्यो नहीं।

छट्ठे गुणठाणे २ (दोय) पावे समकिते, व्रतते, सातमा से दशमा गुणठाणां तांई १५ (पंद्रह) संबर पावे। अकषाय, अजोग, मन, बचन, काया ए पांच टल्या।

इग्यारमें से तेरमें गुणठाणां तांई १६ सोलह संबर पावे, अजोग, मन, बचन, काया, ए च्यार टल्या।

चौदमें गुणठाणे २० बीसूंही संबर पावें।

२२ बाईस में बोले चौदा गुणठाणां किस्यो भाव किसी आत्मा ?

पहिलो दूजो तीजो गुणठाणों तो भाव दोय—क्षयोपशम परिणामिक, आत्मा दर्शन। चौथे

गुणठाणो भाव च्यार—उदय, बरजीने आत्मा, दर्शन।

पाचमूं गुणठाणो भाव दोय—क्षयोपशम परिणामिक, आत्मा देशचारित्र।

छट्ठा से दशमा गुणठाणां तांई भाव दोय—क्षयोपशम परिणामिक, आत्मा चारित्र। इग्यारमूं गुणठाणो भाव दोय—उपशम पारिणामिक आत्मा क्षायक चारित्र।

बारमूं गुणठाणों भाव दोय—क्षायक परिणामिक, आत्मा क्षायक चारित्र।

तेरमूं गुणठाणो भाव दोय—क्षायक परिणामिक आत्मा उपयोग।

चउदमों गुणठाणो भाव परिणामिक आत्मा अनेरी।

२३ तेवीसमें बोले धर्म अधर्म किस्यो भाव किसी आत्मा ?

धर्म भाव ४ (च्यार) उदय टालो, आत्मा तीन, दर्शन, चारित्र, जोग। अधर्म भाव, दोय उदय परिणामिक, आत्मा ३ तीन, कषाय, जोग, दर्शन।

२४ चौवीसमें बोले दया हिन्सा किस्यो भाव किसी आत्मा।

दया भाव ४ (च्यार) उदय बरजी ने, आत्मा २ (दोय) चारित्र, जोग।

हिन्सा भाव २ (दोय) उदय परिणामी आत्मा जोग, छव में नवमें का बोल कह्या।

२५ पच्चीसमें बोलै शुभ जोग अशुभ जोग किस्यो भाव किसी आत्मा ?

शुभ जोग तो भाव च्यार—उपशम बरजी ने, आत्मा जोग।

अशुभ जोग भाव दोय—उदय परिणामी, आत्मा जोग। छव में नव में का बोल कह्या।

२६ छवीसमें बोलै व्रत अव्रत किस्यो भाव किसी आत्मा ?

व्रत भाव ४ (च्यार) उदय बरजी ने, आत्मा, चारित्र। अव्रत भाव २ (दोय) उदय परिणामी आत्मा अनेरी।

२७ सत्ताबीसमें बोलै पञ्च महाव्रत पञ्च सुमति तीन गुप्त किस्यो भाव किसी आत्मा ?

पञ्च महाव्रत तीन गुप्त तो भाव ४ (च्यार) उदय बरजी, आत्मा चारित्र।

पांच सुमति भाव तीन—क्षायक क्षयोपशम, परिणामिक, आत्मा जोग।

२८. अठावीसमें बोलै १२ (बारै) व्रत किसो भाव किसो आत्मा ?

भाव, क्षयोपशम परिणामी, आत्मा, देश चारित्र।

२९ उगणतीसमें बोलै समकित मिथ्यात्व किसो भाव किसो आत्मा ? समकित भाव च्यार—उदय, बरजी नै, आत्मा, दर्शन। मिथ्यात्व भाव उदय परिणामी, आत्मा दर्शन।

३० तीसमें बोलै ज्ञान अज्ञान किसो भाव किसो आत्मा ?

ज्ञान भाव ३ (तीन) क्षायक क्षयोपशम परिणामी, आत्मा, उपयोग, ज्ञान। अज्ञान भाव २ (दोय) क्षयोपशम परिणामिक आत्मा उपयोग।

३१ इकतीसमें बोलै द्रव्य जीव, भाव जीव किसे भाव किसी आत्मा ?

द्रव्य जीव भाव एक परिणामिक, आत्मा द्रव्य, भाव जीव भाव पांचों ही, आत्मा द्रव्य बरजी नै सात। छव में नव में बोल कहणा।

३२ बत्तीसमें, बोलै अठारै पाप ठाणा रो उदय उपशम क्षायक क्षयोपशम छव में कोण नव में कोण ?

छव में पुद्गल, नवमें तीन—अजीव, पाप, बन्ध।

३३ तैतीसमें बोलै अठारे पाप ठाणा रो उदय उपशम चायक चयोपशम निपन्न छव में कोण नव में कोण ?

उदय निपन्न छवमें जीव नवमें जीव आस्रव। उपशम निपन्न छवमें जीव नवमें जीव संवर। सतरा (१७) को तो चायक निपन्न छवमें जीव नवमें जीव संवर, एक मिथ्या दर्शन शल्य को छव में जीव नवमें जीव संवर निर्जरा, चयोपशम निपन्न छव में जीव नव में जीव संवर निर्जरा।

३४ चौतस में बोलै बारह ब्रत को द्रव्य खेत्र काल भाव राखै तैहनी बिगत।

पहिला ब्रत से आठमा ब्रत तांई तो द्रव्य थकी आघार राखै तै द्रव्य उपरान्त त्याग, खेत्र थी सर्व खेत्रा में, काल थकी जाव जीव, भाव थकी, राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुण थकी संवर निर्जरा। नव में ब्रत द्रव्य खेत्र ऊपर परिमाणे काल थकी एक महुरत भाव थी राग द्वेष रहित, उपयोग सहित, गुण थकी संवर निर्जरा। दशमूं ब्रत द्रव्य खेत्र भाव गुण तो ऊपर परिमाणे, काल थकी राखै जितनो काल इग्यारमों ब्रत को

द्रव्य खेत्र भाव गुण तो ऊपर परिमाणे काल थकी अहोरात्रि परिमाण।

बारमूं व्रत को द्रव्य थकी साधूजी ने कल्पे ते चौदह प्रकार नो द्रव्य, खेत्र थकी कल्पै ते खेत्रमें काल थकी कल्पै ते काल में, भावथकी रागद्वेष रहित, गुण थकी संवर निर्जरा।

३५ पैंतीस में बोले नव पदार्थ में निजगुण कितना परगुण कितना ?

निजगुण तो पांच। जीव, आस्रव, संवर निर्जरा, मोक्ष।

परगुण ४ (च्यार) अजीव, पुन्य, पाप, बंध।

३६ छत्तीसमें बोले दर्शन मोहनीय कर्म को उदय उपशम क्षायक क्षमोपशम कितना गुण ठाणां पावै। दर्शन मोहनीय को उदय निपन्न पहिला गुणठाणा से सातमां तांई, चारित्र मोहनीय को उदय निपन्न पहिला से दशमा तांई।

चारित्र मोहनीय को उपशम निपन्न एक इग्यारमें ही गुणठाणे।

दर्शन मोहनीय को उपशम निपन्न चौथा से इग्यारमें गुणठाणां तांई।

दर्शन मोहनीय को क्षायक निपन्न चौथा से चौदमें गुणठाणे तथा सिद्धां में।

चारित्र मोहनीय को क्षायक निपन्न बारमें तेरमें चौदमें गुणठाणे।

दर्शन मोहनीय को क्षयोपशम निपन्न पहिला से सातमां गुणठाणे तांई।

चारित्र मोहनीय को क्षयोपशम निपन्न पहिला से दसमां गुणठाणां तांई।

३७ सेंतीस में बोलै आठ आत्मा में मूल गुण कितनी उत्तर गुण कितनी—

मूल गुण एक चारित्र आत्मा, उत्तर गुण एक जोग आत्मा। बाकी दोनूं नहीं।

३८ अड़तीसमें बोलै आठ आत्मा किसे भाव किसी आत्मा—आत्मा तो आप आपरी, द्रव्य आत्मा तो भाव एक परिणामी, कषाय आत्मा भाव दोय उदय परिणामी, जोग आत्मा भाव च्यार उपशम बरजी ने, उपयोग ज्ञान वीर्य ए तीन आत्मा भाव तीन क्षायक क्षयोपशम परिणामिक, दर्शन आत्मा भाव पांचोंही।

चारित्र आत्मां भाव च्यार उदय बरजी।

३९ गुण चालीस में बोलै आठ आत्मा छवमें कोण नवमें कोण।

द्रव्य आत्मा छवमें जीव नवमें जीव, कषाय आत्मा छव में जीव, नवमें जीव आस्रव। योग आत्मा छव में जीव नवमे जीव आस्रव निर्जरा। उपयोग, ज्ञान, वीर्य ये तीन आत्मा छव में जीव नव में जीव निर्जरा।

दर्शन आत्मा छव में जीव नव में जीव आस्रव संवर निर्जरा।

चारित्र आत्मा छव में जीव नवमें जीव संवर।

४० चालीस में बोलै आस्रव का (बीस) २० बोल किसि भाव किसी आत्मा ?

भाव तो उदय परिणामिक बीसूं ही बोल। मिथ्याती दर्शन आत्मा, अव्रत प्रमाद अनेरी आत्मा। कषाय कषाय आत्मा बाकी सोलै आस्रव योग आत्मा।

४१ एकचालीस में बोलै संवर ना २० (बीस) बोल किसि भाव किसी आत्मा।

अकषाय संवर भाव तीन उपशम चायक परिणामिक, आत्मा अनेरी।

अजोग मन बचन काया ए च्यार संवर भाव

एक परिणामिक आत्मा अनेरी। सम्यक ते संबर भाव ४ (च्यार) उदय बरजी ने, आत्मा दर्शन। अप्रमादी संबर भाव च्यार उदय-बरजी आत्मा अनेरी। बाकी १३ (तेरा) संबर का बोल भाव ४ (च्यार) उदय बरजीने आत्मा चारित्र।

४२ बयालीस में बोलै पन्दरह जोग किसे भाव किसी आत्मा, जीव, अजीव तथा रूपी अरूपी की विगत।

भाव की विगत।

सत्यमन जोग सत्य भाषा व्यवहार मन जोग, व्यवहार भाषा, औदारिक ए पांच जोग भाव च्यार उपशम बरजी नें।

औदारिक को मिश्र, कार्मण ए दोय जोग भाव तीन उदय क्षायक परिणामिक।

असत्य मन जोग, मिश्र मन जोग, असत्य भाषा, मिश्र भाषा बेक्रिय नो मिश्र, आहारिक नूं मिश्र ए छव जोग भाव दोय उदय परिणामिक, आहा-रिक बेक्रै ए दोय जोग भाव ३। उदय क्षयो-पशम परिणामी।

सावद्य निर्वद्य कितना ।

असत्य मन जोग असत्य भाषा मिश्र मन जोग मिश्र भाषा, आहारिक नूं मिश्र, वैक्रिय नूं मिश्र ए छव जोग तो सावद्य छै बाकी नव जोग सावद्य निर्वद्य दोनूं छै ।

पनरह जोग जीव कै अजीव द्रव्ये अजीव भावे जीव ।

पनरह जोग रूपी कै अरूपी द्रव्ये रूपी भावे अरूपी ।

४३ तयालीसमें बोले पांच इन्द्रियां को पूछा पांच इन्द्री जीव कै अजीव ?

द्रव्ये अजीव भावे जीव । पांच इन्द्री रूपी कै अरूपी ? द्रव्ये रूपी भावे अरूपी । पांच इन्द्रियां में कामी कितनी भोगी कितनी ? कामी तो दोय श्रुत इन्द्री, चक्षु इन्द्री, अने भोगी बाकी तीन इन्द्रियां । पांच इन्द्रियां में चेती कितनी अचेती कितनी ? एक स्पर्श इन्द्री तो चेती बाकी च्यार इन्द्रियां अचेती ।

द्रव्य थी इन्द्री कितनी भाव थी कितनी ? द्रव्य थी तो आठ ते कहै छै दोय कान, दोय आंख, नाक,

जीह्वा, स्पर्श । भाव थी पांच श्रुत चक्षु घ्राण रस स्पर्श एवं छवमें कोण नव में कोण ? भाव इन्द्री छव में जीव नव में जीव निर्जरा, तै किणन्याय दर्शनावरणी कर्म क्षय उपशम थयां थी जीव इन्द्रिय पणो पाम्यो इणन्याय ।

४४ चमालीसमें बोलै जीव परिणामी रा १० बोल किसे भाव किसी आत्मा ?

गति परिणामी भाव दोय, उदय परिणामी, आत्मा अनेरी । कषाय परिणामी भाव दोय उदय परिणामिक, आत्मा कषाय । वेद परिणामी भाव उदय परिणामी आत्मा कषाय तथा अनेरी । योग परिणामी लेश परिणामी भाव च्यार उपशम बरजी ने आत्मा योग । इन्द्रिय परिणामिक भाव दोय, क्षयोपशम परिणामी, आत्मा उपयोग । ज्ञान परिणामिक उपयोग परिणामिक भाव तीन क्षायक क्षयोपशम परिणामी आत्मा आप आपरी । दर्शन परिणामी भाव पांचों ही, आत्मा दर्शन । चारित्र परिणामी भाव च्यार उदय बरजी ने आत्मा, चारित्र ।

४५ पैंतालीसमें बोलै जीव परिणामी रा १० (दश) बोल छव में कोण नव में कोण ?

गति परिणामी छव में जीव नवमें जीव जाणवो वेद परिणामी कषाय परिणामी छवमें जीव नव में जीव आस्रव। योग लेश परिणामी छव में जीव नव में जीव आस्रव निर्जरा। दर्शन परिणामी छव में जीव नव में जीव आस्रव संवर निर्जरा। इन्द्रिय उपयोग ज्ञान परिणामी छव में जीव नव में जीव निर्जरा। चारित्र परिणामी छव में जीव नव में जीव संवर।

४६ छयालीसमें बोले चौदहगुणठाणा वाला में शरीर कितना पावे ?

पहिला से पांच गुणठाणां तांई तो शरीर ४ च्यार पावे आहारिक टल्यो, छठे गुणठाणे शरीर पावे पांचो ही, सातमा गुणठाणा से चौदमा गुणठाणा तांई शरीर पावे ३ (तीन) औदारिक तेजस कार्मण। पांच शरीर चौ स्पर्शी के आठ स्पर्शी ? च्यार शरीर तो आठ स्पर्शी छे कार्मण चौ स्पर्शी छे।

पांच शरीर जीव के अजीव ? अजीव छे।

४७ सातचालीसमें बोले २४ (चौवीस) दण्डक में लेश्या कितनी पावे ?

सात नारकी १ तेउ २ वायु ३ बेइन्द्री ४ तेइन्द्री ५ चौइन्द्री ६ असन्नी मनुष्य ७ असन्नी तिर्यञ्च ८ यां में तो ३ माठी लेश्या पावे।

पृथ्वीकाय १ अप्पकाय १ बनस्पतिकाय १ भवन प्रतिकाय १० बानव्यन्तर १ यां चौदह दण्डकां में लेश्या पावे ४ पद्म शुक्ल बरजी ने। जोतषी अने पहिला दूजा देवलोक का देवतामें लेश्या पावे १ तेजू। तीजा से पांचमां तांई पद्म। छट्ठा देवलोक से सवार्थ सिद्ध तांई पावे १ शुक्ल। सन्नी मनुष्य सन्नी तिर्यञ्च में लेश्या पावे छव। सर्व जुगलिया में ४ च्यार पद्म शुक्ल टली।

४८ अड़चालीसमें बोलै अजीव ना चौदह भेद ऊंचा नीचा तिरछा लोक में कितना? ऊंचो लोक अने अढ़ी द्वीप बारे १० पावे। धर्मास्ति. अधर्मास्ति आकाशास्ति को खन्ध अने काल ए च्यार टल्या।

नीचो लोक अढ़ाई द्वीप में ११ (इग्यारे) पावै काल और बध्यो। ऊंची दिशि में ११ (इग्यारे) पावे नीची दिशि में १० पावे।

४९ गुणचासमें बोलै (च्यार) गति ४ (पांच) जाति, ६ छव काय १५, चौदह भेद जीवका २४

चौबीस दण्डक एवं ५३ सूक्ष्म ५४ बादर ५५ त्रस ५६ स्थावर ५७ पर्याप्तो ५८ अपर्याप्तो ५९ ए गुणसठ बोल किसो भाव किसी आत्मा ? भाव उदय परिणामी, आत्मा अनेरी, छव में कोण नव में कोण ? छवमें जीव नवमें जीव। तथा सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं।

५० पचासमें बोले २२ (बाईस) परीषह किसे किसे, कर्म के उदय तथा छव में नवमें कोण ?

११ इग्यारे परीषह तो वेदनी कर्मना उदय से।

२ दोय ज्ञानावरणी कर्म ना उदय से।

८ आठ मोहनीय कर्म ना उदय से।

१ अन्तराय कर्म का उदय से।

छव में जीव नव में जीव निर्जरा।

५१ इक्यावनमें बोले तेवीस पदवी किस्यो भाव किसी आत्मा ?

१९ उगणीस पदवी तो भाव २ (दोय) उदय परिणामिक, आत्मा अनेरी।

१ केवली महाराज की पदवी भाव दोय चायक परिणामिक आत्मा उपयोग।

१ साधूजी महाराज की पदवी भाव ४ (च्यार) उदय बरजी आत्मा चारित्र।

१ श्रावक की पद्वी भाव २ (दोय) क्षयोपशम परिणामी, आत्मा, देश, चारित्र ।

१ समदृष्टि की पद्वी भाव ४ (च्यार) उदय बरजी आत्मा, दर्शन ।

उगणीस पद्वी तो छव में जीव नव में जीव समदृष्टि की अने केवली की पद्वी छव में जीव नव में जीव निर्जरा। साधू श्रावक की पद्वी छव में जीव नव में जीव संबर ।

५२ बावनमें बोले नव तत्व का ११५ (एकसह पंद्रह) बोल की

जीव कितना—जीव तो ७० सत्तर तेहनी बिगत जीव का १४ आस्रव का २० संबर का २० निर्जरा का १२ मोक्ष का ४ एवं ७० ।

अजीव ४५ तेहमें अजीव का १४ पुन्य का ९ (नव) पाप का १८ (अठारा) बंध का ४ (च्यार) एवं ४५ ।

सावद्य कितना निर्वद्य कितना ?

निर्वद्य तो ३६ तिणमें निर्जरा का १२ संबर का २० मोक्ष का ४ ए छवतीस ।

सावद्य १६ तिणमें आस्रव का १६ (मन बचन काया जोग ए च्यार टल्या) ।

दोनूं नहीं ५९ तिणमें ४५ अजीव का १४ जीव का ए सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं।

च्यार आस्रव मन बचन काया जोग ए सावद्य निर्वद्य दोनूं है।

आज्ञा मांही कितना—१६ ऊपर परमाणे।

आज्ञा बाहर कितना—१६ आस्रव का।

आज्ञा मांही बाहर कितना—४ (च्यार) मन बचन काया जोग ए च्यार आस्रव का।

५९ बोल आज्ञा मांही बाहर दोनूं नहीं।

रूपी कितना अरूपी कितना ?

अरूपी तो ८० (अस्सी) तिणमें ७० (सत्तर) तो जीव का १० अजीव का (पुद्गल का च्यार टल्या ९ (नव) पुन्य का १८ (अठारा) पाप का ४ बन्ध का ४। यह ३५ रूपी है।

एकसह पंदरह बोलां में छांडवा आदरवा जाणवा योग कितना ?

जाणवा योग तो ११५ एकसह पंदरह, आदरवा योग ३६ (छत्तीस) निर्वद्य कह्या सो अने छांडवा योग ७९ तिणमें अजीव का ४५, जीव का-१४, आस्रव का २० एवं ७९ थया।

॥ किसे भाव ॥

४५ अजीव का तो भाव एक परिणामिक १४ जीव का २० आस्रव का ए चौतीस बोल भाव दोय. उदय परिणामिक।

संवर का २० (बीस) बोलां में से १५ पन्दरह तो भाव च्यार उदय बरजी ने, अने अकषाय संवर भाव ३ (तीन) उपशम चायक परिणामिक, अजोग मन बचन काया ए च्यार भाव एक परिणामिक।

निर्जरा का १२ बोल भाव ३ तीन चायक चयोपशम परिणामिक।

४ मोच का यामें से ज्ञान तप ए दोय तो भाव तीन चायक चयोपशम परिणामी, अने दर्शन चारित्र ए दोय भाव च्यार उदय बरजी ने।

॥ इति सम्पूर्ण ॥

॥ जाणपणा का पच्चीस बोल ॥

१ देव अरिहन्त, गुरु निग्रन्थ, धर्म केवली परूप्यो ये तीन अमूल्य रत्न छै।

२ जीव अजीव, पुन्य पाप, धर्म अधर्म, व्रत अव्रत, आज्ञा अणआज्ञा, यथार्थ जाण्यां बिना समकित नहीं, समकित बिना चारित्र नहीं तथा मुक्ति नहीं, उघाड़े मुख बोल्यां धर्म नहीं।

३ साधू का भेष पहन कर साधू नाम धराने से साधू नहीं जैसे ही पञ्चम गुणस्थान स्पर्श बिना श्रावक नहीं, छः द्रव्य, नव तत्व, च्यार गति, छः काय, देव गुरु धर्म ओलख्यां से सम्यक्त्वी जाणवो।

४ असंजती जीव को जीवणो बन्छे ते राग, मरणो बन्छे ते द्वेष, संसार समुद्र से तिरणो बन्छे ते वीतराग देव को धर्म।

५ जीव जीवे ते दया नहीं, मरे ते हिन्सा नहीं, मारण वाला ने हिन्सा, नहीं मारे ते दया।

६ पृथ्वी पाणी बनस्पति अग्नि वायरो (हवा) त्रसकाय में बेन्द्री से पंचेन्द्री तक यह छउं काया ने मारे नहीं मरावे नाहीं मारतां प्रते भलो जाणे नहीं, तेह दया छे, भय नहीं उपजावे ते अभय दान छे।

७ श्रावक च्यारूं आहार भोगवे ते अव्रत छे तेहथी पाप कर्म लागे छे देश थकी सर्व थकी त्याग करे तेह व्रत छे संवर धर्म छे मन वचन काया का शुभ जोग बरतावे ते निर्जरा धर्म तिण थी पुन्य कर्म लागे छे।

८ गृहस्थ खावे पीवे दूजा ने खुवावे पावे खावतां पीतां प्रते भलो जाणे ते अधर्म अव्रत आस्रवद्वार तेहथी अशुभ पाप कर्म लागे छे।

९ सर्व सावद्य जोग का त्याग करी पंच महाव्रत पाले तेह साधू नहीं पाले ते असाधू देश थकी त्याग करी शुद्ध देव गुरु धर्म की आराधना करे संसार सगपण अनित्य जाणे साधूपणां का भाव राखे श्रमण निग्रन्थ की उपासना करे ते श्रमणोपासक।

१० अठारे पाप सेवा का त्याग करे तीन कर्ण तीन योग से सावद्य जोग पचखे साधू तणी पर गोचरी करे पड़मा आदरे पादोगमनादि संथारो करे साधू पणो नहीं पचखे तो श्रावक ही छे गुणस्थान पांचमो ही पावे उणने साधू नहीं कहिजे आनन्दजी ने संथारा में अन्तसमां तांई उपासगदशा सूत्र में गृहस्थ कह्यो छे।

११ शुद्ध साधू मुनिराज ने सूजतो निर्दोष आहारपाणी दियां कर्म निर्जरा होय तथा कल्याणकारी कर्म ते पुन्य बन्धे प्रति संसार करे शुभ दीर्घ आयु बांधे ठाणांग भगवती विपाक आदि सूत्रां में घणी जगां कह्यो छे।

१२ सर्व व्रतधारी साधू ते संजती छट्ठा गुणस्थान

से चौदमां तांई, अव्रती अपच्चखाणी ते असंजती पहिला गुणस्थान से चौथा तांई, देश व्रतधारी व्रताव्रती श्रावक ते पंचम गुणस्थान जाणवो, त्याग करै ते व्रत देश संवर, आगार राख्यो सो सेवे सेवावे भलो जाणे ते अव्रत आस्रव छै, सूयगडांग उववाई आदि घणां सूत्रां में विस्तार छै।

१३ असंजती अव्रती अपच्चखाणी ने च्यारूं आहार सूजता असूजता निर्दोष तथा दोष सहित पडिलाभे तो एकान्त पाप निर्जरा नथी भगवती सूत्र के पाठ में शतक छट्ठे उद्देशे कह्यो छै।

१४ साता दियां साता होय ए प्ररूपणां वाला ने भगवान सूत्र सूयगडांग अध्ययन ३ उद्देशे ४ में इम कह्यो छै आर्य मार्ग थी न्यारो १, समाधि मार्ग थी अलगो २, जिन धर्म को हेलणारो करणहार ३, अल्पसुखां रे वास्ते घणां सुखांरो हारण हार ४, असत्य पक्ष थी अमोचणो कारण ५, लोहवाणीयांपरे घणो झूरसी ६।

१५ त्रस जीवने साधू अनुकम्पा अरथे बांधे बंधावे बांधतानें भलो जाणे तो चौमासी प्रायश्चित कह्यो तथा बंधिया हुआ जीव ने अनुकम्पा आणी छोडे छुडावे छोडतां प्रते भलो जाणे तो चौमासी

प्रायश्चित आवे सूत्र निशीथ उद्देशे १२ में कह्यो छै।

१६ चुलणी पिया श्रावक पोसामें ३ पुत्रानें मारता देखी बचाया नहीं माता ने छुड़ावण ऊठ्यो तो पोसो भागो, उपासग दशा सूत्र अध्ययन तीजै कह्यो छै तथा अरणक आदि श्रावक पण मोह अनुकम्पा नहीं करी।

१७ साधू मुनिराज ने लब्ध फोड़णी नहीं, सूत्र पन्नवणा पद ३६ में कह्यो छै तेजोलेश्या फोड्यां जघन्य ३ उत्कृष्टी ५ क्रिया लागे, इम बैक्रिय लब्धी आहारिक लब्धी फोड्यां क्रिया कही छै तथा भगवती शतक ३ उद्देशे ४ बैक्रिय लब्धी फोड़े तिण मांहि कह्यो, बिना आलोयां मरे तो विराधक कह्यो छै।

१८ असंजती ने दान देवा दीवावा का त्याग आगे पण बड़ा २ श्रावक किया सूत्रां में चाल्या छै उपासग दशामें आनन्दजी अन्यतीरथी ते असंजती ने देवा दीवावा का त्याग भगवंत पासे किया छै धर्म होय तो त्याग किम करे।

१९ देवल प्रतिमा कारणे पृथ्वीकाय हणे तिण ने भगवान् आचारंग तथा प्रश्न व्याकरण सूत्र में अहित अबोध को कामी कह्यो, तथा धर्म हेत जीव हण्यां

दोष नहीं इम प्ररूपे ते अनारज नो वचन छै आचां-रंग में कह्यो छै, एहवी अशुद्ध प्ररूपणा वालो मिथ्याती मन्द बुद्धि छै।

२० सर्व प्राण भूत जीव सत्व ने दुःख उपजावें नहीं, भय उपजावे नहीं, झुरावे नहीं, प्रतापना नहीं देवे, तो साता बेदनी नों बन्ध सूत्र भगवती शतक ७ उद्देशे ६ कह्यो छै परन्तु एकेन्द्री मार पंचेन्द्री पोष्यां धर्म किसी जगां नहीं कह्यो।

२१ साता बेदनी, मनुष्य देवता नो आयुष, शुभ नाम, ऊंच गोत्र ए ४ शुभ कर्म ते पुन्य छै तेहनीं करणी निर्वद्य जिन आज्ञा में छै, ए पुन्यनी करणीं सूत्र भगवती शतक ८ में उद्देशे ६ में कही छै।

२२ साधू मुनिराज आहार उपधादिक भोगवै तेह निर्वद्य छै। दशवैकालिक अध्ययन ४ चौथे गाथा ८ मी में कह्यो छै जयणा युत आहार करतां पाप नहीं तथा अध्ययन ५ में साधू नी गोचरी असावद्य मोक्ष साधवानो हेतु कही। सूत्र भगवती शतक १ उद्देशे ६ कह्यो छै साधू शुद्ध आहार भोगतां (७) सात कर्म ढीला पाड़े तथा दशवैकालिक सूत्र में शुद्ध गति कही छै।

२३ मिथ्याती उपवास बेलादिक तप करे

अथवा साधू मुनिराज नें निर्दोष आहार पाणी बहिरावे तथा मन बचन काया का शुभ जोग वरतावे जेह निर्वद्य करणी जिन आज्ञा मे छै तेह थी पाप क्षय होय पुन्य बंधे, सूत्र भगवती शतक ८ में उद्देशे १० में ज्ञान बिना क्रिया करे तेह नें देश आराधक कह्यो छै, मेघ कुमार हाथी रा भव में सुसला ज्यानवर नी दयाकरी आपणो पग ऊंचो राख्यो घणो कष्ट सह्यो तिणसूं प्रति संसार करी मनुष्य नो आऊखो बांध्यो, उत्तराध्ययन ७ सातमें मिथ्यातीने निर्जरा आश्री सुब्रती कह्यो छे, भगवती शतक ६ में उद्देशे ३१ में असोच्चा केवली अधिकारे प्रथम गुणठाणाराधणीरा शुभ अध्यवसाय शुभ परिणाम विशुद्ध लेश्या कही छै।

२४ साधू मुनिराज अचित निर्दोष आहार भोगवे अने ठंडो बासो आहार पाणी में बेन्द्री आदि जीव हुवे तो नहीं भोगवे परन्तु बेइन्द्रियादि तथा फूलणादि नहीं होवै तो ठंडो बासी आहार भोगवतां दोष नहीं उत्तराध्ययन ८ में गाथा १२ मी में शीतल पिण्ड आहार लेणो कह्यो तथा आचारंग श्रुत खंध १ अध्येन ६ में उद्देशे ४ चौथे गाथा १३ में भगवान ठडो आहार ओल्यो लियो कह्यो छै तिहां टीकामें बासी भात कह्यो तथा प्रश्न व्याकरण

अध्ययन १० में शीतल बासो कह्यो, विणठोरन एहवो आहार करी द्वेष नहीं करवो इम कह्यो छै।

२५ गृहस्थ नें सूत्र भणवा की जिन आज्ञा नहीं प्रश्न व्याकरण अध्ययन ७ मे में महाऋषि ने हीं सूत्र भणवारी आज्ञा कही देवेन्द्र नरेन्द्र अरथे भणे तथा अन्य तीर्थी गृहस्थ नें बाचनी देवे देरावे देवता प्रते भलो जाणे तो चौमासो प्रायश्चित आवे निशिथ उद्देशे ६ में कह्यो छै, साधू नें भी कल्प-आयां सूत्र भणवा सूत्र व्यवहार उद्देशे १० मे कह्यो छै तिणरी विगत: दीक्षा लियां ३ वर्ष हुयां निशीथ ४-वर्ष हुयां पछे सूयगडांग ५ वर्ष पछे वृहत कल्प व्ययवहार, दसा श्रुतखंध ८ वर्ष ठाणांग समवयांग, १० वर्ष दीक्षा लियां पछे भगवती कल्पे इम कह्यो छै उववाई प्रश्न २० में श्रावकांनें अर्थरा जाणकार कह्या छै।

यह २५ बोल जयाचार्य कृत प्रश्नोत्तरमांहियी सूक्षम पणे धाख्या छै विशेष बेरावार भ्रम विध्वंस-यादि ग्रन्था में बांचवो।

॥ इति ॥

॥ गुलाबचन्द लूणिया ॥

देवगुरु धर्मनी संक्षेप ओलखणा ।



देव अरिहन्त गुरु निग्रन्थ, धर्म केवली प्ररूप्यो ये तीन अमूल्य रत्न छै, याने यथार्थ जाण कर प्रतीत राखे ते सम्यकत्व जाणवी।

१ देव अरिहन्त किसा तेहनी ओलखना कहै छै, अठारे दोष रहित, बारह गुणां सहित, चौतीस अतिशय, पैंतीस बचनातिशय, एक हजार आठ शुभ लक्षण का धारणहार, केवल ज्ञानी, दर्शनी, ज्ञानावरणी दर्शनावरणी, मोहनीय, अन्तराय, ये च्यार घातिक कर्मों करके रहित तेरमा गुणस्थान सहित ते वीतराग प्रभु रागद्वेषमयी अरि कहितां बैरीने हण्या तिणने अरिहन्त कहीजे, ज्ञानवन्त थया तिण सूं भगवन्त कहिजे, साधू साध्वी श्रावक श्राविका, रूप च्यार तीर्थ प्रवर्ताया तिणसूं तीर्थंकर कहिजे तेहनी च्यार निक्षेप थकी ओलखणा जाणवी, श्री अनुयोग द्वार सूत्र में कह्यो छै, जीव या अजीव तीर्थंकर के नामें हो तो तीर्थङ्कर का नाम निक्षेपा, स्थापना करै ते स्थापना निक्षेपा, तीर्थंकर होनेवाला जीव तीर्थंकरां का गुण रहित हो वो द्रव्य निक्षेपा, और तीर्थङ्करों का गुण सहित हो वो भाव निक्षेपा है, ये च्यार निक्षेपा कह्या, इण में गुण सहित तरण तारण भाव निक्षेपो छै ते वन्दवा जोग छै, बाकी तीन निक्षेपा गुण रहित छै ते बन्दवा जोग नहीं गुण सहित नें नमस्कार कियां धर्म पुन्य थाय छै। गुण सहित अरिहन्त देवाधिदेव नें धर्म देव जाणवो।

दोहा—जिणमार्ग में देखल्यो गुण लारै पूजा।
निगुणां ने पूजै तिके मारग छै दूजा॥

२ गुरु निग्रन्थ ते ग्रन्थ कहतां धन रहित ते निग्रंथ छै, शुद्ध साधू पञ्च महाव्रत धारी उग्रविहारी शुद्ध आचारी ब्रह्मचारी सतरह भेदे संयम पाले बयांलीस दोष टालकर आहार पानी लेवे, पांच इन्द्रियां ने जीतै

बावीस पारीषह सहन करे पंच सुमति तीन गुप्त पञ्च महाव्रत यह तेरा पंथ में प्रवत ते गुरु जाणवो।

३ धर्म केवल ज्ञानी प्ररूप्यो ते जिन आज्ञा में धर्म आज्ञा बाहार अधर्म, असंयती जीव को जीवणो बांछे ते राग, मरणो बांछे ते द्वेष, संसारमयी समुद्र से तरणो बांछे ते वीतराग प्ररूपित धर्म जाणवो, दुरगति पड़तां जीवनें धारी राखै ते धर्म जाणवो ते विनय मूल धर्म दोय प्रकार छे, श्रमण और श्रमणोपासक। श्रमण धर्म तो पंचमहाव्रत रूप और श्रमणोपासक धर्म द्वादश व्रत रूप छे ने धर्म दोय प्रकार से नीपजे छे ते कहे छे निरजरा का बारह भेद सूं तथा सम्बर के बीस बोल सूं यां बिना सर्व अधर्म छे ते अशुभ आस्रव छे, तेहथी अशुभ कर्म बंधे छे, आज्ञा मांहिली करणी करतां अशुभ कर्म की निरजरा हुवे तथा शुभ कर्म ते पुन्य बंधे छे, ये रीते ओलखना कुपात्र दानमें पाप, सुपात्र दान में पुन्य ते शुभ जोग प्रवृत्यां थाय छे, हिंसा, झूंठ चोरी, मैथुन, परिग्रह ए पञ्च आस्रव द्वार सेवे ते कुपात्र, नहीं सेवे ते सुपात्र छे।

॥ गुलाबचन्द लुणिया ॥



॥ अथ लघुदण्डक लिख्यते ॥

पहलो शरीर द्वार ।

शरीर ५—औदारिक १ वैक्रिय २ आहारिक ३ तेजस ४ कार्मण ५ ।

सातों ही नारकी और सर्व देवताओं में शरीर पावे तीन—वैक्रिय १ तेजस २ कार्मण ३ ।

च्यार थावर, तीन विकलेन्द्री में, तथा असन्नी तिर्यञ्च, असन्नी मनुष्य, सर्वयुगलियां में शरीर पावे ३—औदारिक १ तेजस २ कार्मण ।

वाउकाय, सन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्री मनुष्यणीमें शरीर पावे ४—औदारिक १ वैक्रिय २ तेजस ३ कार्मण ४ ।

गर्भज मनुष्यो में शरीर पावे पाचूंही ॥

सिद्धां में शरीर पावे नहीं ॥

॥ इति प्रथम शरीर द्वारम् ॥

॥ दूजो अवगाहना द्वार ॥

जघन्य अवगाहनां आंगुल को असंख्यातऊ भाग, उत्कृष्टी हजार जोजन जाझेरी ।

उत्तर वैक्रिय करे तो जघन्य तो आंगुल को संख्याताऊ भाग, उत्कृष्टी लाख जोजन झाझेरी ।

पहली नारकी की अवगाहनां उत्कृष्टी ७॥। धनुष्य ६ आंगुल की।

दूजी नारकी की अवगाहनां साढ़ी पन्दरा १५॥ धनुष और १२ आंगुल की।

तीजी नारकी की अवगाहनां ३१ धनुष की।

चौथी नारकी की अवगाहनां ६२॥ धनुष की।

पांचवीं नारकी की अवगाहनां १२५ धनुष की।

छट्ठी नारकी की अवगाहनां २५० धनुष की।

सातवीं नारकी की अवगाहनां ५०० धनुष की।

जघन्य सातूं ही नारकी की आंगुलको असंख्यातवें भाग, उत्तर वैक्रिय करै तो जघन्य आंगुल को संख्यातवें भाग उत्कृष्टी आप आपसूं दूणी।

॥ देवतां की अवगाहनां ॥

१५ परमाधामी १० भुवनपती, बानव्यन्तर, त्रिभूमखा, ज्योतिषी, पहला तथा दूजा देवलोक पहिला किल्विषी की अवगाहनां ७ सात हाथ की।

तीसरा तथा चौथा देवलोक दूजा किल्विषीको ६ छव हाथ की।

नवलोकांतिक पांचवां तथा छठा देवलोक तीजा किल्विषी की अवगाहनां ५ पांच हाथ की।

सातवां तथा आठमां देवलोक का देवतां की अवगाहनां ४ च्यार हाथ की। नवमां, दशमां, इग्यारवां, तथा बारवां की ३ तीन हाथ की अवगाहनां होय। ९ नव ग्रैवेयक का देवां की दोय हाथ की।

पांच अनुत्तर विमान का देवां की अवगाहनां १ एक हाथ की।

देवता उत्तर वैक्रिय करै तो जघन्य तो आंगुल को संख्यातवों भाग, उत्कृष्टी लाख जोजन की अवगाहनां जाणो।

बारवां देवलोक से ऊपर का देव वैक्रिय करै नहीं।

च्यार थावर तथा असन्नी मनुष्य की जघन्य, उत्कृष्टी आंगुल को असंख्यातवां भाग।

वनस्पतिकाय की अव० जघन्य तो आंगुल को असंख्यातवों भाग, उत्कृष्टी हजार जोजन जाझेरी कमल फूल की अपेक्षा।

बेइन्द्री की अव० १२ जोजन की, उत्कृष्टी।

तेइन्द्री की अवगाहनां ३ कोस की, उत्कृष्टी।

चौरिन्द्री की अवगा० ४ कोस की, उत्कृष्टी।

अनें जघन्य आंगुल को असंख्यातवें भाग। तिर्यञ्च पंचेन्द्री का ५ भेद—

१ जलचर सन्नी असन्नी की १००० जोजन की।

२ थलचर सन्नी को ६ कोस को असन्नी को प्रत्येक कोस को।

३ उरपुर सन्नी को १००० जोजन को, असन्नी को प्रत्येक जोजन को।

४ भुजपर सन्नी को प्रत्येक कोस को, असन्नी को प्रत्येक धनुष को।

५ खेचर सन्नी असन्नी को प्रत्येक धनुष को तिर्यञ्च पंचेन्द्री उत्तर वैक्रिय करे तो जघन्य आंगुल के संख्यात में भाग उत्कृष्टी ९०० जोजन को करे, मोटी अवगाहनां वालो उत्तर वैक्रिय करै नहीं।

॥ सन्नी मनुष्य की अवगाहना ॥

५ भर्त ५ ऐरभर्त का मनुष्यां की, अवसर्पणी के पहिले आरे लागतां ३ कोस की उतरतां २ कोस की, दूजे आरे लागतां २ कोस की उतरतां १ कोसकी तीजे आरे लागतां १ कोस की उतरतां ५०० धनुष की चौथे आरे लागतां ५०० धनुष की उतरतां ७ हाथ की, पांचवें आरे लागतां ७ हाथ की उतरतां १ हाथ की छठे आरे लागतां १ हाथ की उतरतां १ हाथ मठेरी जाणवी।

इस तरह उत्सर्पणी में चढ़ती कहणी। वैक्रे लाख जोजन को करे ५ हेमवय, ५ अरुणवय का युगलियां

को १ कोस को; ५ हरिवास ५ रम्यक्क वासका को २ कोस को, ५ देवकुरू ५ उत्तर कुरूका को ३ कोस को, ५६ अन्तर द्वीपका को ८०० धनुष को ५ महा विदेह खेत्र का मनुष्यां को ५०० धनुष को।

सिद्धां को जघन्य १ हाथ ८ आंगुल को उत्कृष्टी ३३३ धनुष, १ हाथ ८ आंगुल को।

॥ इति अवगाहनां द्वारंम् ॥

॥ तीसरो संघयण द्वार ॥

संघयन ६ तेहना नाम वज्र ऋषभनाराच १, ऋषभनाराच २, नाराच ३, अर्ध नाराच ४, कीलको ५, छेवटो ६ एवं।

नारकी देवता में संघयण पावे नहीं।

५ थावर, ३ विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य, असन्नी तिर्यञ्च में संघयण १ छेवटो गर्भज मनुष्य तिर्यञ्च में संघयण पावे ६ छहुं ही, सर्व युगलिया त्रेसठशला का पुरुषों में संघयण वज्र ऋषभ नाराच पावे।

सिद्धां में संघयण पावे नहीं।

॥ इति संघयण द्वारम् ॥

॥ चौथो संठाण द्वार ॥

संस्थान ६—तेहना नाम—समचौरंस १, निगव-

परिमंडल २, सादिज ३, बावन्य ४, कुब्ज ५, हुण्डक ६ ७ सात नारकी, ५ थावर, ३ विकलेन्द्री असन्नी मनुष्य तिर्यञ्च में संठाण हुण्डक।

तिण में पांच थावर की बिगत।

पृथ्वीकाय को चन्द मसूर की दाल।

अप्पकाय को बुदबुदो।

तेउ काय को सुई को करनालो।

वाउ काय को ध्वजा पताका।

वनस्पति काय का नाना प्रकार का।

सर्व देवता, सर्व युगलिया, तथा त्रेसठ शलाका पुरुषां में समचौरंस संस्थान,

गर्भज मनुष्य तिर्यञ्च में ६ छहुंही, सिद्धा में पावे नहीं।

॥ इति संठाण द्वारम् ॥

॥ पांचमूं कषाय द्वार ॥

कषाय ४—क्रोध, मान, माया, लोभ।

२४ दण्डकां में कषाय ४ पावे, मनुष्य अकषाईपण होय सिद्धां में कषाय नहीं।

॥ इति कषाय द्वारम् ॥

॥ छट्ठो संज्ञा द्वार ॥

संज्ञा ४—आहार १ भय २ मैथुन संज्ञा ३ परिग्रह

संज्ञा ४ । २४ दंडकां में संज्ञा ४ पावे, मनुष्य असंज्ञी बहुता पणा होय सिद्धा में संज्ञा नहीं ।

॥ इति संज्ञा द्वारम् ॥

॥ सातम् लेश्या द्वार ॥

सात नारकी में पावे ३ माठी (द्रव्य लेश्या लेखवी) तेहनी विगत ।

पहली दूसरी में पावे १ कापोत ।

तीजी में कापोत वाला घणा, नीलवाला थोड़ा

चौथी में पावे १ नील ।

पांचमी में नील वाला घणा, कृष्ण वाला थोड़ा

छट्ठी में पावे एक कृष्ण ।

सातमी में पावे १ महाकृष्ण ।

भवनपति वानव्यन्तर, देवतां में लेश्या पावे ४ पद्म शुक्ल टली (द्रव्य लेखवी)

पृथ्वी अप्प वनस्पतिकाय में तथा सर्व युगलियां में लेश्या पावे ४ प्रथम ।

तेउ वाउकाय, ३ विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य, तिर्यंच में लेश्या पावे ३ माठी ।

जोतिषी, पहला दूजा देवलोक तथा पहिला किल्विषी में लेश्या पावे १ तेज ।

तीजा चौथा पांचवां देवलोक तथा दूजा किल्विषी में पावे १ पद्म।

तीजा किल्विषी तथा छट्ठा देवलोक से सर्वार्थ सिद्धतांई पावे १ शुक्ल। कितलाइक मनुष्य अलेशी पण होय सिद्धां में लेश्या नहीं।

सन्नी मनुष्य तिर्यञ्च में लेश्या पावे ६ छहूं ही।

॥ इति लेश्या द्वारम् ॥

॥ आठमूं इन्द्रिय द्वार ॥

इन्द्री ५ श्रोत, चक्षु, घ्राण, रस, स्पर्श एवं ५ ७ नारकी, सर्व देवता, गर्भज मनुष्य, गर्भज तिर्यञ्च असन्नी मनुष्य असन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्री सर्व युगलियां में इन्द्री ५ पावे। ५ थावर में इन्द्री १ स्पर्श पावे, बेइन्द्री में २ इन्द्री होय—स्पर्श रस, तेइन्द्री में ३ इन्द्री होय—स्पर्श रस घ्राण, चउरिन्द्री में ४ होय श्रोतेन्द्री बिना। मनुष्य नो इन्द्रिया पण होय, सिद्धां के इन्द्री होय ही नहीं।

॥ इति इन्द्रिय द्वारम् ॥

॥ नवमूं समुद्घात द्वार ॥

समुद्घात ७ वेदनी १ कषाय २ मरणान्त ३ वैक्रिय ४ तेजस ५ आहारिक ६ केवल ७।

सात नारकी बाउकाय में चार पहली समुद्घात पावे, भुवनपति वानव्यन्तर जोतषीं बारवां देवलोक तांई का देवता गर्भेज तिर्यञ्च में समुद्घात ५ आहारिक केवल टली ४ थावर ३ विकलेन्द्री असन्नी मनुष्य असन्नी तिर्यञ्च सर्व युगलिया बारवां से ऊपर का देवता में समुद्घात ३ पावे पहली। गर्भेच मनुष्यां में समुद्घात ७ सातों ही पावे। केवल्यां में १ केवल समुद्घात पावे। तीर्थंकर समुद्घात करे नहीं, सिद्धां के समुद्घात नहीं।

॥ इति समुद्घात द्वारम् ॥

॥ दशमूं सन्नी असन्नी द्वार ॥

सन्नी के मन असन्नी के मन होय नहीं। ७ नारकी सर्व देवता गर्भेज मनुष्य, गर्भेज तिर्यञ्च युगलिया सन्नी होय। ५ थावर, ३ विकलेन्द्री, छमुर्छिम मनुष्य, छमुर्छिम तिर्यञ्च ये असन्नी होय। मनुष्य नो सन्नी नो असन्नी पण होय, सिद्ध सन्नी असन्नी नहीं होय।

॥ इति सन्नी असन्नी द्वारम् ॥

॥ इग्यारमूं वेद द्वार ॥

३—वेद, स्त्री १ पुरुष २ नपुंसक ३। ७ नारकी,

५ थावर, ३ विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य, असन्नी तिर्यञ्च में वेद १ नपुंसक होय। भुवनपति वानव्यन्तर, जोतिषी, पहला दूजा देवलोक, पहला किल्विषी, सर्व युगलिया में वेद २ स्त्री तथा पुरुष होय। तीजा देव लोक सूं सर्वार्थ सिद्धतांई वेद १ पुरुष होय गर्भेज मनुष्य, गर्भेज तिर्यञ्च में वेद तीनूं होय। मनुष्य अवेदी पण होय। सिद्धां के वेद नहीं।

॥ इति वेद द्वारम् ॥

॥ बारमूं पर्याय द्वार ॥

पर्याय ६ आहार १, शरीर २, इन्द्रिय ३, श्वशो-श्वाश ४, भाषा ५, मन पर्याय ६, एवं ६।

सर्व देवता में पावे ५ पर्याय। मन भाषा भेली लेखवी ५ थावर में पर्याय ४ होय पहली। असन्नी मनुष्य में पर्याय ३॥ तीन तो पहली आधी में श्वाश लेवे तो उश्वाश नहीं उश्वाश लेवे तो श्वाश नहीं ३ विकलेन्द्री, चोइन्द्री, समुर्छिम तिर्यञ्च पंचेंद्री में पर्याय ५ पावे मन टल्यो। सिद्धां में पर्याय पावे नही। सन्नी मनुष्य तिर्यंच सर्व युगलिया ७ नारकी में पावे छः ६।

॥ इति पर्याय द्वारम् ॥

॥ तेरमूं दृष्टि द्वार ॥

दृष्टि ३ सम्यक् १ मिथ्यात २ सममिथ्या दृष्टि ३ एवं ३ होय ।

७ नारकी, १२ बारमां देवलोक तांई देवता, गर्भज मनुष्य गर्भज तिर्यञ्च मे दृष्टि तीनूं ही होय । ५ थावर में, असन्नी मनुष्य में, ५६ अन्तरद्वीप का युगलिया में दृष्टि १ मिथ्यात्व दृष्टि पावे । ६ ग्रैवेकका देवतां में, ३ विकलेन्द्री में, असन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्री में, ३० अकर्म भूमिका युगलिया में दृष्टि २ सम्यक् १, मिथ्या २ पावे ५ अनुत्तर विमान का देवता सिद्धां में दृष्टि १ सम्यक् पावे ।

॥ इति दृष्टि द्वारम् ॥

॥ चौदमूं दर्शन द्वार ॥

दर्शन ४—चक्षु १, अचक्षु २, अवधि ३ और केवल दर्शन एवं दर्शन ४ जाणवा ।

७ नारकी, सर्व देवता में गर्भज तिर्यञ्च में दर्शन चक्षु १, अचक्षु १, अवधि ३ । गर्भज मनुष्यां में दर्शन ४ होय, ५ थावर बेइन्द्री, तेइन्द्री में, दर्शन १ अचक्षु पावे । समुर्छिम तिर्यंच, मनुष्य, सर्व युगलियां

में दर्शन २—चक्षु १ अचक्षु २ सिद्धां में १ केवल दर्शन पावे।

॥ इति दर्शन द्वारम् ॥

॥ पन्द्रमूं ज्ञान द्वार ॥

ज्ञान ५—मति १, श्रुति २, अवधि ३, मन पर्यव ४, केवल ज्ञान एवं ५।

७ नारकी—सर्व देवता, गर्भेज तिर्यञ्च में ज्ञान ३ पावे पहला। गर्भेज मनुष्यां में ज्ञान ५ पावे। ५ थावर, असन्नी मनुष्य, ५६ अन्तर द्वीप का युगलियां में ज्ञान नहीं पावे। ३ विकलेन्द्री, असन्नी पंचेन्द्री तिर्यञ्च में ३० अकर्म भूमिका युगलियां में ज्ञान २ पावे,, मति, श्रुति। सिद्धां में १ केवल ज्ञान ही पावे।

॥ इति ज्ञान द्वारम् ॥

॥ सोलमूं अज्ञान द्वार ॥

अज्ञान ३—मति अज्ञान १, श्रुति अज्ञान २, विभङ्ग अज्ञान एवं ३।

७ नारकी, ग्रैवेक तांई का देवता गर्भेज तिर्यंच गर्भेज मनुष्यां में अज्ञान ३ ही पावे। ५ थावर, ३ विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य, असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्री, सर्व युगलियां में अज्ञान २ ही पावे मति अज्ञान १,

श्रुत अ० २, अनुत्तर का देवता में सिद्धां में अज्ञान पावै नहीं।

॥ इति अज्ञान द्वारम् ॥

॥ १७ सतरमूं योग द्वार ॥

योग १५—मन का ४, सत्य मन १ असत्य मन २ मिश्र मन ३ व्यवहार मन एवं ४ वचन का जोग ४—सत्य वचन १ असत्य वचन २ मिश्र वचन ३ व्यवहार वचन एवं ४। काया का जोग ७—औदारिक १ औदारिक को मिश्र २ वैक्रिय ३ वैक्रिय को मिश्र ४ आहारिक ५ आहारिक को मिश्र ६ कार्मण ७ एवं १५।

७ नारकी सर्व देवता में जोग पावै ११ मन का ४, वचन का ४, वैक्रिय ९, वैक्रिय को मिश्र १० कार्मण ११, सर्वयुगलियां में योग पावै ११ मनका ४, वचन का ४, औदारिक ९, औदारिक को मिश्र १० कार्मण ११ वाउकाय बरजीने, ४ स्थावर, असन्नी मनुष्य में योग पावै ३ औदारिक औदारिक को मिश्र कार्मण। तीन विकलेन्द्री, असन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्री में पावै ४ औदारिक १, औदारिक मिश्र २ व्यवहार भाषा ३ कार्मण ४। वाउकाय में योग पावै ५—औदारिक १, औदारिक मिश्र २, वैक्रे ३ वैक्रे मिश्र

४, कार्मण ५, गर्भज तिर्यञ्च, मनुष्यणी में योग पावै १३ आहारिक आहारिक को मिश्र टल्यो, गर्भज मनुष्यों में पावे १५ ही, चौदमें गुणठाणें अयोगी होय। सिद्धां मे जोग पावे नहीं।

॥ इति योग द्वारम् ॥

॥ १८ अठारमूं उपयोग द्वार ॥

७ नारकी, ९ ग्रैवेक तांई का देवता, गर्भज तिर्यंच मे उपयोग पावै ९ ज्ञान तो ३ मति, श्रुति, अवधि। अज्ञान ३ मति अज्ञान, श्रुति अज्ञान, विभङ्ग अज्ञान। दर्शन ३ चक्षु, अचक्षु, अवधि।

५ थावर मे पावै ३ मति श्रुति अज्ञान तथा अचक्षु दर्शन।

असन्नी मनुष्य, तथा ५६, अन्तरद्वीप का युगलिया में उपयोग पावै ४ मति श्रुति अज्ञान तथा चक्षु अचक्षु दर्शन।

बेन्द्री तेन्द्री में उपयोग पावे ५—मति श्रुति ज्ञान २, मति श्रुति अज्ञान २, तथा अचक्षु दर्शन।

चौरिन्द्री, असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्री, ३०, अकर्म भूमि का युगलिया में, उपयोग पावै ६—मति श्रुति ज्ञान २ अज्ञान २, चक्षु अचक्षु दर्शन एवं ६। पांच अणुत्तर में पावे ६ तीन ज्ञान, ३ दर्शन।

गर्भेज मनुष्यां में उपयोग पावे १२ सिद्धां में उपयोग पावे २ केवल ज्ञान १, केवल दर्शन १।

॥ इति उपयोग द्वारम् ॥

॥ १९ उगणीसमूं आहार द्वार ॥

उन्नीस दंडक का जीव तो छहुं ही दिशा को आहार लेवे।

पांच थावर तीन च्यार पांच छव दिशि को आहार लेवे।

केतला मनुष्य अणआहारी पण होय, सिद्ध भगवन्त आहार लेवे नहीं।

॥ इति आहार द्वारम् ॥

॥ बीसमूं उत्पति द्वार ॥

७ नारकी, आंठवां देवलोक तांई का देवता, तेउ, वाउ काय, ३ विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य तिर्यञ्च सर्व युगलियां में उत्पत्ति पावे गति २ की. मनुष्य तिर्यञ्च।

नवमां देवलोक से सरवार्थ सिद्ध तांई का देवता में उत्पत्ति पावे १ मनुष्य गति की।

पृथ्वी अप्प वनस्पतिकाय में उत्पत्ति पावे ३ गतिकी (नारकी टली)

गर्भज मनुष्य तिर्यञ्च में उत्पत्ति च्यारूं ही गति की।

सिद्धां में १ मनुष्य गति की।

॥ इति उत्पत्ति द्वारम् ॥

॥ इकवीसमूं स्थिति द्वार ॥

नारकी की स्थिति।

१ पहली नारकी की स्थिति जघन्य १० हजार वर्ष की उत्कृष्टि १ सागर की।

२ दूसरी नारकी की जघन्य १ सागर की उत्कृष्टी ३ सागर की।

३ तीसरी नारकी की जघन्य ३ सागर की उत्कृष्टी सात सागर की।

४ चौथी नारकी की जघन्य ७ सागर की उत्कृष्टी १० सागर की।

५ पांचवीं की जघन्य १० उत्कृष्टी १७ सागर की

६ छट्ठी नारकी की जघन्य १७ उत्कृष्टी २२ सागर की।

७ सातमी नारकी की जघन्य २२ उत्कृष्टी ३३।

भवनपति देवतां की स्थिति—

दक्षिण दिशि का असुर कुमार की जघन्य १०

हजार वर्ष की उत्कृष्टी १ सागर की, यांकी देव्यां की जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्टी ३॥ पल्योपमकी।

दक्षिण दिशि का ९ नो निकाय का देवतां की जघन्य १० हजार वर्ष की उत्कृष्टी १॥ पल्योपम की. यांकी देव्यां की जघन्य १० हजार वर्ष उत्कृष्टी ॥। पौण पल्योपमकी।

उत्तर दिशिका असुर कुमारांकी जघन्य १० हजार वर्ष की उत्कृष्टी १ सागर जाझेरी यांकी देव्यां की जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्टी ४॥ साडा च्यार पल्योपम की।

उत्तर दिशि का ९ निकाय का देवतां की जघन्य १० हजार वर्ष की उत्कृष्टी देश ऊणों दोय पल्योपम की, देव्यां की जघन्य १० हजार वर्ष की उत्कृष्टी देश ऊणों १ पल्योपम की।

वानव्यन्तर देवतां की स्थिति।

जघन्य १० हजार वर्ष की उ० १ पल्योपम की, यांकी देव्यां की जघन्य दश हजार वर्ष की उ० ॥ आधा पल्योपम की, त्रिभूमका देवां की भी इतनी ही।

जोतषी देवां की स्थिति।

चन्द्रमा को जघन्य पाव पल्योपम को उत्कृष्टो १ पल्योपम एक लाख वर्ष अधिक, यांकी देव्यां को जघन्य पाव पल्योपम को उत्कृष्टो आधा पल्य ५० हजार वर्ष को, सूर्य को जघन्य पाव पल्योपम को उत्कृष्टो १ पल्योपम १ हजार वर्ष अधिक, यांकी देव्यां को जघन्य पाव पल्य को उत्कृष्टो ॥ आधी पल्य पांच सौ वर्ष अधिक। ग्रहां को जघन्य पाव पल्य को उ० १ पल्य को यांकी देव्यां को ज० पाव पल्य, उत्कृष्टो ॥ आधी पल्योपम को।

नक्षत्रां को ज० पाव पल्य उ० ॥ आधी पल्य को, यांकी देव्यां को ज० पाव पल्य, उ० पाव पल्य जाझेरो।

तारां को ज० पल्य को आठमूं भाग उ० पाव पल्य को, यांकी देव्यां को ज० अधपाव पल्य उ० अधपाव पल्य जाझेरो।

वैमानिक देवतां की स्थिति।

१ पहला देवलोक में जघन्य १ पल्योपम उत्कृष्टो २ सागर को, यांकी परिग्रह देव्यां को ज० १ पल्य उ० ७ पल्य, अपरिग्रह देव्यां को ज० १ पल्य उ० ५० पल्योपम को।

२ दूसरा देवलोक में ज० १ पल्य जाभेरी उ० २ सागर जाभेरी, यांकी देव्यां की जघन्य १ पल्य जाभेरी, उ० परिग्रही की ६ पल्य की, अपरिग्रही की ५५ पल्योपम की ।

३ तीसरा देवलोक में ज० २ सागर उ० ७ सागर की

४ चौथा देवलोक की ज० २ सागर जाभेरी उ० ७ सागर जाभेरी ।

५ पांचवां की ज० ७ सागर उ० १० सागर की ।

६ छट्ठा देवलोक का देवतां की ज० १० सागर उ० १४ सागर की ।

७ सातवां की ज० १४ उ० १७ सागर की ।

८ आठमां की ज० १७ उ० १८ सागर की ।

९ नवमां की ज० १८ उ० १९ सागर की ।

१० दशमां की ज० १९ उ० २० सागर की ।

११ इग्यारमां की ज० २० उ० २१ सागर की ।

१२ बारमां की ज० २१ उ० २२ सागर की ।

१३ पहिला ग्रैवेयक की ज० २२ उ० २३ ।

१४ दूसरा ग्रैवेयक की ज० २३ उ० २४ ।

१५ तीसरा ग्रैवेयक की जघन्य २४ उ० २५ ।

१६ चौथा ग्रैवेयक की जघन्य २५ उ० २६ ।

१७ पांचमां ग्रैवेयक की जघन्य २६ उ० २७ ।

१८ छट्ठा ग्रैवेयक को जघन्य २७ उ० २८।

१९ सातमां ग्रैवेयक को जघन्य २८ उ० २९।

२० आठमां ग्रैवेयक को जघन्य २९ उ० ३०।

२१ नवमां ग्रैवेयक को जघन्य ३० उ० ३१।

२२ विजय १, विजयन्त २, जयन्त ३ अपराजित ४
ए च्यार अनुतर वेमान को जघन्य ३१ उत्कृष्टो
३३ सागर।

२३ सरवार्थ सिद्धिका देवां को जघन्य ३३ उत्कृष्टो ३३
सागर।

नव लोकान्ति देवतां को स्थिति ८ सागर को,
पहिला किल्विषो को ३ पल्य; दूजा को ३ सागर
तीजा को १३ सागर को

पांच स्थावर की स्थिति जघन्य अन्तर मुहूर्त्त की उत्कृष्टी पृथ्वीकाय की २२ हजार वर्ष की, अप्पकाय की ७ हजार वर्ष की तेउकाय की ३ दिन रात की, वायु काय की ३ हजार वर्ष की वनस्पति काय की १० हजार वर्ष की।

तीन विकलेन्द्री की जघन्य अन्तर मुहूर्त्त की, उत्कृष्टी बेइन्द्री की १२ वर्ष की तेन्द्री की ४९ दिन रात की, चौइन्द्री की ६ महीना की। तिर्यञ्च पंचेन्द्री की जघन्य अन्तर मुहूर्त्तकी उत्कृष्टी जलचर सन्नी

असन्नी को १ कोड़ पूर्वको, थलचर सन्नीको ३ पल्योपम को असन्नी को ८४ हजार वर्ष को, उरपुर सन्नी को क्रोड़ पूर्व को, असन्नी को ५३ हजार वर्षको, भुजपर सन्नी को कोड़ पूर्व को, असन्नी को ४२ हजार वर्ष को, खेचर सन्नी को पल्योपम के असंख्यातमूं भाग, असन्नी को ७२ हजार वर्ष को। असन्नी मनुष्य को ज० उ० अन्तर मुहूर्त्त को।

सन्नी मनुष्य की स्थिति, ज० अन्तर मुहूर्त्त को उ० ५ भर्त ऐरभर्त का मनुष्यां की अवसर्पिणी के पहिलो आरो लागतां ३ पल्य को, उतरतां २ पल्य को, दूसरो लागतां २ पल्य को, उतरतां १ पल्य को, तीसरो लागतां १ पल्य को, उतरतां क्रोड़ पूर्व को चौथो आरो लागतां क्रोड़ पूर्व को, उतरतां १२५ वर्ष को पांचमूं लागतां १२५ वर्ष को उतरतां २० वर्ष को, छट्ठो लागतां २० वर्ष को। उतरतां १६ वर्ष को। उत्सर्पणी काल में इमहिज चढ़ती कहणी; पांच महाविदेह खेत्रां को १ क्रोड़ पूर्व को उत्कृष्टी स्थिति।

युगलियां की स्थितिः—

५ हेमवय, ५ अरणवयक्षां को ज० देश उणो १ पल्य उ० १ पल्य को।

५ हरिवास; ५ रम्यकवासकां की ज० देशउणो २ पल्य उ० २ पल्य की।

५ देवकुरु, ५ उत्तरकुरुकां की ज० देशउणो ३ पल्य उ० ३ पल्य की।

५६ अन्तर द्वीपकां की पल्योपम को असंख्यातमूं भाग की।

एक एक सिद्धां की आदि नहीं अन्त नहीं, एक एक की आदि छै पण अन्त नहीं।

॥ इति स्थिति द्वारम् ॥

॥ २२ मूं समोह्या असमोह्या द्वार ॥

समोह्या तो समुद्घात फोड़ी ताणाविजो करी मरे, असमोह्या बिना समुद्घाते गोलीका भड़ाका वत् मरे।

२४ दण्डकां का जीव दोनूं प्रकार का मरण करे।

॥ इति समोह्या असमोह्या द्वारम् ॥

॥ २३ मूं चवन द्वार ॥

६ नारकी, आठमां देवलोक तांई का देवता पृथ्वी अप्प बनस्पति काय, ३ बिकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य, में चवन दोय गति की मनुष्य तिर्यञ्च।

नवमां देवलोक से सरवार्थ सिद्ध तांई का देवतां

में चवन १ मनुष्य की। सातमी नारकी में तथा तेउ वाऊ में चवन १ तिर्यञ्च गति की ही।

गर्भज मनुष्य तिर्यञ्च, असन्नी तिर्यञ्च, पंचेन्द्री में चवन च्यारूं ही गति की, युगलिया में चवन १ देव गति की सिद्धां में चवन पावे नहीं।

॥ इति चवन द्वारम् ॥

॥ २४ मूं गतागति द्वार ॥

पहली से छट्ठी नारकी तांई गति २ दण्डक, आगति २ दण्डकां की मनुष्य, तिर्यञ्च पंचेन्द्री।

सातमी नारकी में आगति २ दण्डकां की, गति तिर्यञ्च पंचेन्द्री की, गत जाणवी।

भवनपति, वानव्यन्तर, ज्योतिषी, पहिला दूजा देव लोक तथा पहिला किलविषी देवतां की, आगत २ दण्डकां की (मनुष्य तिर्यञ्च की) गति ५ दण्डकां की (तिर्यञ्च मनुष्य पृथ्वी अप्प वनस्पति की

तीजा देवलोक से आठमां देवलोक तांई गतागत २ दण्डकां की (मनुष्य तिर्यञ्च) नवमां देवलोक से सरवार्थ सिद्धितांई गतागत १ मनुष्य की।

पृथ्वी अप्प वनस्पति काय की आगत २३ दण्डकां की (नारकी टली) गति १०—दण्डकां की ५

स्थावर, ३ विकलेन्द्री ८, मनुष्य ६, तिर्यञ्च एवं १०की।

तेउ वायुकाय में आगत १० दण्डकां की, गति ६ दण्डकां की, मनुष्य टल्यो, विकलेन्द्री में १० की आगत १० की गति ऊपर वत्।

असन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्रीमें आगति १०दण्डकांकी ऊपर वत् गति २२ दण्डकां की, २ जोतिषी वैमानिक टल्या।

सन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्री में आगति २४ की गति २४ की।

असन्नी मनुष्य में आगत ८ दण्डकां की, पृथ्वी अप्प वनस्पति तीन विकलेन्द्री मनुष्य तिर्यञ्च एवं ८, अनें गति १० दण्डकां की पूर्ववत्।

गर्भज मनुष्य में आगति २२ दण्डकां की तेउ वाउ टल्या, गति २४ दंडका की, ३० अकर्म भूमि का युगलियां में आगति २ दंडकां की मनुष्य तिर्यंच गति १३ दण्डकां की १० तो भवनपतिका वानव्यन्तर ११ जोतिषी १२ वैमानिक १३ एवं।

५७ अन्तर द्वीप का युगलियां में आगति २ दण्डकां की ऊपरवत् गति ११ दण्डकां की १० तो भवनपति का १ वानव्यन्तर को ११।

सिद्धां में आगति मनुष्य की गति नहीं।

॥ इति गतागत द्वारम् ॥

॥ २५ मूं प्राण द्वार ॥

७ नारकी सर्व देवता गर्भज मनुष्य तिर्यञ्च सर्व युगलिया में प्राण १० दशूं ही पावे, ५ स्थावर में प्राण ४ पावे, स्पर्श इन्द्री बल १, काय २, श्वासोश्वास ३, आउखो ४ एवं।

बेन्द्री में पावै ६, तेन्द्री में पावे ७, चौइन्द्री में पावे ८ प्राण।

असन्नी मनुष्य में पावे ७॥ श्वास लेवे तो उश्वास नहीं असन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्री में पावे ९ मन टल्यो।

१३ में गुणठाणे पावे ५ पांच इन्द्रियां का टल्या।

१४ में गुणठाणे पावे १ आउखो बल, सिद्धां में प्राण पावे नहीं।

॥ इति प्राण द्वारम् ॥

॥ २६ मूं योग द्वार ॥

नारकी देवता मनुष्य सन्नी तिर्यञ्च युगलियां में योग पावे ३ मन वचन काय का।

पांच स्थावर असन्नी मनुष्य में १ कायको पावे।

तीन विकलेन्द्री असन्नी पंचेन्द्री में योग पावे २ वचन काया।

चौदमां मनुष्य आयोगी होय, सिद्धांमें योग पावे नहीं।

॥ इति लघुदण्डकम् ॥

॥ अथ अल्पा बोहत ॥

१ सर्व थोड़ा गर्भज मनुष्य ।

२ तेहथी मनुष्यणी २७ गुणी ।

३ ,, बादर तेउकायका पर्याप्ता असंख्यात गुणा ।

४ ,, पांच अनुत्तर का देवता असंख्यात गुणा ।

५ ,, ऊपरला ग्रैवेयक का देवता संख्यात-गुणा ।

६ ,, बीचला ग्रैवेयक का देवता संख्यात-गुणा ।

७ ,, नीचला त्रिक का संख्यात गुणा ।

८ ,, १२-मां देवलोक का संख्यात गुणा ।

९ ,, ११ मां देवलोक का संख्यात गुणा ।

१० ,, १० मां का संख्यात गुणा ।

११ ,, ९ मां का संख्यात गुणा ।

१२ ,, सातमी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणा ।

१३ ,, छट्ठी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणा ।

१४ ,, आठमां देवलोकका देवता असंख्यात गुणा ।

१५ ,, सातमां देवलोक का देवता असंख्यात गुणा ।

१६ पांचमीं नारकी का नेरिया असंख्यात गुणा ।

१७ तेहथी छट्ठा देवलोक का देवता असंख्यात गुणा।
१८ ,, चौथी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणा।
१९ ,, पांचवां देवलोक का देवता असंख्यात गुणा।
२० ,, तीजी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणा।
२१ ,, चौथा देवलोक का देवता असंख्यात गुणा।
२२ ,, तीजा देवलोक का देवता असंख्यात गुणा।
२३ ,, दूजी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणा।
२४ ,, छमूर्छम मनुष्य असंख्यात गुणा।
२५ ,, दूजा देवलोक का देवता असंख्यात गुणा।
२६ ,, दूजा की देव्यां संख्यात गुणी।
२७ ,, पहला देवलोक का देवता संख्यात गुणा।
२८ ,, पहला की देव्यां संख्यात गुणी।
२९ ,, भगवनपति देवता असंख्यात गुणा।
३० ,, भवनपति की देव्यां संख्यात गुणी।
३१ ,, पहली नारकी का नेरिया असंख्यात गुणा।
३२ ,, खेचर पुरुष असंख्यात गुणा।
३३ ,, खेचरणी संख्यात गुणी।
३४ ,, थलचर पुरुष संख्यात गुणा।
३५ ,, थलचरणी संख्यात गुणी।
३६ ,, जलचर पुरुष संख्यात गुणा।

३७ तेइथी जलचरणी संख्यात गुणी ।

३८ ,, वानव्यन्तर देवता संख्यात गुणा ।

३९ ,, वानव्यन्तर देवी संख्यात गुणी ।

४० ,, जोतिषी देवता संख्यात गुणा ।

४१ ,, जोतिषीणी देवी संख्यात गुणी ।

४२ ,, खेचर नपुन्सक संख्यात गुणा ।

४३ ,, थलचर नपुन्सक संख्यात गुणा ।

४४ ,, जलचर नपुन्सक संख्यात गुणा ।

४५ ,, चौइन्द्री का पर्याप्ता संख्यात गुणा

४६ ,, पचेन्द्री का पर्याप्ता विशेषाईया ।

४७ ,, बेन्द्री पर्याप्ता विशेषाईया ।

४८ ,, तेन्द्री पर्याप्ता विशेषाईया ।

४९ ,, पंचेन्द्री पर्याप्ता असंख्यात गुणा ।

५० ,, चौइन्द्री अपर्याप्ता विशेषाईया ।

५१ ,, तेन्द्री अपर्याप्ता विशेषाईया ।

५२ ,, बेन्द्री अपर्याप्ता विशेषाईया ।

५३ ,, बादर प्रत्येक वनस्पति अपर्याप्ता असंख्यात गुणा ।

५४ ,, बादर निगोद पर्याप्ता असंख्यात गुणा ।

५५ ,, बादर पृथ्वी का पर्याप्ता असंख्यात गुणा ।

५६ ,, बादर अप्पकाय पर्याप्ता असंख्यात गुणा ।

५७ तेहथी बादर वायुकाय पर्याप्ता असंख्यात गुणा ।
५८ ,, बादर तेउकाय अपर्याप्ता असंख्यात गुणा ।
५९ ,, बादर प्रत्येक शरीरो वनस्पति अपर्याप्ता असंख्यात गुणा ।
६० ,, बादर निगोद अपर्याप्ता असंख्यात गुणा ।
६१ ,, बादर पृथ्वीकाय अपर्याप्ता असंख्यात गुणा ।
६२ ,, बादर अप्पकाय अपर्याप्ता असंख्यात गुणा ।
६३ ,, बादर वायुकाय अपर्याप्ता असंख्यात गुणा ।
६४ ,, सूक्ष्म तेउकाय अपर्याप्ता असंख्यात गुणा ।
६५ ,, सूक्ष्म पृथ्वी अपर्याप्ता विशेषाईया ।
६६ ,, सूक्ष्म अप्प अपर्याप्ता विशेषाईया ।
६७ ,, सूक्ष्म वायु अपर्याप्ता विशेषाईया ।
६८ ,, सूक्ष्म तेऊ पर्याप्ता संख्यात गुणा ।
६९ ,, सूक्ष्म पृथ्वी अर्याप्ता विशेषाईया ।
७० ,, सूक्ष्म अप्प पर्याप्ता विशेषाईया ।
७१ ,, सूक्ष्म वायु पर्याप्ता विशेषाईया ।
७२ ,, सूक्ष्म निगोद अपर्याप्ता असंख्यात गुणा ।
७३ ,, सूक्ष्म निगोद पर्याप्ता संख्यात गुणा ।
७४ ,, अभव्य जीव अनन्त गुणा ।
७५ ,, पड़वाई समद्दृष्टि अनन्त गुणा ।

७६ तेहथी सिद्ध भगवन्त अनन्त गुणा ।

७७ ,, बादर वनस्पति पर्याप्ता अनन्त गुणा ।

७८ ,, बादर पर्याप्ता विशेषाईया ।

७९ ,, बादर वनस्पति अपर्याप्ता असंख्यात गुणा ।

८० ,, बादर अपर्याप्ता विशेषाईया ।

८१ ,, सर्व बादर विशेषाईया ।

८२ ,, सूक्ष्म वनस्पति अपर्याप्ता असंख्यात गुणा ।

८३ ,, सूक्ष्म अपर्याप्ता विशेषाईया ।

८४ ,, सूक्ष्म वनस्पति पर्याप्ता संख्यात गुणा ।

८५ ,, सूक्ष्म पर्याप्ता विशेषाईया ।

८६ ,, सर्व सूक्ष्म विशेषाईया ।

८७ ,, भव्य जीव विशेषाईया ।

८८ ,, निगोदिया विशेषाईया ।

८९ ,, वनस्पति विशेषाईया ।

९० ,, एकेन्द्री विशेषाईया ।

९१ ,, तिर्यञ्च विशेषाईया ।

९२ ,, मिथ्याती विशेषाईया ।

९३ ,, अव्रती विशेषाईया ।

९४ ,, सकषाई विशेषाईया ।

९५ तेरह्यो छद्मस्थ विशेषाईया ।

९६ ,, संयोगी विशेषाईया ।

९७ ,, संसारी जीव विशेषाईया ।

९८ ,, सर्व जीव विशेषाईया ।



॥ अथ श्रावक प्रतिक्रमण ॥

❁ अर्थ सहित ❁

णमो अरिहंताणं	णमो सिद्धाणं	णमो
नमस्कार थावो अरिहन्त भगवन्त नें	नमस्कार थावो श्रीसिद्ध भगवान नें	नमस्कार थावो
आयरियाणं	णमो उवज्झायाणं	णमोलोए
श्रीआचार्य महाराज नें	नमस्कार थावो श्री उपाध्याय महाराज नें	नमस्कार थावो लोक के विषै
सव्व साहूणं ।		
सर्व साधू महाराजों नें		

॥ अथ तिक्खुत्ता की पाटी ॥

❁ अर्थ सहित ❁

तिक्खुत्तो	आयाहिणं	पयाहिणं	वंदामि	नमं
तीन बार	दाहिणा-पासाथी	प्रदक्षिणा देई	वंदना करूं	नमस्कार
सामी	सक्कारेमि	समाणेमि	कल्लाणं	मंगलं
करूं	सत्कार करूं	सम्मान करूं	कल्याणकारी	मङ्गलकारी

देवयं चेइयं पज्जुवासामी मत्थएणं वंदामि
धर्म देव चित्त प्रसन्न सेवा करूं मस्तकेकरी वंदन
कारी ज्ञानवंत नमस्कार करूं

॥ इच्छामि पडिक्कमिउ ॥

इच्छामि पडिक्कमिउ इरियावहीयाये
इच्छूं. वांछू प्रतिक्रमवो ते मार्गनें विषे चालतां
निवर्त्तवो

विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे
विराधना हुई होय जातांआतां प्राणी बेइन्द्रियादिनो
आक्रमण करणूं दाबणूं

बियक्कमणे हरियक्कमणे उसा उत्तिङ्ग पणग
बीज जीव दाबणूं हरि लीलीको ओसको कीड़ाका नीलण
दाबणूं बिल फूलण

दग मट्टी मक्कडासंताणा संकमणे
पाणीका माट्टीका जीव मकड़ीका जाला मईवो संक्रमवो

जेमे जीवा विराहिया एगेंदिया बेइन्द्रिया
मैं ज्यो जीव विराध्या होय एकेन्द्री जीव बेइन्द्र जीव

तेइन्द्रिया चउरिंदिया पंचेंदिया अभि
तेइन्द्री जीव चौइन्द्री जीव पचेन्द्री जीव सन्मुख

हया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टीया
आताहण्यां धूलसे ढक्या रगड्या घातकरा संघटेकरी

परियाविया	किलामिया	उद्दविया	ठाणा
परिताप्या	कीलामना उपजाई	उपद्रव किया	एक स्थान से
उट्ठाणा	संकामिया	जीवियाउ	ववरोविया
दूसरे स्थान	पटक्या	जीवत से	नाश किया

तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥
तेहनो मिच्छामि दुकडं ।

॥ अथ तस्सुत्तरी ॥

तस्सुत्तरी	करणेणं	पायच्छित	करणेणं
तेहना उत्तर प्रधान	करवा	प्रायश्चित्त	करवो
विसोही	करणेणं	विसल्ली	करणेणं
विशुद्ध	करवो	सल्य रहित	करवो
पावाणं	कम्माणं	निग्घाय	णट्ठाए
पाप	कर्मका	नाश करवा	निमित्त
ठामि	करेमि	काउसग्गं	अनत्थ
स्थिर हुई	करू छूं	काय उत्सर्ग ध्यान	इणमुजब आधारे
ऊससिएणं	नीससिएणं	खासिएणं	छीएणं
ऊंचा श्वास	नीचा श्वास	खांसी	छींक
जंभाइएणं	उड्डुएणं	वायनिसग्गेणं	भमलीए
उबासी	डकार	अधोवायु	भोंळ

पित्त मुच्छाए सुहुमेहिं अंग संचालेहिं
पित्तकर मूर्च्छा सूक्ष्मपणे शरीर को हालवो

सुहुमेहिं खेल संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं
सूक्ष्मपणे श्लेष्मको संचार सूक्ष्म दृष्टि चलावो

एव माइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहीउ
इत्यादिक यह म्हारे आगारसे ध्यान भागे नहीं विराधना नहीं

हुज्ज मे काउसग्गो जाव अरिहं
होज्यो मने काउसग्ग ते ध्यान जिहां तक अरि

ताणं भगवन्ताणं नमुक्कारेणं नपारेमि
हन्त भगवन्त ने नमस्कार करी ने नहीं पारु

ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं
तठा तांई शरीर से स्थान से मौन करी ध्यान करी

अप्पाणं वोसरामि ॥ इति ॥
आत्मा ने पाप थकी बोसराऊं

॥ अथ लोगस्स ॥

लोगस्स उज्जोअगरे धम्म तित्थयरेजिणे
लोक के विषे उद्योतकारी धर्म तीर्थ करता जिण

अरिहन्ते कित्तइस्सं चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥
अरिहन्तां की कीरति करूं चौवीस वे केवली

उसभ मजीयं च वंदे संभवमभिनन्दणं च
ऋषभ अजित पुनः वंदू संभवनाथ अभिनन्दनजी पुनः

सुमइं च पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं
सुमति पुनः पद्मप्रभः सुपार्श्व जिन पुनः चंद्रप्रभू

वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंत सीयल सिज्जंस
वंदू सुविधनाथ पुनः दूसरो नाम पुष्पदंत शीतल श्रेयांस

वासुपुज्जं च विमल मणंत च जिणं धम्मं
वासुपूज्य पुनः विमलनाथ अनन्तनाथ पुनः जिन धर्मनाथ

शन्तिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथु अरं च मल्लिं
शान्ति पुनः वंदू कुन्थु नाथ अर नाथ पुनः मल्लिनाथ

वंदे मुणिमुव्वयं नमि जिणं च वंदामि
वंदू मुनिसुव्रत नमि जिन पुनः वंदू

रिट्ठनेमि पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं
अरिष्ठनेमि पार्श्वनाथ तथारूप वर्द्धमान वंदू पुनः यह

मये अभिथुया विहुयरयमला पहीण जर
मैं स्तुति करी दूर किया कर्मरूप रज मैल खीण भया जनम

मरणा चउविसंपि जिणवरा ॥ ५ ॥ तित्थयरा मे
मरण जिन्हों का ये चोबीस जिनराज तीर्थंकर म्हारे ऊपर

पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिए महिया जे ये
प्रसन्न थावो कीर्त्ति करी वंदू मोटा प्रते ते ये
पूज्या ध्याय

लोगस्स उत्तमा सिद्धा आरुग्ग बोहिलाभं
लोक के विषै उत्तम सिद्ध छे रोग रहित समकित
बोध लाभ

समाहि वर मुत्तम दिंतु ॥ ६ ॥ चन्देसु निम्मल
समाधि प्रधान उत्तम देवो चन्द्रमां थी निर्मल

यरा आइच्चेसु अहियं पयासयारा सागर वर
कारी सूर्य थी अधिक प्रकाशकरी समुद्र समान

गम्भीरा सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥ ७ ॥
गंभीर एहवा सिद्ध सिद्धि मने देवो

॥ अथ नमत्थुणं ॥

नमोत्थुणं अरिहन्ताणं भगवन्ताणं आइगराणं
नमस्कार थावो अरिहन्त भगवन्त ने धर्म की आदि
करता ने

तित्थयराणं सयंसंबुधाणं पुरिसोत्तमाणं
तीर्थ करता बिना गुरू पोते प्रति पुरुषां में उत्तम
बोध पाम्या

पुरिस सिंहाणं पुरिसवरपुण्डरीयाणं पुरिस
पुरुषां में सिंह समान पुरुषा मे पुण्डरीक पुरुषां में
कमल समान

वर गन्ध हत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं
गन्ध हाथी समान लोक में उत्तम लोक का नाथ

लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोय गराणं
लोक में हितकारी लोक में प्रदीप समान लोक में उद्योतकारी

अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं
अभयदान दाता ज्ञान-चक्षु दायक सुमार्गदायक शरणदायक

जीवदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेस-
संयम-जीवन दायक बोधदायक धर्मदायक धर्मदेशना

याणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवर
दायक धर्मका नायक धर्म का सारथी उत्तमधर्मकर

चाउरन्त चक्कवट्टीणं दीवोत्ताणं सरणगईपइट्टा
च्यार गति का अन्तकारी चक्रवर्त समान द्वीपा समान शरणागत

अप्पडिहय वरनाण दसण धराणं विअट्टछउ
अप्रतिहत प्रधान ज्ञान दर्शन धारक निवर्त्यो

माणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं
छद्मस्थ पणो पोते जीत्या अने दूजाने जीतावे पोते तिरया दूसरा ने तारे

बुद्धाणं बोहियाणं मुत्ताणं मोयगाणं सव्वनूणं
पोते प्रति बोध पाम्या दूजा ने प्रति बोधे कर्म थी मुकाव्या दूजा ने मुकावे सर्वज्ञ

सव्वदरिसीणं सिवमयल मरुअ मणन्त
सर्वदरशी कल्याणकारी अचल अरुज अनन्त

मक्खय मव्वबाह मप्पुणरावत्ती सिद्धिगई
अक्षय अव्याव्बाधि फेरूं आवे नहीं इसी सिद्धगति
नामधेयं ठाणं सम्पत्ताणं नमो जिणाणं ॥इति॥
नांमवालां स्थान प्राप्त हुआ जिनेश्वरां ने नमस्कार थावो

॥ प्रतिक्रमण ॥

आवस्सही इच्छामिणं भंते तुब्भेहिं अब्भणु
अवश्य इच्छूं छूं मैं हे भगवन्त तुम्हारी आज्ञा से
नायेसमाणे देवसी पडिक्कमणं ठाएमि देवसी
दिवस प्रतिक्रमण ठाऊं करूं मैं दिवस
सम्बन्धी सम्बन्धी
ज्ञान दर्शण चारित तप अतिचार चिंतवनार्थं
ज्ञान दर्शन चारित्र तप अतिचार चिन्तवना के अथ
करेमि काउसग्गं ॥ १ ॥
करूं छूं मैं काउसग्ग ते ध्यान
इच्छामि ठामि काउसग्गं जो मे देवसिउ अई
इच्छूं छूं ठाऊं काउसग ज्यो मैं दिवस में अति-
यारो कओ काईओ वाईओ माणसिओ उस्सुत्तो
चार कीनों शरीर से वचन से मन से भूंडा सूत्र
उमग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्वी
उन्मार्ग अकल्पनीक नहीं करवा जोग दुरध्यान खोटी
चिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो
चिन्तवना अणाचार नहीं इच्छवा जोग

असावग्गपावग्गो नाणे तहदंसणे चरिताचरित्ते
श्रावक के नहीं करवा ज्ञान दर्शन देशव्रत
जोग पाप ते व्रत भंगादि

सुए समाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं
श्रुत सामायक तीन गुप्ती च्यार कषाय

पञ्चण्हं मणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं
पांच अणुव्रत तीन गुणव्रत च्यार

सिक्खावयाणं वारस्स विहस्स सावग्ग धम्मस्स
शिक्षाव्रत बारै विध श्रावक धर्म की

जं खण्डियं जं विराहियं तस्समिच्छामि
ज्यो खण्डना करी ज्यो विराधना करी तेहनो मिच्छामि

दुक्कडं ॥ २ ॥
दुक्कडं

॥ अथ क्षमावंत श्रमणों को वंदना ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए
इच्छूं छूं हे क्षमावन्त साधू वंदवा सचित्तादि छांडी निपाप
आपने शरीर पणे हुई निर्जरा अर्थ

निसीहियाए अणु जाणह मेमि उग्गहं निस्सीहि
शरीर करी आज्ञा देवो मुझे मर्यादा अशुभ जोग
मांही निवर्तवो

अहो कायं । काइसंफासं खमणिज्जो भे किलामो
चर्ण पर्शवाकी म्हारी कायासे खमज्यो हे भगवान् कीलामना
आज्ञा देवो तुमारा चर्ण फरशतां

अप्पकिलन्ताणं। बहुसुभेण मे दिवसोवईक्कन्तो
थोड़ी किलामना बहुत समाधि भावकर दिवस वीत्यो
हुई हुवे तो। तुमारो

जत्ता भे जवणिज्जंचभे। खामेमि खमासमणो
संयम रूपयात्रा इन्द्री नोइन्द्री आपकूं खमाऊं हे क्षमावंत
की विषय उपशमावी ते जपणी छूं साधू

देवसियं वइक्कमं आवसिआए पडिक्कमामि।
दिवस सम्बन्धी व्यतिक्रम अवश्य करणी नां पड़िकमूं छूं।
अतिचार थकी

खमासमणाणं देवसियाए आसायणाये
हे क्षमावन्त श्रमण दिवस सम्बन्धी असातना

तित्तीसन्नयराए जं किञ्चिमिच्छाए मणदुक्कडाए
तेतीस मांहेली ज्यो कोई किञ्चित् मिथ्या मन से दुकृत
क्रिया करी किया

वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए
वचन से दुकृत काया से दुकृत किया, क्रोध थी मान थी

मायाए लोभाए सवकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए
माया कपट लोभ करी सर्व काल में सर्व मिथ्या उपचार किया

सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे देवसिउ
सर्व धर्म क्रिया का उलंघन पहुची ज्यो मैं दिवस ने
किया असातना विषै

अइआरो कउ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि
अतिचार किया तेहनो हे क्षमा श्रमण निवर्तूं छूं

निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥
निन्दू छूं गरहूं छूं आतमां थी बोसराऊं छूं ।

॥ ज्ञानातिचार आलोवा की पाटी ॥

आगमे तिविहे पन्नते तंजहा सुत्तागमे
आगम तीन प्रकारे प्ररूप्या ते कहै छे सूत्र आगम
अत्थागमे तदुभयागमे ॥ एहवा श्रीज्ञान में
अर्थ आगम सूत्र अर्थ दोनूं आगम
विषे अतिचार दोष लाग्या होय ते आलोऊं—
जंवाइधं १ वच्चामेलियं २ हिनक्खरं ३ अचक्खरं ४ पयहीणं ५
जे कोई वचन मिलाया हीण अक्षर अधिक पदहीण ५
अधिक १ होय २ कह्या ३ अक्षर ४
विणयहीणं ६ जोगहीणं ७ घोसहिणं ८ सुट्ठु दिन्नं ९
विनय हीण ते संयोग हीण ७ उच्चारण श्रेष्ठ सूत्र ते दीनो
अविनय ६ हीण ८ अवनीतनें ९
दुट्ठुपडिच्छियं १० अकालिकाऊ सिज्झाए ११ कालेण
खोटा सूत्र की इच्छा करी १० बिनाकाले सिझाय करी ११ सिझायनां
कऊ सिज्झाऊ १२ असिज्झाए सिज्झाए १३ सिज्झाए
काल में सिझाय न असिज्झाय में सिज्झाय सिज्झाय में
करी १२ करी १३ सिज्झाय न
करी १४
न सिज्झाय १४ भणतां गुणतां चितारतां

चोखतां ज्ञान को ज्ञानवन्त को असातना करी होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

दंसण श्रीसमकित अर्हंतो मइदेवो जावज्जीवं
सुध सरधना ते समकित ते अरिहन्त मांहरे जाव जीव लग
दर्शन देव

सुसाहुणो गुरुणो जिणपन्नतं तत्तं इयसम्मतं
शुद्ध साधू गुरू जिन प्ररूप्यो ते धर्म तत्व यह समकित

मए गहियं ।
मैं ग्रहण कियो ।

एहवा समकित ने विषे जो कोई अतिचार लाग्या होय ते आलाऊं, जिन वचन सांचा न सरध्या होय १, न प्रतीत्या होय २. न रुच्या होय ३, पर पाखण्डी की प्रशंसा करी होय ४, संस्तवो (परिचय) कीधोहोय५, समकित रूपी रत्न ऊपरे मिथ्यात्व रूप रज मैल खेह, लागी होय तस्समिच्छामि दुक्कडं ।

॥ अथ बारह व्रत ॥

पढमें अणुव्वए थूलाउ पाणाइवायाउ
प्रथम देशथी व्रत मोटको प्राणातिपात थी

वेरमणं व्रत पांच बोले करी ओलखोजे, द्रव्यथको
निवर्त्तवो ।

त्रस जीव बेइन्द्री तेइन्द्री चउरिन्द्री पंचेन्द्री विन अपराधे आकुटी हणवानी विधि करी ने स उपयोग हणूं नहीं हणावूं नहीं मनसा वायसा कायसा। द्रव्य थकी एहिज द्रव्य, खेत थकी सर्व खेतां मांहि काल थकी जाव जीवलग, भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुण थकी संबर निर्जरा एहवा म्हांरे पहला व्रत ने विषे जे कोई अतिचार दोष लागो होय ते आलोऊं।

त्रस जीवनें गाढ़े बंधन बांध्या होय १ गाढा घाव घाल्या होय २ चामड़ी छेदन किया होय ३ अति भार घाल्या होय ४ भात पाणीनां विच्छोहाकीनां होय ५। तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

बीए अणुव्वय थुलाउ मूसावायाउ विरमणं
बीजो अणुव्रत स्थूलथी झून्ठ बोलवा निवर्त्तवो

पांचे बोले करी ओलखीजे द्रव्य थकी कनालिक १
कन्याके तांई झून्ठ

गोवालिक २ गाय भैंसादि कारण झून्ठ
भौमालिक ३ भूमि निमित्त झून्ठ
थापण मोसो ४ लेकर नटवो ते अमानत में खयानत
कूड़ोसाख ५। झून्ठी साक्षी

इत्यादिक मोटको झूंठ मर्यादा उपरांत बोलूं नहीं

बोलाऊं नहीं मनसा वायसा कायसा, द्रव्य थकी एहिज द्रव्य खेत्र थकी सर्व खेत्रां में, काल थकी जाव जीव लगी; भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुण थकी संवर निर्जरा, एहवा म्हारे दूजा व्रत विषे अतिचार दोष लागा होय ते आलोऊं।

किणी प्रते कूड़ो आल दियो होय १
रहस्य छानो बात प्रगट करी होय २
स्त्री पुरुषना मरम प्रकाश कीधा होय ३
मृषा उपदेश दीधो होय ४
कूड़ो लेख लिख्यो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं

॥ इति ॥

तइये अणुव्वए थूलाउ अदिन्ना दाणाउ विरमणं
तीजो अनुव्रत स्थूलथकी अणदियो लेवो ते चोरीको निवर्तवो
पांचे बोले करी ओलखीजे द्रव्य थकी खेत्र खणी गांठ खोली तालो पड़कूञ्चीकरी बाट पाड़ी पड़ी वस्तु मोटकी सधणियांस्ति जाणी इत्यादि मोटकी चोरी मर्यादा उपरान्त करूं नही कराऊं नहीं मनसा वायसा कायसा द्रव्य थकी एहिज द्रव्य, खेत्र थकी सर्व खेत्रांमें, काल थकी जाव जीव लगे भाव थकी राग द्वेष रहित, उपयोग सहित, गुण थकी संवर निर्जरा एहवा म्हारे तीजा व्रतमें ज्यों कोई अतिचार लागो होय ते आलोऊं।

चोर की चुराई वस्तु लीधी होय १ चोर ने सहाय दीधो होय २ राज विरुद्ध व्योपार कीधो होय ३ कूड़ा तोला कूड़ा मापा कीधा होय ४ वस्तु में भेल सभेल कीधो होय ५ सखरी दिखाय नखरी आपी होय तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं।

॥ इति ॥

चउत्थं अणुव्वए थूलाउ मेहुणावो विरमणं
चौथो अणुव्रत स्थूलथकी मैथुन थकी निवर्त्तवो

पांच बोलांकरी ओलखिजे द्रव्य थको तो देवता देवांगनां सम्बन्धिमा मैथुन सेऊं नहीं सेवाऊं नहीं तिर्यंच तिर्यंचणी सम्बन्धी मैथुन सेऊं नहीं सेवाऊं नहीं, मनुष्य सम्बन्धी मैथुन सेऊं नहीं सेवाऊं नहीं, मनुष्यणी सम्बन्धी मैथुन सेवा की मर्यादा कीधी छै तिण उपरान्त सेऊं नहीं सेवाऊं नहीं मनसा वायसा कायसा, द्रव्य थकी एहिज द्रव्य, खेत थकी सर्व खेत्रां में काल थकी जावज्जीव, भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुण थकी सम्बर निर्जरा, एहवा म्हारे चौथा व्रत में ज्यो अतिचार दोष लागो होय ते आलोऊं।

थोड़ा काल की राखी सूं गमन कीधो होय १ अपरिग्रहीता सूं गमन कीधो होय २, अनेक क्रीड़ा

कीधी होय ३ पराया नाता विवाह जोड्या होय ४ काम भोग तीव्र अभिलाषासे सेया होय ५

तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ इति ॥

पंचमें अणुव्वए थूलाउ परिग्गहाउ विरमणं
पांचमूं अणुव्रत स्थूलथकी परिग्रहते धनको निवर्त्तवो

पांचा बोला करी ओलखीजे द्रव्यथकी खेत्तु
उघाड़ी जमीन

वत्थु यथा प्रमाण, धन धान यथा प्रमाण
ढकी जमी जेह प्रमाण कीधा, द्रव्य नाज जेह प्रमाण कीधो

कुम्भी धातु यथा प्रमाण, हिरण सुवन्न यथा प्रमाण
तांवो पीतल लोहादिनो जेह प्रमाण कीधो, चांदी सोनाको जे प्रमाण कीधो

द्विपद चउप्पद यथा प्रमाण ।
दासदासी हाथी घोड़ादिक चौपद जे प्रमाण कीधो।

द्रव्य थकी एहिज द्रव्य, खेत थकी सर्व खेत्रा में, काल थकी जावज्जीव लगे, भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुण थकी संवर निर्जरा एहवा म्हारा पांचवां अणुव्रत में ज्यो अतिचार लागा होय ते आलोऊं, खेत्तु वत्थुरो प्रमाण अतिक्रम्यु होय १, हिरण्य सुवर्ण रो प्रमाण अतिक्रम्यु होय

२, धन धान्य रो प्रमाण अतिक्रम्यु होय ३ द्विपद चउपद रो प्रमाण अतिक्रम्यु होय ४, कुम्भी धातु रो प्रमाण अतिक्रम्यु होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं।

॥ इति ॥

छट्ठो दिशि व्रत पांचां बोलां ओलखिजे द्रव्य थकी तो ऊंची दिशारो यथा प्रमाण, नीची दिशा रो यथा प्रमाण तिरछी दिशा रो यथा प्रमाण, यां दिशा रो प्रमाण कीधो तेह उपरान्त जाय कर पंच आस्रव द्वार सेऊं नहीं सेवाऊं नहीं मनसा वायसा कायसा द्रव्य थकी तो एहिज द्रव्य खेत थी सर्व खेता में, काल थकी जाव जीव लग, भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुण थकी संवर निर्जरा, एहवा मांहरे छट्ठा व्रत के विषे जे कोई अतिचार दोष लागो हुवे तो आलोऊं

ऊंची दिशा रो प्रमाण अतिक्रम्यो होय १
नीची दिशा रो प्रमाण अतिक्रम्यो होय २
तिरछी दिशा रो प्रमाण अतिक्रम्यो होय ३
एक दिशा घटाई होय एक दिशा बधाई होय ४
पंथ में संदेह सहित अधिक चाल्यो चलायो होय ५

तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं।

॥ इति ॥

सातमूं उपभोग परिभोग व्रत पांचां बोलां ओल-खिजे. द्रव्य थकी छब्बीस बोलां की मर्यादा ते कहे छे

उल्लणिया विहं १	दंतण विहं २	फल विहं ३
अंग पूछणादि विधि	दांतण विधि	फल-विधि
अभिंगण विहं ४	उवट्टण विहं ५	मंजन विहं ६
तेलभिंगादि विधि ते तेल मालिश	उवटणादि की विधि	स्नान की विधि
वत्थ विहं ७	विलेवण विहं ८	पुप्फ विहं ६
वस्त्र विधि	विलेपण विधि	पुष्प विधि
आभरण विहं १०	धूप विहं ११	पेज विहं १२
पहरवाका गहणां विधि	धूप की विधि	दूध आदि पीवा की विधि
भक्खण विहं १३	उदन विहं १४	सूप विहं १५
सूंखड़ी आदि भक्षण की विधि	चावल की विधि	दाल की विधि
विगय विहं १६	साग विहं १७	महुर विहं १८
विगय की विधि	साग की विधि	मधुर तथा बेलड़ीका फल
जीमन विहं १६	पाणी विहं २०	मुखवास विहं २१
जीमण की विधि	पाणी की विधि	मुखवास तांबूलादि की विधि
वाहण विहं २२	सयण विहं २३	पन्नी विहं २४
गाड़ी प्रमुख की बैठवा विधि	सोवा की विधि पाटा कुरसी बिछौनादि पर	पगरखी की विधि

सचित विहं २५ द्रव्य विहं २६
सचित की विधि द्रव्य की विधि

ए छाबीस बोलां की मर्याद करी, जिण उपरान्त भोगऊं नहीं मनसा वायसा कायसा द्रव्य थकी एहिज द्रव्य खेत थकी सर्व खेतां में काल थकी जाव जीव लग, भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुण थकी संबर निर्जरा, एहवा मांहरा सातमा व्रत के विषे जे कोई अतिचार दोष लागो हुवे ते आलोऊं ॥ पच्क्खाणां उपरान्त सचित रो आहार कीनो होय ॥ १ ॥ पच्क्खाणां उपरान्त द्रव्य रो आहार कीनो होय ॥ २ ॥ पच्क्खाणां उपरान्त गहिणां अधिक पहन्या होय ॥ ३ ॥ पच्क्खाणां उपरान्त कपड़ा अधिक पहन्या होय ॥ ४ ॥ पच्क्खाणां उपरान्त उपभोग परिभोग अधिका भोग्या होय तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ पन्दरह करमां दान जाणवा जोग छै पण आदरवा जोग नहीं ते कहे छै ।

इंगालकम्मे १ वण कम्मे २ साड़ी कम्मे ३
अग्निकारी लुहारादि कर्म वन कर्म ते बनमें घास दरखतादि काटवो सकट कर्म ते गाड़ी प्रमुखनो कर्म

भाड़ी कम्मे ४ फोड़ी कम्मे ५ दंतवाणिज्जे ६
भाड़े ते किराया देवाका कर्म
लूपादि कर्म ते नारेल सुपारी पत्थर आदि फोड़वो
दांतको बिणज ते व्योपार

लक्खवाणिज्जे ७ रस वाणिज्जे ८ केस वाणिज्जे ६
लाखको वाणिज्य
रस व्यापार ते घी, तेल सहतादि
बाल चमरादि व्योपार

विषवाणिज्जे १० जन्तु पिलणया कम्मे ११
जहरको व्यापार
कल घाणी प्रमुख कर्म

निलच्छणिया कम्मे १२ दवगिदावणिआं कम्मे १३
कसी वधियादि कर्म ज्यानवरोंनें बाधी कर्म
दावानलदेवो कर्म ते वन प्रमुखमें लायलगायवो

सर दह तालाव सोसणियां कम्मे १४ असईजण
सरोवर द्रह तलाव आदिने सोषावो ते कर्म असती ते असंजती जननें
पोषणिया कम्मे १५ ॥ ॥ इति ॥
पौषवा नों कर्म

ए पन्दरह कर्मादान आगार उपरान्त सेया सेवाया होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ॥ इति ॥

आठमूं अनर्थ दण्ड विरमण व्रत पांचा बोलां ओलखिजे, द्रव्य थको अवज्झाणचरियं १
भूंडा ध्यानको आचरवो

पम्मायचरियं २ हंसपयाणं ३ पाव कम्मोवएसं ४
प्रमाद करवो
प्राण हिन्सा
पाप कर्म को उपदेश

ए च्यार प्रकारे अनरथ दण्ड आठ प्रकार का आगार उपरान्त सेऊ नहीं ते कहे छे।

आणहिउवा १ नाणहिउवा २ आघारिहिउवा ३
आपणें हित न्यातीलाके हित घरके हित
परिवारे हिउवा ४ मित्तहिउवा ५ नागहिउवा ६
परिवारके हित मित्रके हित नाग देवता निमित्त
भूत हिउवा ७ जक्ख हिउवा ८
भूत देवता निमित्त जक्ष देवता निमित्त

द्रव्य थकी एहिज द्रव्य खेत्र थकी सर्व खेत्रां में, काल थकी जाव जीव लग, भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुण थकी संवर निर्जरा, एहवा म्हारा आठमां व्रत के विषे जो कोई अतिचार दोष लागो हुवे ते आलोऊं।

कन्दर्पनी कथा कीधी होय १ भंड कुचेष्टा कीधी होय २
काम क्रीड़ाकी कथा को करवो भांडनीपरे कुचेष्टा करि होय
मुखसे अरि वचन बोलया होय ३ अधिकरण
मुखसे खोटा वचन बोलया होय नाता जोड़ कर
जोड़ा मुकाया होय ४ उपभोग परिभोग
तुड़ाया तथा स्त्री भरतार नो विरह कियो एक वार भोग मे आवे वार वार भोग में आवे ते

अधिक भोग्या होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं
मर्यादा उपरान्त अधिक तो मिच्छामि दुक्कड़ं
भोग्या होय ते

॥ इति ॥

नवमो सामायक व्रत पांचां बोलां ओलखिजे

करेमि भन्ते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि
करूं छू मैं हे भगवन्त सामायक सावद्य जोग पच्चखाण

जाव नियम (मुहूर्त्त एक) पज्जुवासामि दुविहिं
यावत् नियम एक मुहुर्त्त ते सेऊं छूं दोय कर्णसे
दोय घड़ी

तिविहेणं नकरेमि नकारवेमि मनसा वायसा
तीन जोगसे, सावद्य नही करूं नहीं कराऊं मनसे वचनसें

कायसा तस्स भंते पड़िक्कमामि निन्दामि गरिहामि
शरीरसें तिण सूं हे भगवान पडिकमूं छूं निन्दूं छूं गर्हणा ते निषेधूं छूं

अप्पाणं वोसिरामि ॥
पाप से आत्मांने बोसराऊं छूं

द्रव्य थकी कानै राख्या ते द्रव्य, खेत थकी सर्व खेतां में, काल थकी एक मुहूर्त्त तांई, भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुण थकी संवर निर्जरा, एहवा नवमा व्रत के विषे जे कोई अतिचार दोष लागो हुवे ते आलोऊं ।

मन वचन कायका माठा जोग प्रवर्तीया होय १ पाड़वा ध्यान प्रवर्ताया होय २ सामायक में समता नहीं करी हुवे ३ अण पूगी पारी होय ४ पारवा विसाखो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं ॥

॥ इति ॥

दशमो देशावगासी व्रत पांचां बोलां ओलखिजे द्रव्य थकी दिन प्रते प्रभात थी प्रारंभीनें पूर्वादि छव दिशिरी मर्याद करी तिण उपरान्त जाई पांच आस्रव द्वार सेऊं नहीं सेवाऊं नहीं तथा जेतली भूमिका आगार राख्या तिणमें द्रव्यादिक री मर्यादा करी तिण उपरान्त सेऊं नहीं सेवाऊं नहीं मनसा वायसा कायसा द्रव्य थकी एहिज द्रव्य, खेत्र थी सर्व खेत्रां में, काल थकी जेतलो काल राख्यो, भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा, एहवा म्हारे दशमा व्रत के विषे जे कोई अतिचार दोष लागो ते आलोऊं ।

नवीं भूमिका बारली वस्तु अणाई होय १ मुकलाई होवे २ शब्द करी आपो जणायो होय ३ रूप करी आपो जणायो होय ४ पुद्गल नांखी आपो जणायो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं । इति

इग्यारमूं पौषध व्रत पांचां बोलां करि ओलखिजे
द्रव्य थकी ।

असण पाण खादिम स्वादिम ना पचक्खाण
आहार पाणी मेवादिक पानसुपारीदिक को पचखाण
अबम्भना पच्चक्खाण उमकमणी सुवन्नना पच्चक्खाण
मैथुन सेवाका त्याग बोसराया हुआ रत्नसोनाका त्याग
माला बणग बिलेवन ना पच्चक्खाण
पुष्पमाला गुलाल रंगादि चन्दनादि नो विलेपनका त्याग
सस्थमुसलादि सावज्ज जोगरा पच्चक्खाण
शस्त्र मुसलादि सावद्य जोगका पचखाण

इत्यादि पच्चक्खाण, करी ने द्रव्य राख्या जिण
उपरान्ति पंच आस्रव द्वार सेऊं नहीं सेवाऊं नहीं
मनसा वायसा कायसा द्रव्यथी एहिज द्रव्य, खेतथी सर्व
खेतां में, काल थकी (दिवस) अहो रात्रि प्रमाण भाव
थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुण थकी संवर
निर्जरा, एहवा म्हारे इग्यारमा व्रत के विषे जे कोई
अतिचार दोष लागो होवे ते आलोऊं ।

सिज्जा संथारो अपड़िलेह्यो होय दुप्पडिलेह्या
सोवाकी जगां विस्तर पडिलेहा नहीं होय आछीतरें नहीं
होय १ अप्रमार्ज्या होय दुप्रमार्ज्या होय २
पडलेहना नही प्रमर्ज्या करी आछीतरें नहीं प्रमार्ज्या
उच्चारपासवण भूमिका अपडिलेही होय दुपडि
छोटी बड़ी नीतकी जमीन पड़िलेही न होय अथवा

लेही होय ३ अप्रमार्ज्या होय दुप्रमार्जौ होय ४
आछी तरैं नहीं पूंज्या नहीं तथा रीत प्रमाणे नहीं पूंज्या होय
पडिलेही होय

पोषह में निन्दा विकथा कषाय प्रमाद करी होय ५
तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ इति ॥

बारमूं अतिथि संविभाग व्रत पांचां बोलां
ओलखिजे द्रव्य थकी ।

समणे निगंथे फासू एषणीज्जेणं असणं १
श्रमण निग्रंथ न प्रासूक निर्दोष आहार
अचित

पाणं २ खादिमं ३ सादिमं वत्थ ५ पढग्गह ६
पाणी मेवो लौंग सुपारी आदि वस्त्र पात्रो

कंबलं ७ पाय पुच्छणं ८ पाडियारो ९ पीढ़
कांबलो पग पूंछणो जाचीने पाछा पाट
भोलावे ते अमानत

फलग १० सिज्या ११ संथारो १२ ओषद १३
बाजोटादि जमीन जगां तृणादिक दवाई

भेषद् १४ पडिलाभमाणे विहरामि ॥
चूर्णादि प्रतिलाभतो थको विचरूं

इत्यादिक चौदह प्रकारनूं दान शुद्ध साधुनें देऊं.
देवाऊं देवता प्रते भलो जाणूं मनसा वायसा कायसा,

द्रव्य थकी एहिज कलपतो द्रव्य, खेत थकी कलपे जिण खेतां में, काल थकी कलपे जिण काल में भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुण थकी संवर निर्जरा, एहवा म्हारा बारमां व्रत की विषे जे कोई अतिचार दोष लागो होवे ते आलोऊं सूजती वस्तु सचित्त पर मेली होय १ सचित्त थी ढांकी होय २ काल अतिक्रम्यो होय ३ आपणी वस्तु पारकी पारकी वस्तु आपणी कीधी होय ४ भाणे बैठ साधू साध्वियांकी भावना नहीं भाई होय तेहनूं मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ इति ॥

॥ अथ संलेखणा की पाटी ॥

इह लोगा संसह प्पउगो १ परलोकासंसह
यह लोककी जशकी तथा द्रव्यादि की इच्छा परलोक में सुखकी

प्पउगो २ जीविया संसह प्पउगो ३ मरणा संसह
बांछा जीवित की इच्छा मरण की

प्पउगो ३ काम भोगा संसह प्पउगो ५ मा मु
इच्छा काम भोग की इच्छा उपरोक्त ए विचार मुझनें

ज्भहुज्ज मरणान्तें ।
मर्णान्त तक मत होज्यो । ॥ इति ॥

अठारे पापः—

प्राणातिपात १ मृषावाद २ अदत्तादान ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ९ राग १० द्वेष ११ कलह १२ अभ्याख्यान १३ पैशुन्य १४ पर परिवाद १५ रति अरति १६ माया मोसो १७ मिथ्या दर्शन सल्य ॥ इति ॥

तस्स सव्वस्स देवसी अस्स आयारस्स दुच्चिन्तियं दुब्भासिए

ते सर्व अतिचार खोटी, चिन्तवना खोटी भाषा खोटी चेष्टा काया की

दुच्चिट्ठियं आलोयं तं पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि

आलोऊं तेह पडिकमण मैं निन्दूं ग्रहणा करूं

अप्पाणं वोसरामि ॥

पाप कर्म थी आत्माने वोसराऊं ॥ इति ॥

॥ अथ ॥

तस्स धम्मस्स केवली पन्नतस्स अब्भुट्ठि उमि

तेह धर्म केवली परूप्या तेहनें विषे उठ्यो छूं

आराहणाए विरओमि विराहणाए सव्वेतिविहेणं

आराधना निमित्त निवर्तूं छूं विराधनाथी अतिचार सर्व त्रिविध करी

पडिक्कन्तो वंदामि जिन चउव्वीसं

पडिकमूं छूं, वांदूं छूं जिनराज चौवीसनें

आलोयना करिके

॥ इति ॥

॥ अथ मंगलीक ॥

चतारि मंगलं अरिहन्ता मंगलं सिद्धा मङ्गलं
च्यार मङ्गलीक अरिहन्त मंगल छे सिद्ध मंगलकारी छे
साहू मङ्गलं केवली पण्णत्तो धम्मो मंगलं ॥
साधू मंगलं केवली प्ररूप्यो धर्म ते मंगलं
चत्तारिलोग उत्तमा अरिहन्तालोग उत्तमा
ए च्यार लोक में उत्तम जाणवा अरिहन्त लोक में उत्तम
सिद्धा लोग उत्तमा साहूलोग उत्तमा केवली
सिद्ध लोक में उत्तम साधू लोक में उत्तम केवली
पणतो धम्मो लोगउत्तमा ॥ चत्तारि सरणं
परूप्यो धर्म ते लोकमें उत्तम ॥ च्यार शरणा
पवज्जामि अरिहन्ता सरणं पवज्जामि सिद्धा
ग्रहण करूं अरिहन्तों का शरणा, ग्रहण करता हूं सिद्धांका
सरणं पवज्जामि साहू सरणं पवज्जामि केवली
शरण लेता हूं साधूका शरण है केवली
पणत्तो धम्मो सरणं पवज्जामि ॥ च्यारों सरणां
प्ररूपित धर्मका शरण ग्रहण करता हूं

ए सगा अवर न सगो कोय जे भवप्राणी आदरे अक्षय अमर पद होय ।

॥ इति ॥

देवसी पायच्छित विसोधनार्थं करेमि काउसग्गं

॥ इति प्रतिक्रमणं ॥

॥ अथ पडिक्कमणा करने की विधि ॥

प्रथम चौबीसत्थो करणो जिणा में

इच्छामि पडिक्कमेउ की पाटी। तस्सोत्तरी की पाटी २। ध्यान में इच्छामि पडिक्कमेउ की पाटी मन में चितारकर एक नवकार गुणनों २। लोगस्सउज्जोगरे की पाटी ३। नमोत्थुणं की पाटी ४।

१ प्रथम आवसग्ग सामाइक में।

१ आवसग्ग इच्छामिणं भन्ते।

२ नवकार एक।

३ करेमि भंते सामाइयं।

४ इच्छामिठामि काउसग्गं।

५ तस्सोत्तरी की पाटी।

ध्यान में ९९ निन्नाणवें अतिचार।

आगमे तिविहे पन्नत्ते की पाटी तिण में ज्ञान का चवदह अतिचार।

दंसण श्रीसमत्ते की पाटी तिणमें समकित का ५ अतिचार।

बारे व्रतां का अतिचार ६० तथा १५ कर्मादान। इह लोगा संसह पउगे की पाटी। (तिणमें) अतिचार ५ सलेखणां का। यह सर्व ९९ अतिचार अठारह पाप स्थानक कहणा।

इच्छामि ठामि आलोउं जो में देवसी अइयारोकउ
ए पाटी कहणी ।

एक नवकार कह पारलेणो ।

॥ इति प्रथम आवसग्ग समाप्त ॥

॥ दूसरा आवसग्ग की आज्ञा ॥

लोगरस्स की पाटी ।

॥ इति दूजा आवसग्ग समाप्त ॥

॥ तीजा आवसग्ग की आज्ञा ॥

दोय खमासमणा कहणा

॥ इति तीजा आवसग्ग समाप्त ॥

॥ चौथा आवसग्ग की आज्ञा ॥

ऊभाथकां ध्यानमें कह्या सो प्रगट कहणा ।

८ आठ पाटी बैठा थकां कहणी जिणांकी बिगत ।

१ तस्स सव्वस्स की पाटी ।

२ एक नवकार ।

३ करेमि भंते सामाइयं की पाटी ।

४ चत्तारि मंगलं की पाटी ।

५ इच्छामि ठामि पड़िकमेउ जो मैं देवस्सी ।

६ इच्छामि पडिक्कमेउ की पाटी ।

७ आगमें तिविहे की पाटी ।

८ दंसण श्री समत्ते की पाटी ।

९ आठ पाटी कहकर बारह व्रत अतिचार सहित कहणा
पांच संलेखणा का अतिचार कहणा ।

अठारे पाप स्थानक कहणा ।

इच्छामि ठामि पडिक्कमेउ जो मै देवसी को पाटी कहणी तस्स धम्मस्स केवली पन्नत्तस्स को पाटी, दोय खमासमणा कहणां ।

पांच पदां की वन्दना कहणी ।

सात लाख पृथ्वीकाय सात लाख अप्पकाय इत्यादि खमत खामणा की पाटी ।

॥ इति चौथा आवसग्ग समाप्त ॥

॥ पंचमा आवसग्ग को आज्ञा लेई कहे ॥

१ देवसी प्रायच्छित बिसोद्धनार्थं करेमि काउसग्गं ।

२ एक नवकार ।

३ करेमि भन्ते सामाइयं की पाटी ।

४ इच्छामि ठामि काउसग्गं की पाटी ।

५ तस्सोत्तरी की पाटी ।

ध्यान में लोगस्स कहणां की परंपराय रीति ।

प्रभाते तथा सांझ वक्त ४ च्यार लोगस्स को ध्यान पक्खी ने १२ बारे लोगस्स को ध्यान ।

चौमासी पक्खी नें २० लोगस्स को ध्यान ।

छअछरी ने चालीस लोगस्स को ध्यान ।

ध्यान पारी लोगस्स की पाटी प्रगट कहणी ।

२ दोय खमासमणा कहणा ।

॥ इति पंचमूं आवसग्ग समाप्त ॥

छट्ठा आवसग्ग की आज्ञा लेई कहणा तेहनी विगत ।

गयेकालनूं पडिक्कमणो, वर्त्तमान काल में समता, आगामियां कालका पचखाण (यथा शक्ति करणा) ।

सामाई १ चौवीस्थो २ वंदना ३ पडिक्कमणो ४ काउसग्ग ५ पचखाण ६ यां छऊं आवसग्गां में ऊंची नीची होणी अधिक पाटो कही होय तस्स मिच्छामि दूक्कड़ं ।

दोय नमोत्थुणं कहणा जिणमें पहिला मे तो सिद्ध गई नाम धेडूयं ठाणं संपताणं नमो जिणाणं ।

दूजा नमोत्थुणं में सिद्ध गई नाम धेडूयं ठाणं संपवेकामी नमो जिणाणं ।

॥ इति ॥

॥ तेरापन्थ ओलखणा की ढाल ॥

आप हणें नही प्राण कूं, नही कहिने हणावे हो ।
हणतानें भलो न चिन्तवै, ऐसी दया पलावे हो ॥
सोही तेरापंथ पावे हो ॥ १ ॥ के तो मूंन ग्रही रहै, के निर्वद्य गावे हो । सावद्य काम संसारका, ते तो

चित्त में न चाहवे हो ॥ सो ॥ २ ॥ जाच्यां विन एक तिणखलो, करसूं नांहि उठावे हो। भोग तज्या भामण तणा, मांठी नजर न ल्यावे हो ॥ सो ॥ ३ ॥ रत्न अनें कवड़ी भणी, नहीं राखे रखावे हो। जे जे उपग्रेह जिण कह्या, तिणसूं अधिक न ल्यावे हो ॥ सो ॥ ४ ॥ पंच महाव्रत पालता, नव विध शील पलावे हो। सुमति गुप्त बारह भेद सूं, पूरब कर्म खंपावे हो ॥ सो ॥ ५ ॥ संयम सतरह भेद सूं, रूड़ी-रीत निभावे हो। परीषह आयां संग्राम में, शूरा जिम हहामा ध्यावे हो ॥ सो ॥ ६ ॥ अनाचार बावन तजै, गुण सत्तावीस पावे हो। दोष बया-लिस टाल के, असणादिक ल्यावे हो ॥ सो ॥ ७ ॥ काज कनागत कार्य, तिण दिशि नहीं ध्यावे हो। ताक २ तेरापन्थी, ताजा घर नहीं जावे हो ॥ सो ॥८॥ निन्दत छेदत जो कोई, तिण सूं नाहीं रिसावे हो। कोई के दाता दानको, तिणसूं राग न ल्यावे हो ॥ सो ॥ ९ ॥ कमल कादा सें दूर रहै, जिम जग में नांहि लिपावे हो। थापी थानक छोड़ने, बासा दूर दीरावे हो ॥ सो ॥ १० ॥ हिन्सा धर्म उड़ायने, दया धर्म दीपावे हो। जिहां २ के जिननी आगन्या, तिण में धर्म बतावे हो ॥ सो

॥ ११ ॥ सूतर में जिन भाषियो, तेहवो दान दिरावै हो। दान कुपात्र ने दियां, देता आडा ना आवे हो ॥ सो ॥ १२ ॥ बरजणो तो जिहां ही रह्या. मुनि बहिरण जावे हो। देखत मुगत फकीर को, तो पाछा फिर आवे हो ॥ सो ॥ १३ ॥ नव तत्व निर्णय नित करै, समकित ने सरधावे हो। मुक्ति नगर मुसक्लि घणो, तिण रो मार्ग बतावे हो ॥ सो ॥ १४ ॥ तेरा बचन विमास ने, सूतर सीख सीखावे हो। तिण बयणा सूं मर्त में, भवियण को चलावे हो ॥ सो ॥१५॥ आपै समकित औषधी, वैद्य भोजन पचावे हो। तेरापन्थी बैद ज्यूं, धर्म भोजन रूचावे हो ॥ सो ॥ १६ ॥ मैल खोट प्रते काढ़वा, सोनी सोनो तावे हो। ज्यूं तेरापन्थी परखियां, हृदय न्याय ल्यावे हो ॥ सो ॥१७॥ तेरापन्थ ओलख्यां पाछे, दूजो दाय न आवे हो। अमृत भोजन जीमियां, कूकस कुण खावे हो ॥ सो ॥ १८ ॥ कहै कथादि बारता, सूतर से मिलावै हो। तुझ बचनां से नहीं मिले, ताकूं तुरत उडावे हो ॥ सो ॥ १९ ॥ सूत्र न्याय पाखंड भणी, भीखणजी ओल-खावे हो। तेरापन्थ ते धारियो, दया धर्म बतावे हो ॥ सो ॥ २० ॥ भीखणजी तेरापन्थी, तिण में ए गुण पावे हो। प्रभु तेरापन्थरा, शोभो गुण गावे हो ॥ सो ॥२१॥

॥ ढाल ॥

॥ स्वामी श्री भीखणजी कृत ॥

प्राणी कव ठाकुर फुरमाई रे (एदेशी)

देव तणो आचार न जाणे, गुरु की खबर न कांई रे। धर्म तणो तूं मर्म न जाणे, राखे घणी ठसकाई रे॥ प्राणी समकित किण विध पाई रे॥ १॥ नव तत्व रा तूने भेद न आवे, कूड़ी करे लपराई रे। धर्म तणो धोरी हो बैठो तुमें दीसे घणी भोलाई रे॥ प्राणी॥ २॥ जीव न जाणे अजीव न जाणे, पुन्य की खबर न कांई रे। पाप तणी प्रकृत नहीं धारी, कीधी घणी लड़ाई रे॥ प्राणी॥ ३॥ आस्रव नाला छूटा नहीं देखे, संवर समता न आई रे। निर्जरा तणी निर्णय नहीं कीधो थारी कठे गई चतुराई रे॥ प्राणी॥ ४॥ बन्ध मोक्ष नों भेद न जोड़ो, तिण री खबर न कांई रे। समदृष्टि तूं नाम धरावे, तूने कुगुरु दिया भरमाई रे॥ प्राणी॥ ५॥ हाथ जोड़ी ने समकित लेवे, कुगुरां पासे जाई रे। अजाण पणो मिट्यो नहीं अन्तर, मिथ्या बात बनाई रे॥ प्राणी॥ ६॥ सांगधार्‍यां ने साधू सरधे, पड़े पगां में जांई रे। तिक्खुता से करे छे वन्दना, मन में हर्षज थाई रे॥ प्राणी

॥ ७ ॥ सावद्य करणी से पापज लागे, तिण री खबर न कांई रे। निर्वद्य करणी से धर्म पुन्य, ते पन अटक न आई रे ॥ प्राणी ॥ ८ ॥ पोथा पाना काढी ने बेठो, भोला ने दे भरमाई रे। कूड़ कपट कर फन्द में नांखे, मांड़ो छे पेट भराई रे ॥ प्राणी ॥ ६ ॥ सारां में तं बडेरो बाजे, मनसे मगज न माई रे। न्याय मार्ग थांरे किण विधि आवे, कुगुरां दियो डंक लगाई रे ॥ प्राणी ॥ १० ॥ पुन्य धर्म रो नांहि निवेड़ो, अकल गई लपराई रे। जाण पणा रो निर्णय पूछ्यां उलटी मांडे लड़ाई रे ॥ प्राणी ॥ ११ ॥ द्रव्य खेत काल भाव न धाख्या, गुरु बिन खबर न कांई रे। च्यार निक्षेपा रो निर्णय न कीधो, मनुष्य जमारो पाई रे ॥ प्राणी ॥ १२ ॥ कर्ण योग भांगा नहीं धाख्या, बरतां री खबर न कांई रे। अब्रत मांहि धर्म परूपे, यह नर्क री साई रे ॥ प्राणी ॥ १३ ॥ न्याय बातां हाथे नहीं आवे, थोथी करै बड़ाई रे। आज्ञा बारै धर्म परूपे, खोटा चोज लगाई रे ॥ प्राणी ॥ १४ ॥ सरधा धर्म जिनेश्वर भाख्यो, सूत्र मे दियो जताई रे। चतुर होय सो निर्णय कीज्यो, सतगुरु कहै समझाई रे ॥ प्राणी ॥ १५ ॥ जीव अजीव रा छः द्रव्य कीधा, नव कीधा न्याय बताई रे। समदृष्टि

ओलखै घट भिन्तर, ज्यांने न सके देव डिगाई रे ॥ प्राणी ॥ १६ ॥

॥ ढाल ॥

॥ श्रावक शोभजी कृत ॥

इण स्वार्थ सिद्ध रे चन्द्रवे (एदेशी)

तेरा नहीं ते सर्व अनेरा, ते संसार में रड़ बडिया जी, तेरा ते तो असलज तेरा, ते ज्ञान ध्यान गुण भरियाजी। इण भर्त खेत्र में चेत चतुर नर, तेरापंथी तिरियाजी ॥ १ ॥ सुमती गुप्त आठूं सुध पाले, पञ्च महाव्रत धरियाजी। ए तेरा पाल्यां तेरापन्थी, ते मुक्ति नगर ने खड़ियाजी ॥ इण भर्त खेत्र में ॥ २ ॥ तेरा ते तरिया इण लेखे, ते कर्म कटक से लड़ियाजी। सूधी रीते संयम पाले, ते शिवरमणी ने बरियाजी ॥ इण ॥ ३ ॥ तेरापन्थ में भूल रह्या छे, चोखी करै छे किरियाजी। मार्यो मोह मेवासी मोटो, त्यांरा कारज सरियाजी ॥ इण ॥ ४ ॥ तेरा मति में तेरापन्थी, संयम पाखर धरियाजी। त्यांरी चरचा चलगत सुणने, पाखण्डी थरहरियाजी ॥ इण ॥ ५ ॥ आज्ञा बारै धर्म प्ररूपे, ते आणाबारे पडियाजी। ते आज्ञा बारै बारह पंथी ते मिथ्या मत में जडियाजी ॥ इण ॥ ६ ॥ तेरा त्यांरी सरधा चोखी, नव तत्व निर्णय करियाजी।

जिण आणा में धर्म प्ररूपै, सुलटे मारग पड़ियाजी ॥ दूण ॥ ७ ॥ शूरा हाका पाड़े जब गीदड़ ताप देख थरहरियाजी, ज्यूं तेरापंथी करड़ा देखो, भेषधारी अति डरियाजी ॥ दूण ॥ ८ ॥

॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

शुद्ध साधनें अशुद्ध दानदे, जाणी नें अशुद्ध ले साध ।
दोनूं डूबा बापड़ा, जिनवर बचन बिराध ॥ १ ॥

ढाल (राग मल्लार)

॥ स्वामी श्रीभीखणजी कृत ॥
गौतम स्वामी मे गुण घणा ॥ एदेशी ॥

तीन बोलां करि जीवनेजी अल्प आउखो बधाय । हिन्सा करै प्राणी जीव री। वलि बोलै मूंसा वायजी ॥ साधांने अशुद्ध बहिरायजी । हिन्सा करि चोखी जायगां बणायजी । साधां ने उतारण री मन मांयजी तिण रे अशुभ कर्म बंधायजी । तीजे ठाणें कह्यो जिनरायजी । वलि सुत भगवती मांयजी । श्री वीर कहै सुण गोयमा ॥ ए आंकड़ी ॥ १ ॥

दड़े लींपे साधू कारणेजी, छपरा देवै छाय । कैलू

पिण फिरतां थकां, जमिया जाला उखेलै तायजी, लीलण फूलण मारी जायजी, अनन्ता जीव छै तिण रे मांयजी. वले अवर हणी छः कायजी, तिण री दया न आणी कायजी, तिणरे अल्प आयु बंधायजी ॥ श्री वीर कहै ॥ २ ॥

नींव दिरावे ठेट मूं जी, टांकी बजावे ताय, भेला करि भाठा चूंणे, तिण बोहत हणीं छः कायजी, अनन्ता जीव हणिया जायजी, ते पूरा कीम कहि बायजी, साधां ने उतारणरी मन ल्यायजी, तिण मोटो कियो अन्यायजी, तिण रे अल्प आयु बन्धायजी ॥ श्री वीर ॥ ३ ॥

जिण गरथ दियो थानक कारणेजी, ते पिण मराई छःकाय, किण मोल भाड़े ले भोगलावे, किण थाप राखी छे तायजी, इत्यादिक दोषीला कहिवायजी, खोणे खोदे समोंकार जायजी, विधि २ सूं मारी छःकायजी वलि मन मांहि हरषित थायजी, तिण रे अल्प आयुष्य बंधायजी ॥ श्री वीर० ॥ ४ ॥

आहार सेभ्या वस्त्र पातराजी, इत्यादिक द्रव्य अनेक, अशुद्ध बहिरावे साधू ने तो डूबा बिना विवेकजी त्यां भाली कुगुरांरी टेकजी त्यांरे कर्म आडो कालो रेखजी, त्यांने सोख न लागे एकजी, गुरु ने पिण भ्रष्ट

क्रिया विशेषजी, संशय हुवे तो सुत्र ल्यो देखजी ॥ श्री वीर० ॥ ५ ॥

पाप उदे हुवे एहनें तो पड़े निगोद में जाय, अनन्त उत्कृष्टा भव करे; त्यां मार अनन्ती खायजी रहे घणी संकडाई मांयजी, जब नहीं निगोद में तायजी. बलि मर्ण वेगो वेगो थायजी, उपजे नें बिले हो जायजी, तिण रो लेखो सुणो चित्त ल्यायजी ॥ श्री वीर० ॥ ६ ॥

सतरह भव जाभेरा करे. एक श्वासोश्वास मझार, एक मुहूर्त्त में भव करे साढा पैंसठ हजारजी, बलि छत्तीस अधिक विचारजी, एहवी जनम मरण री धारजी, मरण पामें अनन्ती, बारजी, अनन्त कालचक्र मझारजी त्यांरो वेगो न आवे पारजी ॥ श्री वीर० ॥ ७ ॥

कदा पहली पड़े बन्ध नरक नो तो, पड़े नरकमें जाय, खेत्र वेदन छे अति घणी, परमाधामी मारे बतलायजी, तिहां मार अनन्ती खायजी उठे कोण छुड़ावे आयजी, भूख तृषा अनन्ती थायंजी, दुःख में दुःख उपजे आयजी, अशुद्ध दान दियां ए फल थायजी ॥ श्री वीर० ॥ ८ ॥

दुःख भोगविया नरक में जी, शेष बाकी रह्या

पाप, तिणसूं जीव उपजै जाय तिर्यंच में, उठै पण घणो शोग सन्तापजी, नहीं छूटे कियां विलापजी, आडा नहीं आवै गुरु मा बापजी, दुख भोगवे आपो आपजी, अशुद्ध दान दियां धर्म थापजी, ए पिण कुगुरु तणो प्रतापजी ॥ श्री वीर ॥ ९ ॥

अशुद्ध जाणीनें भोगवे, त्यां भांगी जिनवर पाल, अनन्त उत्कृष्टा भव करै, नर्कमें जासे टांको भालजी, उठै मार देसी नर्कनां पालजी कीधा कर्म लेवै संभालजी, रोसी कर्तव्य सांमो निहालजी, भगवती पहिलो शतक संभालजी, वलि नवमो उदेशो संभालजी ॥ ॥ श्री वीर० ॥ १० ॥

आधा करमी जाणी भोगवे, तो बन्धे चिकना कर्म, वलि भ्रष्ट थया आचारथी, त्यां छोड़ दियो जिन धर्मजी, निकल गयो त्यांरो मर्मजी, छोड़ दीधी लज्जा नें शर्मजी, बिगोय दियो जिन धर्मजी, दुःख पास्यो उत्कृष्टो पर्मजी ॥ श्री वीर० ॥ ११ ॥

साधू काजे हणे छःकायनें, ते वार अनन्ती हणाय, साधू जाणी नें भोगवे, ते पण अनन्ता जनम मर्ण करै तायजी, ए तो दोनूं दुखिया थायजी, भव २ में मास्या जायजी, ए कर्तव्य सूं मारी छःकायजी, ते दुःख

भोगव लेवे तायजी, त्यांरो, पार बेगो नहीं आयजी ॥ श्री वीर ॥ १२ ॥

छःकायरे अशुभ उदय हुआ, ते पामें ए करसूं घात, जे साधू पड़िया नर्क निगोद में, सेवकां ने ले जावे साथजी, त्यां मानी कुगुरां री बातजी, कीनो त्रस स्थावरनी घातजी, अनन्ता काल दुःख में जातजी, यानें पण कुगुरां डबोया साख्यातजी ॥ श्री वीर० ॥ १३ ॥

गुरांने डबोया श्रावका श्रावकानें डबोया साध, दोनूं पड़िया नर्क निगोद में, श्री जिनवर धर्म विराधजी, संसार समुद्र अगाधजी, जिन धर्म री रहिस नहीं लाधजी, भव भव में पामें असमाधजी, ए पण कुगुरां तणो प्रसादजी ॥ श्री वीर० ॥ १४ ॥

अशुद्ध जणी देवे साधू नें ते साधा नें लूटी लिया ताय, पाप उदय हुवे इण भवे. दुःख दारिद्र धसे घर मांयजी, ऋद्ध सम्पति जावे बिलायजी, दुःख मांहि दिन जायजी, कदा पुन्य भारी हुवे तायजी, तो पर भव में शंका नहीं कायजी ॥ श्री वीर ॥ १५ ॥

इम सांभल नर नारियांजी, कीज्यो मन में विचार, शुद्ध साधां ने जाणनेंजी अशुद्ध मत दीज्यो किण-

वारजी, अशुद्ध में धर्म नहीं लिगारजी, सुध दान दे लाहो ल्यो सारजी, ज्यूं उतर जावो भव पारजी, ए मनुष्य जनम नों सारजी ॥ श्री वीर कहै सुण गोयमा ॥

॥ इति ॥

॥ श्री कालूगणी स्तवन की ढाल ॥

॥ राग भैरवी ॥

श्रीकालूगणी राज तिहारो सुयश तूर जग वाजेछै ॥ ए आंकड़ी ॥

गुण षटतीस जगीश गणाधिप अष्ट सम्पदा छाजे छै ॥ श्रीकालू ॥ १ ॥ ज्ञान घटा जिण बान छटा सुन संधिपटा घन गाजे छै, बरषित ऋतु समकित चुन २ वित, हरषित भविक समाजे छै ॥ श्रीकालू ॥ २ ॥ गद्य पद्य काव्य सुरीत गीत स्वर, श्रीमुख मिष्ट दिवाजे छै, हद उद्घोषक कोष न्याय करि जोस भवोदधि पाजे छै ॥ श्रीकालू ॥ ३ ॥ दुरबुद्धि पाखंड पशु मिथ्या निशि कूक घूक डर भाजे छै, मानू आज भरत में भानू, प्रकट प्रकाश विराजे छै ॥ श्रीकालू

॥ ४ ॥ चाकर तुम चरणां रो आकर, देख दरश मुख साजे छै, गुलाब कहै ए भैरवी रागे गुण युत हित सुख काजे छै ॥ श्रीकालू ॥ ५ ॥

॥ इति ॥

॥ कलश ॥

इम ज्ञान चरचा करै करावै पाप परचा परहरै। जे भविक समकित रतन पामैं आत्म गुण उज्वल करै ॥ श्रीकालू गणी गुण सागरू बुद्धि आगरू सारां सिरै। कहै गुलाब श्रावक आत्म भावक शिव रमणी वेगी वरै ॥

॥ अथ श्री गतागत का थोकड़ा ॥

जीवका ५६३ भेद की विगत।

१४ सात नारकी का पर्याप्ता अपर्या।

४८ तिर्यंच का

४ सूक्ष्म बादर पृथ्वीकायका पर्याप्ता अपर्याप्ता।

४ सूक्ष्म बादर अप्कायका पर्याप्ता अपर्याप्ता।

४ सूक्ष्म बादर वाउकायका पर्याप्ता अपर्याप्ता।

४ सूक्ष्म बादर तेउ कायका पर्याप्ता अपर्याप्ता।

६ सूक्ष्म (बादर) प्रत्येक साधारण बनस्पतिका पर्याप्ता।

६ तीन विकलेन्द्री का पर्याप्ता अपर्याप्ता।

२० जलचर थलचर उरपर भुजपर खेचर ए पांच प्रकार का तिर्यञ्च सन्नी असन्नीका पर्याप्ता अपर्याप्ता।

३०३ मनुष्यका—

२०२ सन्नी सन्नी मनुष्य १५ कम भूमि, ३० अकर्म भूमि, ५६ अन्तर द्वीप ए १०१ का पर्याप्ता अपर्याप्ता।

१०१ असन्नी मनुष्य ते सन्नी मनुष्य का मल मूत्रादि चउदह स्थानक में उपजैते अपर्याप्ता, अपर्याप्ता अवस्थामें मरे

१९८ देवताका—

भुवनपति १०, पर्माधर्मी १५ वानव्यन्तर १६ त्रिजृम्भक १०, जोतषी १०, किल्विषी ३, लोकान्तिक ९, देवलोक १२, ग्रैवेयक ९, अनुत्तर विमाण ५, एवं ९९ जातिका पर्याप्ता अपर्याप्ता। ॥ इति ॥

भरत खेतमें ५१ पावै—

तिर्यंच ४८ मनुष्य का ३

जम्बुद्वीप में ७५ पावै—

भरत क्षेत्र १ ऐरभरत १, देवकुरु १, उत्तर कुरु १, हरिवास १, रम्यकवास १, हेमवय १, अरुणवय १, माहविदेह १, यह नव क्षेत्रका सन्नी मनुष्य पर्याप्ता अपर्याप्ता १८, तथा असन्नी मनुष्य ९

४८ तिर्यंचका

लवण समुद्रमें पावै २१६—

अन्तर द्वीप ५६ का तो १६८, तथा ४८ तिर्यञ्चका

घातकी खण्ड मे पावे १०२—

५४ मनुष्य का अठारह क्षेत्रों का त्रिगुणा, ४८ तिर्यंच का

कालोदधि में पावै ४६—

तिर्यंच का ४८ मे से बादर तेउ का २ टल्या

अर्ध पुस्कर वर द्वीप में पावै १०२—

घातकी खण्डवत् जाणवो।

ऊंचा लोक में पावै १२२—

७६ देवता का।

४६ तिर्यंच का।

नीचा लोक में पावे ११५—

भवनपति २०, पर्माधामी ३०, नारकी १४, तिर्यंच का ४८ मनुष्य का ३ सर्व ११५

तिर्छा लोक में पावे ४२३—

३०३ मनुष्य का

४८ तिर्यञ्च का।

३२ वानव्यन्तर का।

२० त्रिझूमका।

२० जोतिष्यां का।



१	पहिली नारकी में	आगति २५	१५ कर्मभूमि मनुष्य, तिर्यञ्च पंचेन्द्री ५ सन्नी ५ असन्नी पर्याप्ता
		गति ४०	१५ कर्मभूमि मनुष्य तिर्यञ्च पंचेन्द्री ५ सन्नी का पर्याप्ता अपर्याप्ता ४०
२	दूजी नारकी मे	आगति २०	१५ कर्मभूमि मनुष्य, ५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता
		गति ४०	ऊपरवत्
३	तीजी नारकी में	आगति १६	११ कर्मभूमि मनुष्य, ४ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता भुजपर टल्यो
		गति ४०	ऊपरवत्
४	चौथी नारकी में	आगति १८	१५ कर्मभूमि मनुष्य, ३ सन्नी तिर्यंच पर्याप्ता (भुजपर १ खेचर २ टल्या)
		गति ४०	ऊपरवत्
५	पांचवी नारकी में	आगति १७	१५ कर्मभूमि मनुष्य सन्नी, १ जलचर, १ उरपुर का पर्याप्ता
		गति ४०	ऊपरवत्
६	छट्ठी नारको में	आगति १६	१५ कर्मभूमि १ जलचर सन्नी को पर्याप्तो
		गति ४०	ऊपरवत्

७	सातमी नारकी में	आगति १६	१५ कर्म भूमि, १ जलचर सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता स्त्री बिना
		गति १०	५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता अपर्याप्ता १०
८	१० भवन पति १५ पर्माधामी १६ बानव्यंतर १० त्रिझूमका ५१ जातिका में	आगति १११	१०१ सन्नी मनुष्य, ५ सन्नी, ५ असन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता १११
		गति ४६	१५ कर्म भूमि मनुष्य, ५ सन्नी तिर्यञ्च १ पृथ्वी १ अप्प, १ बनस्पति का पर्याप्ता अपर्याप्ता सूक्ष्म साधारण बिना
९	जोतिषी पहिला देवलोक में	आगति ५०	१५ कर्म भूमि, ३० अकर्म भूमि ५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता
		गति ४६	ऊपरवत्
१०	दूजा देवलोक में	आगति ४०	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यञ्च, अकर्मभूमि का पर्याप्ता २० (५ हेमवय, अरुणवय, टलया)
		गति ४६	ऊपरवत्
११	पहिला कल्विषिक में	आगति ३०	१५ कर्म भूमि ५ सन्नी तिर्यञ्च ५ देवकुरु ५ उत्तर कुरु का पर्याप्ता
		गति ४६	ऊपरवत्
१२	दूजा तीजा कल्विषिक तीजासे आठवां तांईका देवतामें	आगति २०	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यञ्च पर्याप्ता
		गति ४०	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यञ्च पर्याप्ता अपर्याप्ता

१३	नवमांसे सर्वार्थ सिद्धि तांई	आगति १५	१५ कर्म भूमि, मनुष्य का पर्याप्ता
		गति ३०	१५ कर्मभूमि का पर्याप्ता अपर्याप्ता
१४	पृथ्वी पाणी बनस्पति में	आगति २४३	१०१ असन्नी मनुष्य, ४८ तिर्यंच, १५ कर्म भूमि का, पर्याप्ता अपर्याप्ता ३० एवं १७६ लड़ी का और ६४ जातिका देवता एवं सर्व २४३ थया
		गति १७६	लड़ी का
१५	तेऊ वाउकाय में	आगति १७६	लड़ी का
		गति ४८	तिर्यञ्च का
१६	तीन विकलेन्द्री में	आगति १७६	लड़ी का
		गति १७६	लड़ी का
१७	असन्नी तियञ्च पंचेन्द्री में	आगति १७६	लड़ी का
		गति ३९५	१७६तो लड़ीका, ५६ अन्तरद्वीप ५१ जाति का देवता, १ पहली नारकी १०८ का पर्याप्ता अपर्याप्ता २१६ सर्व मिलि ३९५
१८	सन्नी तिर्यञ्च में	आगति २६७	१७६ तो लड़ी का ८१ देवता ७ नारकी पर्याप्ता (नवमांसे सर्वार्थ सिद्धतांइ टल्या)
		गति ५२७	(नवमां से सर्वार्थ सिद्ध तांई का टल्या)

१६	असन्नी मनुष्य में	आगति १७१	लड़ी का में से तेउ वाउ का ८ टल्या
		गति १७६	लड़ी का
२०	सन्नी मनुष्य में	आगति २७६	१७१ तो लड़ी का में से, ६६ देवता, ६ नारकी
		गति ५६३	सर्व
२१	देवकुरु उत्तर कुरु का युगलिया में	आगति २०	१५ कर्म भूमि ५ सन्नी तिर्यंच
		गति १२८	१० भवनपति, १५ पर्माधामी, १६ वाण-व्यन्तर, १० त्रिजृम्भका, १० जोतषी, २ पहिलो दूजो देवलोक, १ पहिलो कल्वि-षिक एवं ६४ का पर्याप्ता अपर्याप्ता
२२	हरीवास रम्यकवासका युगलिया में	आगति २०	ऊपरवत्
		गति १२६	६४ जाति का देवतां में से १ पहिलो कल्विषिक टल्यो
२३	हेमवय अरुणवय का युगलिया में	आगति २०	ऊपरवत्
		गति १२४	६४ जाति का देवतां में कल्विषिक १ और दूजो देवलोक टल्यो
२४	५६ अन्तरद्वीप युगलिया में	आगति २५	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी, ५ असन्नी तिर्यंच
		गति १०२	५१ जाति-का देवांका पर्याप्ता अपर्याप्ता

२५	केवल्यां में	आगति १०८	८१ देवता (पर्माधर्म १५ कल्विषिक ३ टल्या) १५ कर्म भूमि ४ पहली से चौथी नर्क, ५ सन्नी तिर्यञ्च १ पृथ्वी १ अप्प १ बनस्पति
		गति ०	मोक्ष की
२६	तीर्थंकरा में	आगति ३८	३५ देवता वैमानिक ३ नरक पहली से
		गति ०	मोक्ष की
२७	चक्रवर्त में	आगति ८२	८१ जाति का देवता ऊपरवत् १ पहली नरक
		गति १४	७ सात नारकी में जाय पदवी में मरे तो
२८	वासुदेव में	आगति ३२	१२ देवलोक, ६ नव ग्रैवेयक, ६ लोकान्तिक तथा २ नारकी पहली दूजी
		गति १४	७ नारकी में जाय
२६	बलदेव में	आगति ८३	८१ जाति का देवता ऊपरवत् नारकी पहली दूजी
		गति ०	पदवी अमर छे
३०	सम्यक् दृष्टि में	आगति ३६३	१७१ लड़ी का (तेउ वाउ का टल्या) ६६ देवता, ८६ युगलिया, ७ नारकी
		गति २५८	६६ देवता १५ कर्मभूमि ६ नारकी ५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता अपर्याप्ता, ५ असन्नी ३ विकलेन्द्री का अपर्याप्ता एवं २५८

३१	मिथ्यादृष्टि में	आगति ३७१	१७१ लड़ी का, ६६ देवता, ८६ युगलिया नारकी ७ एवं
		गति ५५३	५ अनुत्तर का पर्याप्ता अपर्याप्ता टल्या
३२	समिथ्या दृष्टि में	आगति ३६३	समदृष्टि जिम
		गति ०	तीजे गुणठाणें मरे नहीं
३३	साधु मे	आगति २७५	१७१ लड़ी का, ६६ देवता, ५ नारकी
		गति ७०	१२ देवलोक, ६ लोकान्तिक, ६ ग्रैवेयक ५ अनुत्तर का पर्याप्ता अपर्याप्ता
३४	श्रावक में	आगति २७६	१७१ लड़ी का, ६६ देवता ६ नारकी
		गति ४२	१२ देवलोक, ६ लोकान्तिक, पर्याप्ता अपर्याप्ता
३५	पुरुष वेद मे	आगति ३७१	मिथ्याती जिम जाणवो
		गति ५६३	सर्व
३६	स्त्री वेद मे	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति ५६१	सातमी नरक में नहीं जाय
३७	नपुंसक वेद मे	आगति २८५	६६ देवता, १७१ लड़ी का, ७ नारकी
		गति ५६३	सर्व

१	शुक्लपक्षी	आगति ३७१	१७१ तो लड़ी का, ६६ देवता, ८६ युगलिया, ७ नारकी
		गति ५६३	सर्व
२	कृष्णपक्षी में	आगति ३६६	३७१ मे ५ अनुत्तर टल्या
		गति ५५३	५ अनुत्तर का अपर्याप्ता पर्याप्ता टल्या
३	अचर्म में	आगति ३६६	ऊपरवत्
		गति ५५३	ऊपरवत्
४	चर्म में	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति ५६३	सर्व
५	बाल वीर्य मे	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति ५५३	५ अनुत्तर का टल्या
६	पंडित वीर्य में	आगति २७५	१७१ लड़ीका मे से, ६६ देवता का ५ नारकी पहली से
		गति ७०	१२ देवलोक, लोकान्तिक, ६ नवग्रैवेयक ५ अनुत्तर वैमान का पर्याप्ता अपर्याप्ता

७	बाल पण्डित वीर्य में	आगति २७६	१७१ लड़ी का में से, ६६ देवता, नारकी ६ पहली से
		गति ४२	१२ देवलोक, ६ लोकान्तिक का पर्याप्ता अपर्याप्ता
८	मति-श्रुति ज्ञान मे	आगति ३६३	१७१ तो लड़ीका मे से, ६६ देवता ८६ युगलियाँ, ७ नारकी एवं ३६३
		गति २५८	६६ देवता, १५ कर्मभूमि ५ सन्नी तिर्यञ्च ६ नारकी एवं १२५ का पर्याप्ता अपर्याप्ता २५० और ५ असन्नी तिर्यञ्च ३ विकलेन्द्री का अपर्याप्ता ८ सव २५८
९	अवधि ज्ञान मे	आगति ३६३	ऊपरवत्
		गति २५०	६६ देवता १५ कर्म भूमि ५ सन्नी तिर्यञ्च ६ नारकी एवं १२५ का पर्याप्ता अपर्याप्ता
१०	मति श्रुति अज्ञान में	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति ५५३	५ अनुत्तर का पर्याप्ता अपर्याप्ता टल्या
११	विभङ्ग अज्ञान में	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति २४२	६४ देवता (अनुत्तर टल्या) १५ कर्मभूमि ५सन्नी तिर्यञ्च ७ नारकी पर्याप्ता अपर्याप्ता
१२	चक्षु दर्शन मे	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति ५६३	सर्व

१३	निकेवल अचक्षु दर्शन में	आगति २४३	१७६ लड़ी का ६४ जाति का देवता का पर्याप्ता
		गति १७६	लड़ी का
१४	समुचे अचक्षु दर्शन में	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति ५६३	सर्व
१५	अवधि दर्शन मे	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति २५२	६६ देवता १५ कर्म भूमि ५ सन्नी तिर्यंच, ७ नारकी एवं १२६ का पर्याप्ता अपर्याप्ता
१६	सूक्ष्म एकेन्द्री में	आगति १७६	लड़ी का
		गति १७६	लड़ी का
१७	वादर एकेन्द्री मे	आगति २४३	१७६ लड़ी का ६४ देवता
		गति १७६	लड़ी का
१८	संयोगी	आगति ३७१	ऊपरवत्
	अणाहारिक	गति ०	

१९	तेजस कारमाण मे	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति ५६३	सर्व
२०	वेके शरीर मूलका में	आगति १११	१०१ सन्नी मनुष्य, ५ सन्नी ५ असन्नी
		गति ४६	१५ कर्मभूमि, ५ सन्नी पृथ्वी १ पाणी २ बनस्पति ३ ए २३ का पर्याप्ता अपर्याप्ता सूक्ष्म साधारण विना
२१	समुचे वेके शरीर में	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति ५६३	सर्व
२२	औदारिक शरीर में	आगति २८५	१७९ लड़ी का, ९९ देवता ७ नारकी
		गति ५६३	सर्व
२३	कृष्ण लेश्याको कृष्ण लेश्यामें जावे तो	आगति ३१९	१७९ लड़ी का, ५१ जाति का देवता, ८६ युगलिया ३ नारकी पांचवीं छठी सातवीं
		गति ४५९	५१ जातिका देवता, ८६ युगलिया, ३ नारकी, इनका पर्याप्ता अपर्याप्ता २८० लड़ीका १७९ सर्व ४५९
२४	नील लेश्याको नील में जावे तो	आगति ३१९	१७९ लड़ीका, ५१ देवता, ८६ युगलिया ३ नारकी तीजी चौथी पांचवीं
		गति ४५९	ऊपरवत् (नारकी तीजी चौथी पांचवी)

२५	कापोत लेश्या को कापोत में जावे तो	आगति ३१६	ऊपरवत् पण नारकी पहली दूजी तीजी जाणो
		गति ४५६	ऊपरवत् (नारकी पहली से तीजी)
२६	तेजू लेश्या को तेजू में जावे तो	आगति १६०	६४ जाति का देवता ८६ युगलिया का पर्याप्ता और १५ कर्म भूमि, ५ सन्नी, तिर्यञ्च का पर्याप्ता अपर्याप्ता
		गति ३४३	१०१ सन्नी मनुष्य, ५ सन्नी, तिर्यञ्च ६४ जाति देवता का पर्याप्ता अपर्याप्ता पृथ्वी, अप्प, बनस्पति का अपर्याप्ता
२७	पद्म को पद्म लेश्या में जावे तो	आगति ५३	१५ कर्म भूमि मनुष्य, ५ सन्नी तिर्यञ्च का पर्याप्ता अपर्याप्ता नवग्रैवेयक १ दूजा किल्विषि ३ देवलोक (पहिला से) का पर्याप्ता
		गति ६६	१५ कर्मभूमि ५ सन्नी तिर्यञ्च ६ लोकान्तिक, ४ देवलोक, (तीजे से) का पर्याप्ता अपर्याप्ता
२८	शुक्ल लेश्या को शुक्ल में जावे तो	आगति ६२	१५ कर्म भूमि ५ सन्नी तिर्यञ्च का पर्याप्ता अपर्याप्ता ४० और २१ देवलोक (छट्ठा से सर्वार्थ सिद्धताई) १ कल्विषिक का पर्याप्ता
		गति ८४	१५ कर्मभूमि ५ सन्नी तिर्यञ्च, २१ देवलोक ऊपरवत् १ तीजा किल्वेषी का पर्याप्ता अपर्याप्ता

इति दूजो गतागत को थोकड़ो ।

॥ अथ गणीगुण महिमा स्तवन ॥

॥ राग आसावरी ॥

गणिन्द थारो सुरनायक जश गावे।
भवि निरख २ हुलसावे ॥ ग ॥ ए आंकड़ी ॥

गण रिछिपाल गणेश गणाधिप। गणधर गच्छ-स्थम्भभावे ॥ आचारज सूरी गणवत्सल, गणी युग-प्रधान कहावे ॥ ग० ॥ १ ॥ दुःखमा अरकै निरख शुद्ध गणी, अमर अमराधिप चावे। दरश सरस कर हरष २ भरि, कही २ सुयश बधावे ॥ ग० ॥ २ ॥ अतिशय महिमा वाक्य सुधासम, गुन चुन दाम बनावे। महावय कर्णों मणि रयण अमोलक, अछेद भेद नहीं पावे ॥ ग० ॥ ३ ॥ अथवा पूरण समरथ नांहि, अनन्त अन्त क्रिम आवे। तब हंसि हुलनि विवद वचन रस, कर युगताल बजावे ॥ ग० ॥ ४ ॥ रवि सम जोत उद्योत ज्ञान मय, पङ्कज भवि विकसावे। पाखण्डी झुण्ड खण्ड २ थई, कूक घूक लख जावे ॥ ग० ॥ ५ ॥ अहो तुझ चान्ति दान्ति रव जल-धर निर्जर तास सरावे ॥ नर नरइन्द्र वृन्द सहु मिल की चरना शीश नमावे ॥ ग० ॥ ६ ॥ जयणायुत गुणवन्त

गुरू का, जो भवि नित गुण गावे। वृद्धि ऋद्धि समकित चारितनीं, सञ्चित पाप पुलावे ॥ ग० ॥ ७ ॥ शासण वीर पवर भिक्षु की, अष्टम पाट शोभावे। श्रीकालु गणीं कल्पतरु सम, सेवे सो फल पावे ॥ ग० ॥ ८ ॥ शुद्ध शरधनें अणुव्रतधारी गुलाब शरण तुझ आवे। अति आनन्द फन्द अघ मेटण, सुख मांहि सुख थावे ॥ ग० ॥ ६ ॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

। श्रीजयाचार्य कृत ॥

॥ स्वामीजी श्रीभीखणजी के गुणोंकी ढाल ॥

स्वाम सांचा अद्भुत वाचा कहीरे ॥ ए आंकड़ी ॥
स्वाम भिक्षु प्रगटिया जग मांहि कीरति थई रे. श्रीजिन आणा शिरधरी वर न्याय बातां कही रे, स्वाम सांचा अद्भुत वाचा कही रे ॥ १ ॥ आगूंच उत्तराध्ययन में हूण आर पञ्चम मही रे, जिन बिना शिव पंथ रहसी संत तंत सही रे ॥ सहीरे ॥ स्वा० ॥ २ ॥ सम्वत् अठारह लेपना पक्के सूत्र संग वृद्धि थई रे, बंक चूलिया मांहि भारता ते प्रत्यक्ष जोय मिलही रे ॥ मिलही रे ॥

खा० ॥ ३ ॥ खाम पारश सारषा चिन्तामणी कर लहीरे। भव दधि पोत उद्योत करवा खाम सूरज सही रे॥ सहीरे॥ खा० ॥ ४ ॥ खाम भिक्षु समःरिया उगणीस चवदह मही रे। बीदासर चौमास में जय जश कीरति थई रे॥ थई रे॥ खा० ॥ ५ ॥

॥ इति ॥

॥ ढाल ॥

श्री वीरजी बखाणी हो मुनीश्वर करणी आपरी। (एदेशी)

तुमपे वारी हो हूं बलिहारी हो भिक्षु गणी थांरा नाम री॥ कह्यो सिद्धांत मझार॥ ले भिक्ष्या शुद्ध आहार॥ दोष बयांलीस टार॥ तुमपे वारी हो ॥ हूं ॥ भि० ॥ ए आंकड़ी ॥

पंचमे आरै हो मुनीश्वर, आपज अवतरिया। हूवा हिज भरत मझार। तु। हूं। भि। गाम कंटाल्यो हो॥ मु॥ मरुधर देश में, साह बलू सुखकार॥ तु॥ हूं॥ भि॥ ओस वंश नीको हो॥ मु॥ तीखो केशरी, स्वप्न विलोकी मात॥ तु॥ हूं॥ भि॥ जननी थांरी हो। मु। दीपां दे भली, फुन सुकलेचा जात॥ तु॥ हूं॥ भि॥ २ ॥ सम्वत्

तीयासी हो । मु । सतरह सह भलो, आप लियो अवतार ॥ तु ॥ हूं ॥ भि ॥ इक विय परणी हो ॥ मु ॥ संयम चित्त भयो, यथा द्रव्य अणगार ॥ तु ॥ हूं ॥ भि ॥ ३ ॥ जिन बच बांच्यां हो ॥ मु ॥ राच्या ज्ञान में ॥ (तब) छांडि कुगुरुनों संग ॥ तु ॥ हूं ॥ भि ॥ सत अष्टादश हो ॥ मु ॥ सतरह सम्बत् लियो भाव चरण अति चंग ॥ तु ॥ हूं ॥ भि ॥ ४ ॥ जीवत असंजम हो ॥ मु ॥ अघकारण कह्यो ॥ कही विष सम अव्रत आप । तु । हूं । भि । सेयां सेवायां हो । मु । बलि अनुमोदियां, तीनूं करणा पाप ॥ तु ॥ हूं ॥ भि ॥ ५ ॥ अम्ब धत्तुरे हो ॥ मु ॥ नहीं फल सारखा ॥ तिम द्विज पात्र कुपात्र ॥ तु ॥ हूं ॥ भि ॥ जे समदृष्टि हो ॥ मु ॥ करै इम पारखा, बरतसूं संयम जाच ॥ तु ॥ हूं ॥ भि ॥ ६ ॥ निर्वद्य करणी हो ॥ मु ॥ कही जिन आणा में, सावद्य आणा बार ॥ तु ॥ हूं ॥ भि ॥ दया अनुकम्पा हो ॥ मु ॥ करवी सहु तणीं ॥ मोह अनुकम्पा निवार ॥ तु ॥ हूं ॥ भि ॥ ७ ॥ जेहवो मारग हो ॥ मु ॥ श्रीवीत-रागनों तेहवो बतायो आप ॥ तु ॥ हूं ॥ भि ॥ रागरु द्वेषज हो ॥ मु ॥ बिहुं थी अघ कह्यो ॥

दियो हिन्सा धर्म उत्थाप ॥ तु ॥ ह्र ॥ भि ॥ ८ ॥ पांच सुमति हो ॥ मु० ॥ पंच महाव्रती, तीन गुप्त भल राह ॥ तु ॥ ह्र ॥ भि ॥ ए त्रयोदश पाले हो । मु । तेरा पन्थ में, शिव आतम सुख चाह ॥ तु ॥ ह्र ॥ भि ॥ ९ ॥ तप जप करी ने हो ॥ मु० ॥ आतम वश करी ॥ तारया बहु जन वृन्द ॥ तु ॥ ह्र ॥ भि ॥ अष्टादश साठै हो । मु । अणशण चित्त धरी, लहि सुर पद सुख-कन्द ॥ तु ॥ ह्र ॥ भि ॥ १० ॥ सम्वत उगणीसे हो । मु । अड़सठ चैत मे, मेटया अघदल फन्द ॥ तु ॥ ह्र ॥ भि ॥ श्रीकालू गणीवर हो । मु । तास प्रसाद थी गुलाबचन्द सानन्द ॥ तु ॥ ह्र ॥ भि ॥ ११ ॥

* इति समाप्तम् *

